।। श्री शासनपति महावीराय नमः ।।
।। गुरुदेव प्रभु श्रीमद् विजय राजेन्द्र सूरि गुरुभ्यो नमः ।।

धर्म की विविधा में शाश्वतता का प्रतीक

शाश्वत धर्म

संस्थापक–श्रीमद्विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. | अप्रैल–2019
दिव्याशीष–लोकसंत जैनाचार्य श्रीमद्विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. | हिन्दी मासिक

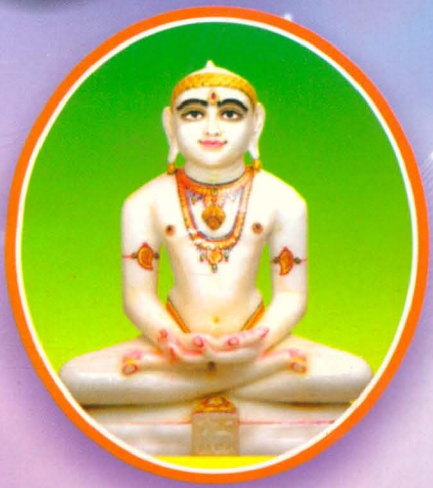

तीर्थंकर श्री महावीर स्वामी
जैनाचार्य
श्रीमद् जयंतसेन सूरि
अंक

पूज्य युग प्रभावक, पुण्य सम्राट, लोकसंत स्व. जैनाचार्य
श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. की स्मृति में

पुण्य सप्तमी पर्वोत्सव

शुभ दिन-26 अप्रैल 2019

पूज्य श्री गच्छाधिपति श्रीमद्विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा. व जैनाचार्य श्रीमद्विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा. के सान्निध्य में आयोजन

* 17 अप्रैल 2019 महावीर जयंती । राजगढ़ में श्री महावीर स्वामी की प्रतिमा की अंजन शलाका तथा प्रतिष्ठा ।
* चैत्र शुक्ला पूर्णिमा अप्रैल 19 को श्री जयंतसेन म्युजियम मोहनखेड़ा तीर्थ पर चातुर्मास की उद्घोषणा ।
* 25 अप्रैल ग्राम झकनावदा में श्री केसरिया नाथजी प्रभु, गणधर और गुरुदेव श्री की प्रतिष्ठा ।
* दिनांक 26 अप्रैल को श्री जयंतसेन म्युजियम मोहनखेड़ा तीर्थ पर पूज्य पुण्य सम्राट गुरुदेव श्री की वार्षिक द्वितीय तिथि का महोत्सव ।
* दिनांक 23 मई को अहमदाबाद में आत्मोद्धार–तीन का आयोजन जिसमें सामूहिक दीक्षाएँ सम्पन्न होंगी ।

विशिष्ट सहयोगी

1. श्री राजेन्द्रसूरीश्वरजी जैन ट्रस्ट, चैन्नई (तमिलनाडु)
2. श्री संभवनाथ राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट मंडल, विजयवाड़ा (आंध्रप्रदेश)
3. श्री सांचा सुमतिनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वे. ट्रस्ट, मदुराई (तमिलनाडु)
4. श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट, त्रिचनापल्ली (तमिलनाडु)
5. श्री सुविधिनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वे. ट्रस्ट, मैसूर (कर्नाटक)
6. श्री पार्श्वनाथ राजेन्द्र जैन श्वे. ट्रस्ट, गुंण्टुर (आंध्रप्रदेश)
7. श्री राजेन्द्र सूरि जैन श्वेताम्बर ट्रस्ट, सायला (राजस्थान)
8. श्री सायला जैन श्रीसंघ, सायला (राजस्थान)
9. श्री जैन श्वे. त्रिस्तुतिक संघ नारोली (ता. थराद, गुजरात)
10. श्री शंखेश्वर पार्श्व राजेन्द्र जैन श्वे. मूर्तिपूजक संघ, दावणगेरे (कर्नाटक)
11. श्री जैन श्वेताम्बर त्रिस्तुतिक संघ, बागरा, जिला-जालोर (राज.)
12. श्री कुंथुनाथ राजेन्द्र जैन चेरिटेबल ट्रस्ट. सरसी जिला-रतलाम (म.प्र.)
13. श्री अजितनाथ जैन श्वेतांबर त्रिस्तुतिक श्रीसंघ, बर्डियागोयल (त. जावरा, म.प्र.)

श्री राजेन्द्रसूरि कीर्ति मन्दिर तीर्थ ट्रस्ट

हमारे गौरव

ट्रस्टीगण महाप्रभावक गुम्मीलेरू तीर्थ

राजस्थान

राष्ट्रसंत श्री के पूज्य माता-पिता स्वरूपचंदजी धरू एवं पार्वतीदेवी

जैन रत्न श्री गगलदासभाई हालचंदभाई संघवी, अहमदाबाद

शा.तगराजजी जेठमलजी हिराणी रेवतड़ा, बैंगलोर

शा. किशोरचंदजी खिमावत खिमेल, मुम्बई

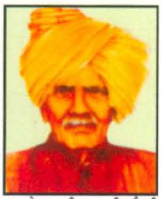

शा.जेठमलजी लादाजी चौधरी गढसिवाणा, बैंगलोर

शा. मिश्रीमलजी उकाजी सातेचा पाणसा, बैंगलोर

संघवी सांकलचंदजी इन्द्रजी वेदमुथा बैंगलोर

श्री शांतिलालजी रामाणी गुढाबालोतरा, नेल्लोर

शा. माणकचंदजी छोगाजी बालर बैंगलोर

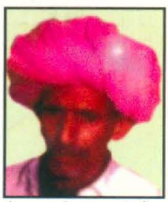

श्री पुखराजजी पूनमचन्दजी जोटा दाधाल

शा. हजारीमलजी गजाजी चंदामुथा

मांगीलालजी शेषमलजी रामाणी गुढाबालोतरा, नेल्लोर

शंकरलालजी आईदानजी गांधी नेल्लोर

चंपालालजी बालचंदजी चरली

श्री धेवरचंदजी एल. जोगानी, मुम्बई भीनमाल

श्री शेषमलजी गुलाबचंदजी जैन बागरा

Received 12/4/19 3122

हमारे गौरव

श्री हीराचंदजी कानाजी गुंटुर (सियाणावाला)

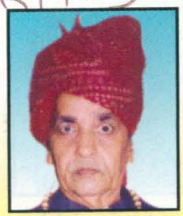

श्री लालचंदजी सोनाजी संघवी धाणसा (राज.) विजयवाड़ा

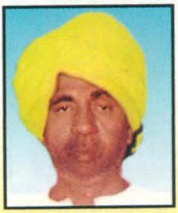

स्व. सोलंकी चन्दनमलजी हीराजी आहोर विजयवाड़ा

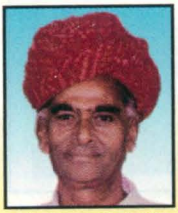

श्री शांतिलालजी सोलंकी जालोर विजयवाड़ा

श्रीमती मोसंबीबाई पति स्व.श्रीचम्पालालजी तखतगढ़, मुम्बई

श्री बाबूलालजी गुण्टूर

कबदी जीतमलजी कुंदनमलजी सायला

भंडारी वस्तीमलजी खीमाजी विजयवाड़ा, आहोर

शा. रिखबचंदजी सरूपाजी सोफाडीया, रेवतडा

भंडारी पीरचंदजी केवलचंदजी बागरा

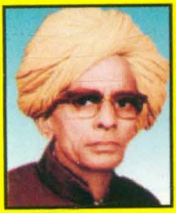

स्व. शा ओटमलजी गोराजी वेदमुथा, रेवतडा

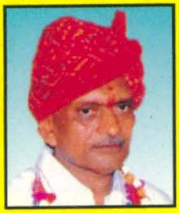

शा. पारसमलजी हस्तीमलजी भंडारी, सायला

स्व. शा. गुमानमलजी धुकाजी मोदी, धानसा

मुथा उदयचंदजी जवाजी धाणसा

शा पुखराजजी फूलचंदजी दुरगानी, मोदरा, विजयवाड़ा

शा. घेवरचंदजी हंजाजी संघवी, धाणसा

शा. सरेमलजी गेनाजी सियाणा, विजयवाड़ा

शा. छगनराजजी मांडोत गुन्टुर

शा मोहनलालजी गोवानी चोरायु

शा. नरसाजी आसाजी बाफणा कोरा (राज.)

शा प्रतापचंदजी किसनाजी कटारिया संघवी अमरसर, सरत

श्री शा. कालूचंदजी हंजाजी संकलेचा, मेंगलवा/मदुराई

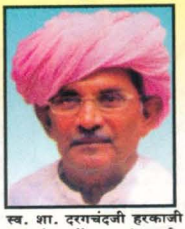

स्व. शा. दरगचंदजी हरकाजी सकलेचा मेंगलवा/मदुराई

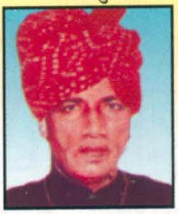

स्व. श्री मिश्रीमलजी भंडारी जोधपुर/चैन्नई

श्री उत्तमचंदजी दरगचंदजी संकलेचा, मेंगलवा/मदुराई

कोबा (गांधीनगर)

34054

हमारे गौरव

शा. सेन्द्रकुमारजी राचकचंदजी पोरवाल
बागरा

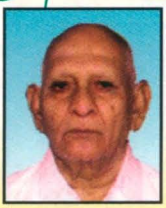

श्री चंदनमलजी जेठमलजी
बागरा

श्री सुखाराजजी केसाजी
मेंगलवा

श्री रतनचंदजी कुन्दनमलजी
मेंगलवा

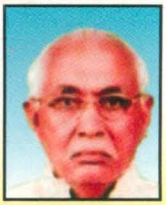

श्री नथमलजी खुमाजी
बागरा

श्री जेठमलजी कुंदनमलजी
मेंगलवा

श्री सांवलचंदजी कुंदनमलजी
मेंगलवा

श्री दूधमलजी मानकचंदजी
मेंगलवा

श्री बाबुलालजी सरेमलजी
मोदरा

श्री छगनराजजी भानाजी गांधी
सियाना

शा.सुमेरमलजी वरदीचंदजी वाणीगोता
आहोर (राज.)

श्री संघवी मानमलजी वीरमाजी
दादाल

श्री कांतिलालजी मूलचंदजी नानावत
आहोर

शा. उकचंदजी हिमताजी हिराणी
रेवतड़ा

शा. ओपचंदजी जवाजी ओस्तवाल
सायला

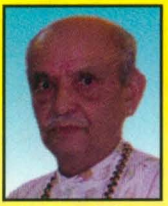

श्री एम. फूलचंदजी शाह
दाखणगिरी

शा. मोडमलजी जोईताजी बाफना
थलवाड नेल्लोर

स्व. श्रीमती बदामीबाई मोडमलजी
बाफणा-थलवाड़, नेल्लोर

मुथा थानमलजी कानाजी
आहोर विजयवाड़ा

स्व. सुखराजजी पिताजी कटारिया
संघवी थाणवसा विजयवाड़ा

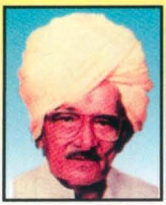

संघवी भेरमलजी जेठाजी
मारवाड में अमरसर (सरत) विजयवाड़ा

सेठ भगराजजी कुनणमलजी
सांचोर

शा. फुलचन्दजी सुखराजजी गांधी
सियाणा यादगीरी

श्री राणमलजी हिमताजी
दादाल

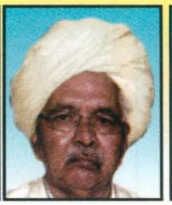

श्री पुखराजजी नेकाजी कटारिया
संघवी, घानसा

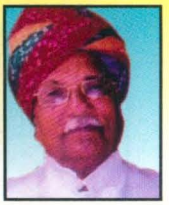

सा सांवलचंदजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

हमारे गौरव

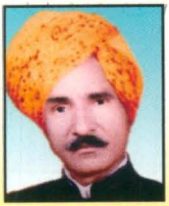

स्व.सा तिलोकचन्दजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

स्व.सा नरसींगमलजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

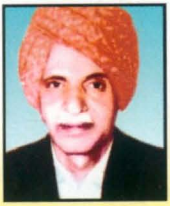

स्व.सा पुखराजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

स्व.सा परकचंदजी प्रतापजी
वाणीगोता अमरसर (सरत)

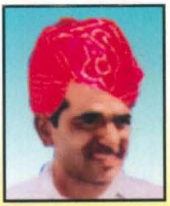

संघवी श्री. मिश्रीमलजी विनाजी
पटियाल धाणसा/बैंगलोर

श्री फुलचन्दजी सांकलचन्दजी
कोशेलाव

डूंगरचंदजी सोलंकी
सायला (राज.)

मीठालाल मनोहरलालजी झोरा
दाधाल-कोयम्बतूर

श्री उम्मेदमलजी हरकचंदजी
बाफना, पोंथेड़ी

श्री भंवरलालजी कुन्दनमलजी
संघवी, मोदरा (राज.)

पातीबाई वस्तीमलजी
कबदी, सायला

श्री ओटमलजी वर्धन
सायला

श्री जुगराजजी नाथाजी कबदी
सायला

श्री हेमराजजी कबदी
सायला

श्री हस्तीमलजी गांधीमूथा
सायला

श्री घेवरचंदजी गांधीमूथा
सायला

श्री चम्पालालजी गांधीमूथा
सायला

शा. धर्मचंदजी मिश्रीमलजी संघवी
आलासन

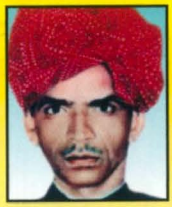

श्री देशमलजी सरेमलजी
मोदरा/बैंगलोर

शा. श्री स्व. हीराचन्द
फुलाजी गांव चुरा

श्रीमती पवनीदेवी दूधमलजी
कबदी, सायला

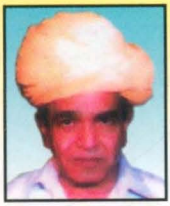

श्री दूधमलजी पूनमचंदजी
कबदी, सायला

श्री हस्तीमलजी केवलचन्दजी
फोलामुथा, सायला

श्री रमेशभाई हरण
भीनमाल, राजस्थान

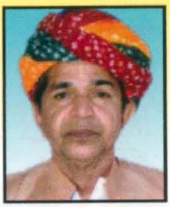

श्री उगमराजजी तौलचंदजी
कटारिया संघवी, धानसा (हैदराबाद)

हमारे गौरव

शा. खुशालचंदजी गेबाजी
डामराणी मेंगलवा (हैदराबाद)

शा. जावंतराजजी
पाथेडी

शा. बगराजजी नरसाजी
झोटा, दाधाल

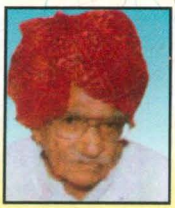

भंवरलालजी कानुगा
जालोर

श्री तिलोचन्दजी झोटा
(हैदराबाद)

सजु अग्रवाल
जालोर

पुखराजजी समताजी
गांधीमुथा, सायला

धर्मचंदजी चंदाजी
नानेसा, आकोली

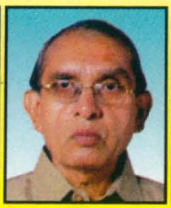

शा. धींगड़मलजी भंवरलालजी
पटवारी, मांडवला/तिरुचि

कमलाबाई धींगड़मलजी पटवारी
चैन्नई, मांडवला

शा. निहालचंदजी धुलाजी
कातरेला, आहोर/मुंबई

गुजरात

वोरा अमृतलालजी डूंगरजी
अहमदाबाद

शा. तिलोकचंदजी चुन्नीलालजी छाजेड़
नैनावा

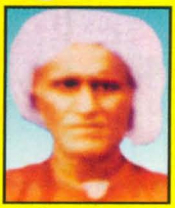

वोरा चिमनलालजी नथुचंदभाई

मोरखिया मणिलाल प्रेमचंदभाई
मुम्बई

श्री बाबूलालजी नाथाजी भंसाली
दाहोद

श्री चिमनलालजी पीताम्बरदासजी
देसाई

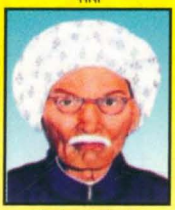

वेदलीया हालचंद भाई
भाणजी भाई, भोरडुवाला, डीसा

संघवी मुलचन्द भाई
त्रिभुवनदास, थराद

महाजनी ताराबेन
भोगीलाल सरूपचन्द, थराद

देसाई छोटालाल अमूलख भाई

संघवी धुड़ालाल अमृतलाल
(वकील)

शाह श्री राजमल भाई डूंगरजी भाई
थराद

संघवी श्री हीरालालजी कागजीभाई
थराद (लाटीवाला)

देसाई श्री हालचंदजी उजमचंदजी
थराद

श्री नरपतलाल वीरचंदजी संघवी
थराद

हमारे गौरव

वोहरा श्री प्रेमचंदभाई जीतमल भाई थराद

संघवी चिमनलाल खेमचंद थराद

संघवी पूनमचंद खेमचंद थराद

संघवी वीरचंद हठीचंद थराद

वोहेरा श्री माणकलाल भूदरमल दूधवा (गुज.)

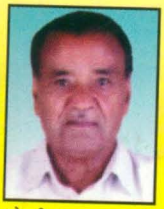
मोरखीया अमृतलालजी चुन्नीलाल लाखणी

दलपतभाई खेमचंद महाजनी

श्री मफतलालजी हंसराज वारिया, (वड़गामड़ा) डीसा

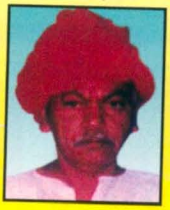
अदाणी अमृतलाल मोहनलाल थराद

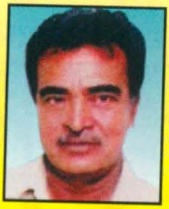
श्री चन्दूमल मफतलालजी वोहेरा, दुधवा (गुजरात)

मध्यप्रदेश

श्री शांतिलालजी भंडारी झाबुआ

श्री मदनलालजी सुराना रतलाम

श्री इन्दरमलजी दसेड़ा जावरा

स्व.मणिलालजी पुराणिक कुक्षी

स्व. समरथमलजी तळेरा कर्मड़वाला, उज्जैन

श्री सुजानमलजी जैन राणापुर (म.प्र.)

संघ शिरोमणी राजमलजी तलेसरा, पारा

भण्डारी चम्पालालजी रामाजी, पारा

श्री गट्टूलालजी रतिचंदजी सालेचा औरा, पारा

श्री कांतिलालजी केसरीमलजी भंडारी, पारा

स्व. भव्य हिमांशु लुणावत दाहोद (गुजरात)

स्व. श्री सुभाषजी भण्डारी मनावर (मेघनगर वाले)

श्री समरथमलजी पगारिया पारा जि. झाबुआ (म.प्र.)

श्री चांदमलजी वरदीचंदजी तांतेड़, लेडगांव

स्व.श्री कन्हैयालालजी सेठिया, कुशलगढ़

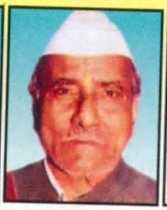
दलाल स्व. श्रीबाबूलालजी मेहता, कुशलगढ़

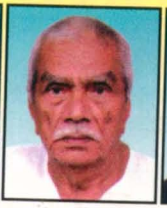
श्री मानसिंहजी राजगढ़

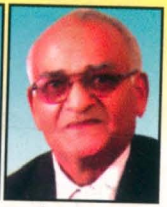
स्व. श्री बाबुलालजी भारतीय खाचरौद

हमारे गौरव

कालूरामजी औरा
टोपीवाले, रतलाम

जैन भूषण स्व. श्री वर्धमानजी
राठौर (बड़नगर)

स्व.श्री प्रकाशचंद्र लुणावत
(बामनिया वाले)

कर्नाटक

श्री भंवरलालजी तिलोकचन्दजी
वाणीगोता, बीजापुर (कर्नाटक)

श्री मनोहमलजी फूजाजी
भंडारी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री हिराचंदजी पुखराजजी
वाणीगोता, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री शेषमलजी ताराजी
कांकरिया, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री इंदरमलजी नेनमलजी
संघवी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री रूपचंदजी फूलाजी
भंडारी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व.भंडारी भुरमलजी भानाजी
मेंगलवा, (बीजापुर)

स्व. श्री दिनेशकुमार पुरमलजी
भंडारी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री प्रतापचंदजी समराजी
पोरवाल, बीजापुर (कर्नाटक)

श्री सुखराज प्रतापचंदजी
पोरवाल, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री कुंदनमलजी फुलाजी
संकलेचा, मेंगलवा (कर्नाटक)

श्री उम्मेदमलजी प्रतापजी
कंकुचौपडा, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री नागराजजी वालचंदजी
पाटनी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व.श्री मोहनलालजी मुलचंदजी
चौवाटिया, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री कुन्दनमलजी
फुलाजी सकलेचा (बीजापुर)

श्री धनराजजी नेनमलजी
संघवी, आलासन (बीजापुर)

श्री मुलचंदजी खुमाजी
बाफना, बीजापुर (कर्नाटक)

श्री देवीचंदजी हजारीमलजी
कावदी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व.श्री रिखबचंदजी प्रभुतमलजी
पोरवाल, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री डुंगरचंदजी हजारीमलजी
कावदी, बीजापुर (कर्नाटक)

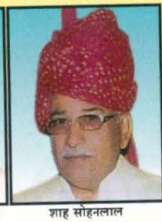

शाह सोहनलाल
मिश्राचंदजी बीजापुर

सुमेरमलजी अनाजी
वाणीगोथा, बीजापुर/भीनमाल

ज्ञा. श्री वस्तीमलजी सोनाजी
बाफना, बीजापुर (सायला)

॥ विश्वपूज्य प्रभु गुरुदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी गुरुभ्यो नमः ॥

धर्म की विविधा में शाश्वतता का प्रतीक

शाश्वत धर्म

अप्रेल-2019 संस्थापक-श्रीमद्विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. हिन्दी मासिक

संस्थापक :
स्व. गुरुदेव श्रीमद् विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.

दिशा निर्देशक :
स्व.पू. लोकसंत जैनाचार्य श्रीमद्
विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा.

सम्पादक :
सुरेन्द्र लोढ़ा
E-mail : shaswatdharmajain@yahoo.in

कार्यालय :
शाश्वत धर्म
ठि. गुरु श्रीमद् राजेन्द्रसूरि शताब्दी मार्ग
धानमंडी, मंदसौर (म.प्र.)458002

शाश्वत वर्ष 67 अंक 4
वीर सं. 2541 राजेन्द्र सं.109 विक्रम सं. 2073

इस अंक का मूल्य	-	15रु.
एक वर्ष का शुल्क	-	150रु.
पांच वर्ष का शुल्क	-	600रु.
दस वर्ष का शुल्क	-	1100रु.

शाश्वत धर्म संचालन समिति

श्री शांतिलाल रामानी	(संयोजक)
श्री रमेशभाई धरू	(परिषद अध्यक्ष)
श्री सुरेन्द्र लोढ़ा	(सम्पादक)
श्री अशोक श्रीश्रीमाल	(महामंत्री)
श्री. ओ.सी जैन	(न्यासी)
श्री विनोद संघवी	(न्यासी)

भारत सरकार का पंजीयन क्र. 13067/57
स्वामी अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् के लिए **सुरेन्द्र लोढ़ा**, गुरु श्रीमद् राजेन्द्रसूरि शताब्दी मार्ग, धानमण्डी, मंदसौर द्वारा मुद्रित तथा प्रकाशित।
मुद्रक -छाजेड़ प्रिन्टरी प्रा.लि., रतलाम

प्रेरक प्रसंग

उपसर्ग के कारण लोकोवधि ज्ञान प्राप्ति

श्री वर्धमान महावीर
छद्मस्थकाल में विचरण करते हुए
ग्रामक सन्निवेश के गांव शालीशीर्ष पधारे।
वे
उद्यान में स्थिरता कर ध्यान में स्थिर हो गये।

कटपूतना व्यंतरी को अपने पूर्व भव के वैर का स्मरण हो गया। भगवान के त्रिपृष्ठ वासुदेव के भव में वह अपमानित हुई थी। वह बदला लेने के मनोभाव से आई।

उसने तपस्विनी का रूप धर लिया तथा कड़कती शीत में रात्रि भर अपने बालों में ठंडा जल लाकर प्रभु के शरीर पर छिटकती रही, उन्हें कष्ट देती रही।

लेकिन
श्री वर्धमान महावीर
उसी ध्यानस्थ मुद्रा में
अडिग-अटल-अविचल-शांत रहे।

उनने उपसर्ग धैर्य के साथ सहन कर लिया। कटपूतना ने हार मान ली। भगवान से क्षमा मांगकर चली गई।

प्रभु को
उपसर्ग सहन करने के कारण लोकोवधि ज्ञान उत्पन्न हो गया।

- सुरेन्द्र लोढ़ा

अनुक्रमणिका

1.	संपादकीय (सुरेन्द्र लोढ़ा)	9
2.	मानवाधिकारों के प्रणेता भगवान महावीर (डॉ. दिलीप धींग)	15
3.	वर्तमान को चाहिये वर्द्धमान (मुनि श्री सुमेरमलजी लाडनू)	17
4.	प्रभु महावीर के जीवन की विशिष्ट घटनाएँ (संकलन-विनय कुमार छिपानी)	19
5.	श्री महावीर स्वामी भगवान (प्रेषक : अरविन्दसी मोदी)	21
6.	जन्म-जयन्ति पर दोहान्जलि (डॉ. श्रीमती कोकिला भारतीय)	23
7.	गुरु परंपराएँ पुण्य सम्राट गुरुदेव श्री के देवलोक गमन की कालगणना (मुनि चारित्ररत्न विजयजी)	28
8.	श्री जयंतसूरि वंदना (श्रीमती पारसमणी मारवाड़ी)	30
9.	दिव्य पुरुष जयन्तसेनसूरिजी म.सा. (श्री अनिल जैन)	31
10.	परिषद का अभिमान गुरुवर गुण की खान (श्री सुनील बांठिया, इंदौर)	33
11.	पुण्य सम्राट श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा. का गागर में सागर के समान अल्प परिचय	35
12.	पुण्य सम्राट करूणा के अवतार थे (अशोक श्रीश्रीमाल, इंदौर)	37
13.	जयंतसेन हस्ताक्षर	39
14.	अशुभ वचनयोग (स्व. श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.)	40
15.	गणधरवाद (स्व. श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.)	43
16.	मैं जानता हूँ (स्व. श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.)	46
17.	शब्द नये किसे कहते हैं? (प्रश्नोत्तरी)	48
18.	स्वस्थ्य प्रतिस्पर्द्धा करें-चिंतन का चित्रांकन (जैनाचार्य श्रीमद् विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा.)	49
19.	मांसाहार से ग्लोबल वार्मिंग का अभिशाप (जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा.)	50
20.	अध्यक्षीय पाती (वाघजीभाई वोरा)	52
21.	अध्यक्षीय संदेश (रमेशभाई धरु)	53
22.	तीर्थंकर-तारेश-28 (मुनिराज डॉ. श्री सिद्धरत्नविजयजी म.सा.)	54
	भाण्डवपुर-एक संस्मरण उपाध्याय रमेशमुनि शास्त्री	54
23.	जैन इतिहास के अधखुले पृष्ठ (मुनिराज श्री चारित्ररत्न विजयजी म.सा.)	56
24.	मेरे गुरु थे 'सर्वेगुणनिपुण' (मुनिश्री निपुणरत्नविजय म.सा.)	57
25.	सद्गुरुः किंस्वरुपम्? (पुण्यसम्राट ज्ञानज्जनम् पर्व-पाटण)	59
26.	कालचक्र तथा उसके आरे (मुनिराज श्री प्रशमसेनविजयजी म.सा.)	60
27.	सम्राट श्री संप्रति (सुरेन्द्र गंग)	62
28.	दिव्य प्रकाशित श्रमण भगवान महावीर जीवन के दो प्रसंग (शान्तिलाल सगरावत, मन्दसौर)	63
29.	गुजराती संभाग	65-80
30.	कुमकुम सने पगलिये	81-87
31.	श्री संघ सौरभ	88-94
32.	परिषद प्रांगण से	95-103
33.	जैन विश्व	104-106
34.	शाश्वत धर्म के संरक्षक	107-108

संपादकीय

तीर्थंकर महावीर स्वामी का दिव्य साधना काल

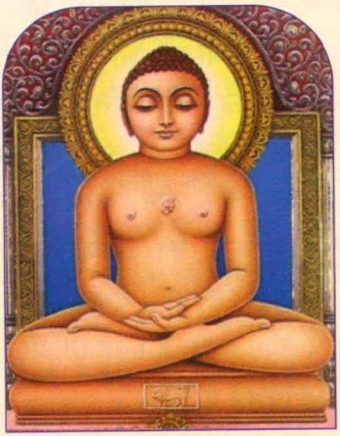

अचल-अडिग-अदम्य समत्वभाव एवं सहिष्णुता के साथ तीर्थंकर श्री महावीर स्वामी ने केवल ज्ञान की प्राप्ति के अभिप्राय से साढ़े बारह वर्षों जितने दीर्घकाल को तपस्यामयी व्यतीत किया। यह उनके जीवन का विशिष्ट साधनाकाल था। इतने (साढ़े बारह वर्षों) समय में उनने केवल तीन सौ गुनपचास दिन आहार ग्रहण किया, शेष वर्ष माह या दिवस वे निर्जल उपवास के संकल्पों से युक्त रहे। वे योग के किसी एक आसन में ध्यानस्थ हो जाते थे एवं उन्हें ध्यानावस्था में शरीर निष्कम्प रखने का अभ्यास था। उनने शरीर के निर्वाह हेतु ठंडे, रुखे, निःवादी आहार का ही सेवन किया। उन्होंने देह की ममता को सम्पूर्ण त्याग दिया था।

तीर्थंकर श्री महावीर स्वामी का जन्म ईसा पूर्व 599 में चैत्र शुक्ला त्रयोदशी की मध्यरात्रि के समय उत्तर-फाल्गुनी नक्षत्र में माता त्रिशला की कुक्षी से हुआ। आपके पिता सिद्धार्थ थे जो काश्यप गौत्रीय ज्ञातृक क्षत्रिय वंशी थे तथा विदेह में स्थित कुण्डपुर अथवा कुण्डग्राम के राज्य अधिपति (शासक) थे। माता त्रिशला वैशाली के शक्तिशाली नरेश राजा चेटक की बहिन थी। बालक के जन्म लेते ही परिवार में समृद्धि, खजाना, धन-धान्य, यश, कीर्ति आदि में अभिवृद्धि होने लगी अतएव परिवार ने नवजात पुत्र का नाम वर्धमान रखा। एक जनश्रुति का कथन है कि संजय तथा विजय नामक दो चारण मुनियों को तत्वार्थ सम्बन्धित शंका हो गई थी लेकिन कुछ दिन बाद ही बालक वर्द्धमान के दर्शन करने मात्र से समाधान हो गया, अतएव उनने उसका नाम 'सन्मति' सम्बोधित किया। श्वेताम्बर मान्यता के अनुसार वर्द्धमान का विवाह समरवीर की रूप

सम्पन्न राजकुमारी यशोदा के साथ हुआ जिससे अणोज्ज नाम की पुत्री का जन्म हुआ जिसका विवाह जमाली से किया गया। इनके दो पुत्रियां शेषवती तथा यशस्वीता थीं। दिगम्बर जैन ग्रंथ वर्द्धमान को अविवाहित मानते हैं। वर्धमान के काका का नाम सुपार्श्व, ज्येष्ठ भ्राता का नन्दिवर्द्धन तथा बहिन का सुदर्शना था। उन का व्यक्तित्व सर्वगुण सम्पन्न, असीम सौन्दर्यवान, शक्तिशाली तथा कुशाग्रबुद्धि से समृद्ध था। इनके माता-पिता पार्श्व मतानुयायी थे। प्रभु ने दीक्षा से दो वर्ष पूर्व ही रात्रि भोजन एवं कच्चे जल का त्याग कर दिया था. उनने इस काल में ब्रह्मचर्य का भी पालन किया।

शैशवावस्था में वर्धमान की धीरता, शौर्यता तथा वीरता के कारण एवं अतुलबली होने, परिषहों तथा उपसर्गों को अचलभाव से सहन करने की समर्थता, प्रत्येक संकट में दृढता रखने की क्षमता के कारण इनका नाम 'महावीर' हो गया।

तीस वर्ष की आयु में आपने परिवार, सम्पत्ति, राजसुख तथा गृहस्थजीवन का त्याग कर अभिनिष्क्रमण किया तथा तिथि मार्गशीर्ष कृष्णा दसमी को निर्जल ढाई दिन की तपस्या के साथ दीक्षा ग्रहण की। विशाल जनसमुदाय के मध्य दीक्षा का कार्यक्रम क्षत्रियकुण्ड के मध्य स्थित ज्ञातृ-खण्ड-उद्यान में सम्पन्न हुआ। प्रभु ने आभूषणों तथा वस्त्रों को अपनी देह से हटा कर स्वयं अपने हाथ से पंच-मुष्टि लोच किया। उनने सिद्धों को नमस्कार करते हुए प्रतीज्ञा की 'सव्वं मे अकरणिज्जं पावं कम्मं'- अब से मेरे लिये सभी पाप कर्म अकरणीय हैं अर्थात् मैं आज से किसी भी प्रकार के पापकार्य की प्रवृत्ति नहीं करूंगा। उनने संकल्प किया कि आज से सम्पूर्ण सावद्य कर्म का तीन करण (करना, करवाना या करने का अनुमोदन करना) और तीन योग (मनयोग, वचन योग, काय योग) से त्याग करता हूँ। यह राग पर त्याग की प्रचंड विजय थी।

आपने उसी समय अभिग्रह धारण किया कि- 'जब तक केवलज्ञान उत्पन्न नहीं होगा तब तक मैं देह की ममता छोड़कर रहूंगा, जो भी उपसर्ग या कष्ट उत्पन्न होंगे उनको समभाव पूर्वक सम्यक्रूपेण सहन करूंगा।' उसके साथ ही उनने वहाँ से अकेले पैदल विहार कर दिया, उपस्थित सम्पूर्ण जनसमुदाय उन्हें तब तक देखता रहा जब तक कि वे ओझल नहीं हो गये। महावीर स्वामी संध्या के समय मुहूर्त्तभर दिन शेष पहले कुर्मारग्राम पहुंचे तथा वहाँ उनने ध्यानावस्था का वरण कर लिया। आपने साधना के मार्ग पर अग्रसर होते हुए बौद्धिक परिश्रम तथा

शक्ति से कठोर श्रम किया अतएव आप श्रमण कहलाये। प्रवज्या ग्रहण करने के उपरांत एक वर्ष और एक मास तक महावीर ने देवदुष्य वस्त्र अपने पास रखा लेकिन बाद में अचेलक अर्थात् निःवस्त्र हो गये। दिगम्बर मान्यता के अनुसार महावीर ने दीक्षा ग्रहण करते ही वस्त्र का त्याग कर दिया था एवं वे नग्न रहते थे। वे महातपस्वी थे। दीक्षा की प्रक्रिया में प्रयुक्त सुवासित वस्त्रों तथा विलेपन की सुगन्ध के कारण चार माह तक भ्रमर कीट, चंचु-जंतु आदि के दंश सहन करना पड़े लेकिन महावीर ने समत्वभाव से सहन किया। वे इन्हें न तो उड़ाते थे, न हाथों से खुजालकर भगाते थे। वे शरीर का अपने किसी अन्य अंग से भी घर्षण नहीं करते थे। जब वे विचरण करते थे या ध्यानस्थ होते थे तब लोग कौतुहल से एकत्र हो जाते थे, वे यदाकदा पत्थरों या दण्डों से प्रहार भी करते थे लेकिन महावीर महावीर रहे, अविचल बने रहते थे। वे नयनों में पड़े धूलकणों को निकालने के लिए कभी आँखों को मसलते तक नहीं थे। अपने साधना काल में निर्जन झोपड़ियों, कुटियाओं, धर्मशाला या प्याऊ के स्थान आदि जगहों पर ठहरते थे। सर्दी में भयंकर ठंड होने पर भी कभी बाहुओं को समेटते नहीं थे। कड़कड़ाती शीत से उत्पन्न असह्य पीड़ा उन्हें उफ् तक नहीं उच्चारण करवा पाती थी। श्रमण भगवान ऐसे क्षणों का सामना भी खुले स्थल पर नग्न खड़े-खड़े काऊस्सग्ग मुद्रा अपना कर करते थे। कभी-कभी साधना काल में असामाजिक तत्व उन पर प्रहार करने लगते थे, उन्हें पीटना शुरू कर देते थे, उन पर धूल फेंकते थे लेकिन महावीर अविचल रहते थे। उन पर होने वाले उपसर्गों को वे शान्तरूप में सहन कर लेते थे। कोई उन्हें तिरस्कृत करता तथा भगाता तो वे वह स्थान त्याग कर अन्यत्र अवस्थित हो जाते थे। सम्पूर्ण साधना काल में जागृत रहे, एक बार को छोड़कर कभी भी उनने निद्रा नहीं ली, दर्शनावरणीय कर्म के उदय से जब भी निद्रा सताती वे कुछ समय चंक्रमणकर वे निद्रा से मुक्त हो जाते थे। निरंतर ध्यान चिन्तन तथा कायोत्सर्ग मुद्रा में रहना ही उनकी चर्या थी। एक वर्ष में चार मास वर्षावास के रूप में एक स्थान पर वे स्थिर रहते थे लेकिन शेष आठ मास पैदल विचरण करते थे। इस विचरण में भी ग्राम स्तर पर एक रात्रि तथा नगर स्थिति में पांच रात्रि से अधिक स्थिरता नहीं करते थे। वे स्वयं के शरीर की इच्छा, सुरक्षा या उसके दुःख के प्रति एकदम उदासीन रहे। शरीर के प्रति कोई ध्यान, आसक्ति अथवा आकर्षण का भाव उनमें नहीं था। पूरे साधना-काल में उन्हें देव, मनुष्य या तिर्यंक की ओर से भीषण प्रतिकूल या अनुकूल परिषद् तथा उपसर्ग सहन करना पड़े जो उन्होंने

क्रोध या प्रतिक्रिया रहित, निर्भय एवं मन के संतुलन के साथ स्वीकार किये। तपस्या की पृष्ठभूमि में कर्मों का क्षय और केवल ज्ञान की प्राप्ति ही उद्देश्य रहा। इसके अतिरिक्त कोई अपेक्षा अथवा नियाणा नहीं था। उनके राग-द्वेष दूर हो चुके थे। वे शांत, उपशांत बन गये थे, सभी प्रकार के संताप से मुक्त हो चुके थे। शास्त्रों में उन्हें धीर, साहसी तथा सुभट योद्धा के रूप में अंकित किया गया है। कल्पसूत्र में उन्हें महावराह के एक सींग के समान एकांकी, पक्षी की तरह अनिकेतन, भारण्ड पक्षी के समान अप्रभत्त, हाथी की तरह शूर, बैल के अनुरूप पराक्रमी, सिंह के समकक्ष अजेय, मंदार पर्वत की भांति अडिग व सुस्थिर सागर के बराबर गंभीर, चंद्र की भांति सौम्य, सूर्य के समान तेजस्वी, स्वर्ण की तरह कांतिमान, पृथ्वी के अनुरूप क्षमाशील और अग्नि के समान जाज्वल्यमान तेजस्वी विवेचित किया गया है। निस्सन्देह वे शरद ऋतु के पानी की तरह निर्मल तथा कमल पत्र की भांति निर्लेप थे। वे अनुपम उत्तम ज्ञान, दर्शन, क्षमा, सरलता, वीर्य, अपरिग्रह तथा सत्य आदि सद्गुणों का आचरण करते हुए, तीन गुप्ति तथा पाँच समिति का पालन करते हुए, अठारह पापस्थानकों से मुक्त रहते हुए, पंचाचार युक्त जीवन जीते हुए, पंच महाव्रतों को जीवन के शिलालेख में परिस्थित करते हुए निरंतर मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करते रहे एवं मुक्ति के सन्निकट आरोहण हेतु बढ़ते रहे। उनने केवल ज्ञान की प्राप्ति से पूर्व बारह वर्ष संयम साधना में व्यतीत किये। कर्मों के क्षय के लिये वे राढ देश में भी पधारे एवं वज्रभूमि व शुभ्र भूमि में विचरण किया। वहाँ अनार्य जनसंख्या ने प्रभु महावीर पर कई कष्ट ढाये, मारा-पीटा, उठाकर फेंका, कुएँ में डाला, कुत्तों से कटवाया, अपशब्दों से व्यवहार किया किन्तु महावीर ने उनके द्वारा प्रक्षेपित पत्थरों व मिट्टी के ढेलों को भी समत्वभाव में लिया। प्रभु ने अपना धर्म-ध्यान खंडित नहीं होने दिया। देह के घावों पर कोई औषधी का प्रयोग नहीं किया। वे सदेह होते हुए भी विदेहवत रहते थे। वे जन्म से तीन ज्ञानों (मति, श्रुत तथा अवधि) से संतृप्त थे तथा प्रवज्या ग्रहण करते समय चौथा मनः पर्यव ज्ञान उनमें संप्राप्त हो गया था।

महावीर स्वामी के साधनाकाल की एक महत्वपूर्ण घटना गौशाल के साथ उनकी संगति थी। विभिन्न विद्वानों के मत इस सम्बद्ध में परस्पर विसंगत हैं लेकिन यह स्पष्ट है कि दोनों छह वर्ष तक साथ रहे। महावीर के किसी अन्य संघ में सम्मिलित होने की धारणा काल्पनिक है उन्होंने स्वयं ही अपने निर्ग्रन्थ संघ की स्थापना की।

प्रभु का बारह वर्ष का साधना काल कठोर उपसर्गों से भरापुरा था तथा

संकटों एवं कष्टों से परिपूर्ण था। इस अवधि में कई घटनाएँ हुईं जो उनके जीवन को तेजाब से निकालने के अनुरूप था।

प्रथम दिन ही ग्वाले द्वारा बैल छोड़ने की घटना हुई, जिस पर स्वयं इन्द्र ने आकर संरक्षा सेवा लेने की प्रार्थना की लेकिन भगवान ने उत्तर दिया– 'अर्हन्त केवल ज्ञान और सिद्धि प्राप्त करने में किसी की सहायता नहीं लेते हैं, जिनेन्द्र अपने बल से ही केवल ज्ञान प्राप्त करते हैं। दूसरे दिन वे कोल्लाग सन्निवेश पहुंचे तथा बहुल नामक ब्राह्मण के यहाँ परमान्न (खीर) से छट्ठतप का प्रथम पारणा किया। रात्रि विश्राम उनने मोराक सन्निवेश में स्थित दूइज्जंतक आश्रम में किया तथा वहाँ से वर्षाकाल के पंद्रह दिन व्यतीत हो जाने पर पांच प्रतीज्ञाएँ लेकर विहार किया। इनमें अप्रीतिकारक स्थान पर न रहने, सदैव ध्यान में रहने, मौन रखने, हाथ में ही भोजन करने एवं गृहस्थों का कभी विनय नहीं करने के संकल्प सम्मिलित थे। लगभग आठ मास बाद वे अस्थिग्राम आये एवं शूलपाणी यक्ष के यक्षायवन में ठहरे । रात्रि को यक्ष ने कई प्रकार की यातनाएँ दी। महावीर अविचल रहे। कुछ शास्त्रों में उलेख है कि मुहूर्त भर रात्रि के शेष रहते महावीर को क्षण भर के लिये निद्रा आई तथा उनने दस स्वप्न देखे। भगवान के साधना काल में यह प्रथम तथा अन्तिम निद्रा थी। महावीर का पहला चातुर्मास अस्थिग्राम में पूर्ण हुआ।

दूसरे वर्षावास में महावीर ने उत्तर वाचाल की ओर प्रयाण करते हुए घनघोर वन में रह रहे चण्डकौशिक महानाग का उद्धार किया। वे बढ़ते रहे श्वेताम्बिका नगरी से सुरभिपुर के मध्य गंगा नदी के आने पर प्रभु ने नौका विहार से उसे पार किया। वहाँ से वे नालन्दा पहुंचे जहाँ उनने दूसरा वर्षावास किया। यहाँ वे एक तंतुवाय शाला में स्थित रहे। यहीं मंखलीपुत्र गोशाल से भेंट हुई। दोनों साथ हो गये, चौथा वर्षावास उनने पृष्ठ चम्पा में व्यतीत किया। चोराग सन्निवेश में दोनों को गुप्तचर समझकर बन्दी बना लिया गया। साधना के पाँचवें वर्ष में विचरण में कई बाधाएँ आईं। कलबुंका में कालहस्ती ने उनको पकड़ कर खूब पीटा तथा अपने भाई मेघ के पास भिजवा दिया। मेघ पहचान गया। उसने क्षमा मांगी। कर्मों के क्षय को उत्कृष्ट प्रक्रिया में ले जाने के लिये महावीर ने आनार्य देश में विचरण करने का निर्णय लिया। वे भद्दिला नगर पहुंचे। छठे वर्ष में कूविय सन्निवेश में इन्हें बंदी बना लिया गया। वहीं से गोशाल ने साथ त्याग दिया। छह मास उपरान्त गौशाल भटकते हुए कई कष्टों का सामना करते हुए पुनः महावीर के संग में आ गया। आठवें वर्ष में शालीशी गाम में कठपूतना नामक व्यन्तरी में असह्य यातनाएँ दी लेकिन महावीर ने धैर्य नहीं त्यागा। वे

कुण्डाग सन्निवेश से बहुसालग्राम आये जहाँ सालेज्जा नामक व्यन्तरी ने महावीर पर उपसर्ग ढाये किन्तु वे अकम्प रहे। विचरण के समय ग्राम लोहामला में गुप्तचर होने के सन्देह में राज्याधिकारियों ने उन्हें बंदी बना लिया परन्तु अट्ठियाग्राम निवासी उत्पल ने महावीर को पहचान लिया। उसने महावीर तथा गौशाल दोनों को रिहा करवा दिया. नवमें वर्ष में वे पुनः अनार्य राढ देश में गये जहाँ के निवासी अनुकम्पाहीन तथा निर्दयी थे। उनने महावीर स्वामी को कुत्तों से कटवाया इस वर्ष में योग्य स्थान के अभाव में महावीर वृक्षों के नीचे खण्डहरों में तथा घूमते घामते अपने कर्मों की निर्जरा करते रहे। दसवें वर्ष में वैशाली की ओर प्रस्थान करते हुए बालकों ने तकलीफें पैदा की जहाँ राजा शंख ने उनकी रक्षा की। साधना का ग्यारहवां वर्ष प्रभु महावीर के लिये म्लेच्छों द्वारा दिये गये कठोर उपसर्ग लेकर आया. तोसली में उन्हें पीटा गया । यहाँ उनको गिरफ्तार कर फांसी दी जाने की तैयारी हो गई लेकिन वे बच गये। यहाँ कष्टों के पूरे दौर को सहन करना पड़ा। एक देव संगमने ईर्ष्या से वशीभूत होकर खूब उपसर्ग किये। बारहवें वर्ष में चार माह का उपवास किया। उनका वर्षावास चम्पा में रहा। तेरहवें वर्ष में छम्माणि ग्राम में एक ग्वाला ने क्रुद्ध होकर महावीर स्वामी के कान में कांस नामक घास की शलाकाएं घुसा दी तथा पत्थर से ठोंक कर कान के बराबर कर दीं। आपने इस असह्य वेदना को समभाव से सहन किया वे मण्झिम पावा आये, वहाँ घास की शलाकाएँ खींचकर निकाली गई। इस समय प्रभु के मुख से ऐसी चीख निकली कि पूरा वन गूंज उठा।

बारह वर्ष तक इन उपसर्गों का सामना करते हुए महावीर को वैशाख शुक्ला दशमी के दिन उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र के योग में समग्र तथा परिपूर्ण केवल ज्ञान की प्राप्ति हुई। बाद में वे अर्हत, जिन, केवली, सर्वज्ञ, सर्वदर्शी बन गए।

साढ़े बारह वर्ष का साधना काल भगवान महावीर स्वामी के लिए अनुपम अलौकिक था। उनने कई बार पंद्रह-पंद्रह दिवस तथा महिने-महिने तक जल भी ग्रहण नहीं किया। कभी वे दो-दो महीने और अधिक छह-छह महिने तक पानी नहीं पीते हुए निःस्पृह भाव से विचरण करते रहे।

उनका जीवन अतिशय स्थिति में सुविकसित हो गया था तो मुक्ति की मंजिल की प्राप्ति की सुनिश्चितता थी।

सुरेन्द्र लोढ़ा
(संपादक)

मानवाधिकारों के प्रणेता भगवान महावीर

(डॉ. दिलीप धींग)

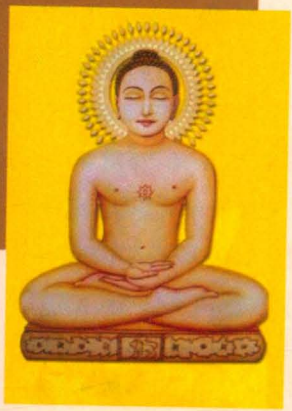

प्राचीन समय से ही विविध प्रकार की सेवाएँ करने वाले व्यक्ति राजा और अन्य सम्पन्न घरानों में नौकरी करते रहे हैं। जैन संस्कृति और सिद्धान्तों का यह सुप्रभाव रहा कि नौकरों और दास-दासियों पर होने वाले अत्याचारों के विरुद्ध वातावरण बना। अनुकूल वातावरण में अनेक साधारण व्यक्तियों ने असाधारण ऊँचाइयाँ प्राप्त कीं।

वर्धमान महावीर के पिता राजा सिद्धार्थ और उनका परिवार भगवान पार्श्वनाथ का उपासक परिवार था। सिद्धार्थ को जब वर्धमान के जन्म की सूचना मिली तो सूचना देने वाली दासी प्रियंवदा को उन्होंने दास-कर्म से मुक्त कर दिया था। भगवान महावीर के अनन्य भक्त राजा श्रेणिक ने भी उनके पुत्रजन्म का संवाद देने वाली दासी को दासत्व से मुक्त कर दिया था।

जैन ग्रंथ 'व्यवहार भाष्य' के अनुसार एक परिवार के मुखिया ने उनकी दासी की सेवाओं से प्रसन्न होकर उसका मस्तक धोकर उसे दासता से मुक्त कर दिया। एक बार एक गृहस्वामी उसके घर में दास को पीट रहा था। कुमारावस्था में वर्धमान उस घर के बाहर से जा रहे थे। मानव द्वारा मानव पर हुए इस अत्याचार से वर्धमान का दिल दहल उठा। उनका वैराग्य प्रबलतम हो गया। उन्होंने समाज से इन अत्याचारों को मिटाने का संकल्प किया।

भगवान महावीर के द्वारा चन्दनबाला का उद्धार दास-प्रथा और नारी जाति के साथ हो रहे भेदभाव के विरुद्ध उनकी आध्यात्मिक क्रान्ति का बहुत बड़ा ऐतिहासिक उदाहरण है। भगवान महावीर के उपदेशों में ये स्वर आज भी गूंजते हैं कि मानव - मानव पर कोई अत्याचार नहीं करे, मानव किसी प्राणी पर भी कोई अत्याचार नहीं करे।

जैन धर्म और दर्शन आत्मवाद पर खड़ा है। वहाँ मानववाद, मानवता और मानवीयता का अनुपालन सहज ही उत्कृष्ट रूप में हुआ है। पूर्व तेबीस तीर्थंकरों की भाँति अन्तिम तीर्थंकर महावीर ने भी मानव एकता और सामाजिक समता की

अलख जगाई। उन्होंने मनुष्य को देवता से भी अधिक महत्व दिया। उनके चतुर्विध संघ में सभी वर्णों, वर्गों और जातियों के व्यक्तियों को आत्म-साधना के लिए समान अवसर प्राप्त है।

आचार्य भद्रबाहु ने 'आचारांग निर्युक्ति' में मानवीय एकता के स्वर को दोहराते हुए कहा- 'एका माणुस्स जाई', सम्पूर्ण मनुष्य जाति एक है। जैन आगम, साहित्य और इतिहास में मानवता को महिमान्वित करने वाले अगणित उद्धरण और उदाहरण मिलते हैं।

उस समय आज की भाँति उद्योग नहीं थे। इसलिए कोई औद्योगिक श्रम कानून और श्रमिक संगठन जैसी बात भी नहीं थी। न ही कोई मानवाधिकार संगठन या आयोग जैसी बात थी। कई बार लगता है हमारी इन व्यवस्थाओं में एक अन्तर्दृष्टि और मनुष्यत्व-के-दर्शन का अभाव है। क्योंकि यह सब होते हुए भी समस्याएँ अनेक रूपों में हमारे सामने उपस्थित हो रही हैं।

तत्कालीन समय में परिस्थितियों के अनुसार अन्य अनेक प्रकार की समस्याएँ थीं। व्यक्ति-परिष्कार और हृदय-परिवर्तन से उन समस्याओं का प्रभावशाली समाधान भगवान महावीर और उनके अनुयायी कर रहे थे। निम्न जाति के समझे जाने वाले हरिकेशी और कई लोगों को मारने वाले अर्जुन मालाकार ने भी भगवान महावीर की शरण ग्रहण की, अपना जीवन रूपान्तरित किया और परमेष्ठी पद पाया। उनका सुस्पष्ट मंतव्य था- घृणा पाप से हो, पापी से नहीं।

भगवान महावीर के प्रभाव से लोग मानवाधिकारों और मानवीय मूल्यों का सम्मान करने लगे थे। वस्तुतः भगवान महावीर तो प्राणिमात्र के अधिकारों की रक्षा के मौलिक उपदेशक थे। फलतः उनके उपदेश-पथ पर चलने वाले प्राणिमात्र के अधिकारों के प्रति सजग बने। यही वजह है कि भगवान महावीर के दर्शन के परिप्रेक्ष्य में मानवाधिकारों की व्याख्या सतही न होकर मानवीयता की अतल गहराइयाँ स्पर्श करती हैं।

इस प्रकार समता और अहिंसा-दर्शन की निष्पत्ति स्वरूप हम भगवान महावीर को दास-प्रथा मुक्ति के सूत्रधार और मानवाधिकारों की रक्षा के प्रणेता और प्रवक्ता के रूप में पाते हैं। उनके 'जियो और जीने दो' के उद्घोष का समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र और पर्यावरण की दृष्टि से अत्यधिक महत्व है। मेरे एक मुक्तक के साथ इस लघुलेख को विराम देता हूँ -

न्याय के लिए नैतिकता का नीर चाहिये।
शान्ति के लिए समता का समीर चाहिये।
विश्व खड़ा है विनाश के कगार पर,
अहिंसा के अवतार प्रभु महावीर चाहिये।।

वर्तमान को चाहिये वर्द्धमान

(मुनि श्री सुमेरमलजी लाडनूं)

वर्धमान (महावीर) को जन्म लिए छब्बीस सदियाँ बीत चुकी हैं। भारत की जनता उन्हें भुला नहीं पा रही है। कालजयी व्यक्तित्व को भुलाया भी कैसे जाए ? वैशाली जनपद के क्षत्रिय कुंडनगर के राजघराने में जन्म लेकर भी वे कभी राजसी वैभव में नहीं उलझे। महल में कदम-कदम पर गुलाम बंदगी बजा रहे थे और हजारों वर्षों की गुलाम-दास प्रथा के बावजूद बालक वर्धमान इस प्रथा के विपरीत सोचते रहे। वे अनेक चालू क्रिया - प्रतिक्रिया के विपरीत अवधारणा वाले थे। वे वार्तमानिक, सामाजिक, राजनीतिक एवं धार्मिक परंपराओं में क्रांति की अपेक्षा महसूस करने लगे थे। चाहे जातिवाद था, चाहे यज्ञवाद था, नारी उत्थान का मसला था, भगवान महावीर की सोच सर्वथा रचनात्मक थी।

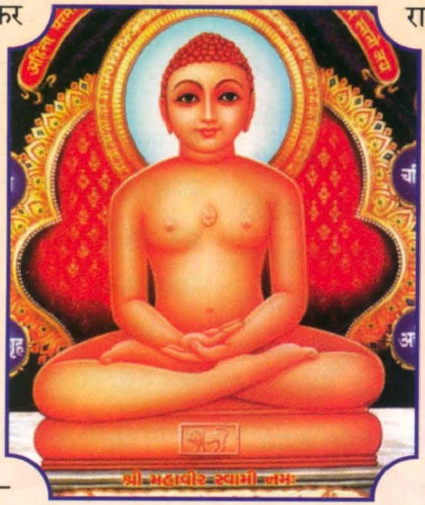

राजकुमार वर्धमान वैभव में विलासी नहीं बने व जवानी में उन्मादी नहीं बने । माता-पिता की आज्ञा से एक सद्गृहस्थ के रूप में रहने लगे। अंधविश्वासों, रूढ़ियों के खिलाफ उनके दिमाग में विचार उठते रहे, राजकुमार वर्धमान ने उन्हें समय की आँच में पकने का अवसर दिया। अनुकूल समय की प्रतीक्षा करते रहे। कोई हड़बड़ाहट नहीं, धैर्य से सब कुछ देखते रहे। अपने विचारों को परिपक्वता देते रहे।

भेदभावमूलक रूढ़िवादी धार्मिक व्यवस्था से लोग तंग हो चुके थे। अंधेरे में मार्ग ढूँढ रहे थे। भगवान महावीर की कल्याणी वाणी ने वैचारिक प्रकाश किया। रूढ़ियों को तोड़ने का साहस दिया। भेदभावमुक्त धर्म की व्याख्या सुनकर लोग रोमांचित हो उठे। भगवान महावीर के समवसरण में छत्तीस ही कौम के लोग

बेझिझक आने लगे। भगवान ने धर्म करने के लिए सबको आमंत्रित किया। चार वर्ण में से कोई भी धर्म कर सकता है। अनजान कहलाने वाले भी धर्म करने के अधिकारी हैं। प्रभु की इस कल्याणी वाणी से सबको त्राण मिला, सबमें साहस जागा, अपने उत्थान के लिए सब उद्यत हुए। रूढ़ि चुस्त लोगों द्वारा की गई धर्म की चौतरफी घेराबंदी ध्वस्त हो गई। सभी वर्ण, सभी जातियों के लोगों ने वर्धमान महावीर का शिष्यत्व स्वीकार किया।

पुरुष प्रधान समाज में नारी की उपेक्षा शताब्दियों, सहस्राब्दियों से हो रही है। नारी को एक उपभोग्य पदार्थ मान लिया गया। उसकी स्वतंत्र सत्ता की उपेक्षा होती रही। इसमें नारी खुद भी जिम्मेवार है। उसकी शारीरिक संरचना भी जिम्मेदार है। उपेक्षा का कुहासा इतना सघन हो गया कि नारी को पति सेवा के अतिरिक्त कुछ भी करना वर्जित कर दिया गया। धर्म करने के अधिकार से वंचित कर दिया गया। शास्त्र-श्रवण व वेदपाठ भी वह नहीं कर सकती। कई आचार्य नारी मुक्ति का निषेध करने लगे थे।

भगवान महावीर अपने युग में प्रथम धर्म प्रवर्तक थे, जिन्होंने नारी को साध्वी बनाया। अपने तीर्थ में उनको बराबर का स्थान दिया। नारी धर्म तो कर ही सकती है, सर्वज्ञ बनकर मोक्ष भी जा सकती है। उनकी दृष्टि में आत्मा के विकास में स्त्री शरीर बाधक नहीं है।

महावीर ने स्पष्ट कहा था- अपने विचारों को दूसरों पर बलात् थोपना हिंसा है। उन्होंने कहा- मेरा है इसलिए सत्य है ऐसा कहना मताग्रह है। सत्य है इसलिए मेरा है ऐसा कहना सत्याग्रह है। उन्होंने प्रतिपादन की शैली स्याद्वाद युक्त अपनाई। हर किसी बात को लेकर लड़ने के बनिस्बत किसी अपेक्षा से उससे समन्वय साधने का रास्ता बतलाया।

महावीर का स्याद्वाद आज के वैचारिक द्वंद्वों में रामबाण बन सकता है। भगवान महावीर ने चैत्र शुक्ल त्रयोदशी को जन्म लिया। तीस वर्ष घर में रहे। साढ़े बारह वर्ष कठोर साधना करके आत्मा का साक्षात्कार किया।

आज के सांप्रदायिक तनाव के युग में फिर एक बार महावीर की जरूरत है। आज के हिंसा के दावानल को बुझाने हेतु फिर एक बार महावीर की आवश्यकता है। आज के भोगवाद के सघन कुहासे में फिर महावीर जैसे त्याग के महासूर्य के अभ्युदय की आवश्यकता है।

पूरे विश्व में फैले उग्रवाद व आतंकवाद के ज्वालामुखी को मैत्री से शांत करने हेतु फिर एक बार महावीर की जरूरत है।

प्रभु महावीर के जीवन की विशिष्ट घटनाएँ

(संकलन- विनय कुमार छिपानी, थाँदला)

अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी को 27 भव हुए। प्रभु महावीर स्वामी के अंतिम 27 वें भव की तपस्या, साधना, उपासना विशिष्ट थी क्योंकि पूर्व भव में उपार्जीत कर्मों की सकाम निर्जरा है। ऐसी अनेक विशिष्टताएँ उनके चरित्र में हैं। जो यहाँ समाविष्ट हैं।

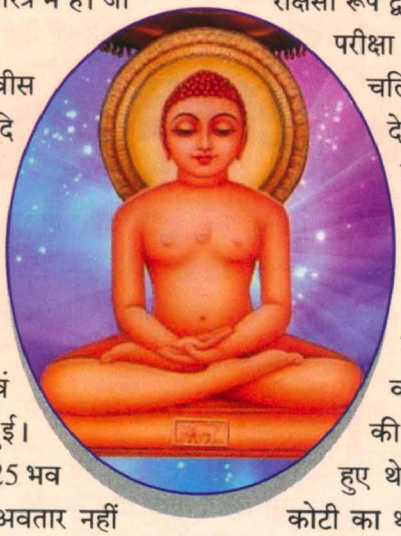

* वीर प्रभु के सत्तावीस भव में सरलता- प्रखरतादि गुणों के प्रभाव-प्रताप से पुरुषवेद का उदय और मात एक भव बीसवांसिंह के रूप में जन्म फिर भी नरवेद के रूप में हुआ। 19-21 भव में सातवीं एवं चोथी नारकी प्राप्त हुई। नपुंसकवेद पाये। बाकी के 25 भव में एक भव भी स्त्री का अवतार नहीं पाया। यह परमात्मा की विशिष्ट प्रकार की घटना।

* 27 भव में 18 भव वासुदेव पदवी, 23 वां भव चक्रवर्ती, 27 वें भव में तीर्थंकर पद की प्राप्ति विशिष्ट उत्तम कोटी के पुण्य से मिली है।

* प्रभु महावीर स्वामी के तीसरे भव में हुए कुलाभिमान के कारण 27 वें भव देवलोक से सीधे ब्राह्मण कुल में अवतरण हुआ और देवानन्दा की कुक्षी में से रात्री त्रिशला की कुक्षी में गर्भ का स्थापन हरिणेगमेषीदेव ने किया जो कि आश्चर्यकारी घटना है।

* देवलोक से देखते अति भयानक राक्षसी रूप द्वारा बीर प्रभु के धैर्य की परीक्षा की परन्तु जरा भी चलित न हुए उसके पश्चात देवों के समूह ने महावीर नाम रखा जो कि पूरे विश्व में प्रसिद्ध हुआ।

* दीक्षा लेने के पश्चात् प्रभु महावीर स्वामी ने साढ़े बारह वर्ष तक ध्यान साधना की। उच्च स्थिति को पाए हुए थे एवं तप योग अपूर्व कोटी का था। जिसमें साढ़े बारह साल में (4515 दिन में) मात्र 349 पारणे अभिग्रह के साथ किए थे और देव मनुष्य - तिर्यंचों ने प्रभु का ध्यान भंग करने एक के बाद एक उपसर्ग की कडी असाध्य उपद्रवों की हरमाला-अनुकूल-प्रतिकूल उपसर्ग जो हुए वह कोई परमात्मा को नहीं हुए।

* केवल ज्ञान के पश्चात् 23 तीर्थंकर की प्रथम देशना सफल हुई परन्तु चरम तीर्थंकर महावीर प्रभु की प्रथम देशना

निष्फल हुई। दूसरे दिन वैशाख सुद – 11 को 4400 ब्राह्मणों को दीक्षा तथा 11 ब्राह्मणों को दीक्षा तथा गणधर पर प्रदान किए। 24 तीर्थंकरों में वीर प्रभु के 14 हजार शिष्य थे जब कि गौतम स्वामीजी को 50 हजार शिष्य थे। गुरु से भी शिष्य का पुण्य सवा गुणा था जो विशिष्ट घटना में समाविष्ट होता है।

* घातिकर्म का क्षय होने के पश्चात् प्रायः कोई भी तीर्थंकर प्रभु को उपसर्ग नहीं होते हैं किन्तु वीर प्रभु को भस्मीभूत करने गौशालक ने तेजोलेश्या रखी जिसने महावीर प्रभु को तीन प्रदक्षिणा देकर गोशालक के अपने मुख में प्रवेश किया।

उसके कारण प्रभु को छः महिने तक व्याधी हुई जो अन्य कोई तीर्थंकरों को नहीं हुई।

* कार्तिक वद–14 और अमावस के दिन महावीर प्रभु ने विश्वकल्याण के लिए लगातार 16 प्रहार 48 घण्टे तक (अंतिम प्रवचन) देशना दी। देशना में विशाल जन मेदनी अतिरिक्त 18 देश के राजा भी उपस्थित हुए थे।

कोटी कोटी वंदना

मधुकर जपु मैं तो सुबह और शाम
गुरु की दया से पूरे होते सब काम
धरुकुल दीपक प्रणाधारा जिनशासन का अजब सितारा
पार्वती नंदन स्वरूपजी का लाल
मधुकर जपु मैं तो सुबह और शाम ।
उग्रविहारी करुणाधारी हृदय से बुझे बात हमारी
गुरुभक्तों के है गुरु वीर समान
मधुकर जपु मैं तो सुबह और शाम ।।
कठिन डगर थी नेक नजर थी संघ समाज की चिंता फिकर थी
संघ एकता का किया सब काम
मधुकर जपु मैं तो सुबह और शाम ।
संयम साधक दीक्षा प्रदाता प्राची बहन का भाग्य संवारा
छः छः दीक्षा करे पारा को प्रदान
मधुकर जपु मैं तो सुबह और शाम ।।

(अमृतलालजी जैन, पारा)

श्री महावीर स्वामी भगवान

(प्रेषकः अरविन्दसी मोदी)

भगवान महावीर स्वामी का जीवन परिचय

1.	च्यवन	–	प्राणांत देवलोक
2.	गृह प्रवेश तिथि	–	आशा शुक्ला–6
3.	गर्भ संहरण तिथि	–	आश्विन कृष्णा–13
4.	जन्म तिथि	–	चैत्र शुक्ला–13
5.	जन्म स्थान	–	क्षत्रिय कुण्डपुर
6.	नाम	–	वीर, सन्मति, वर्धमान, महावीर, देवार्य, ज्ञान नंदन, वीर
7.	वर्ण	–	स्वर्ण (तप्त स्वर्ण के समान)
8.	चिन्ह	–	सिंह
9.	पिता का नाम	–	सिद्धार्थ राजा
10.	माता का नाम	–	त्रिशला देवी
11.	मामा का नाम	–	गणतंत्र अध्यक्ष चेटक
12.	वंश	–	इक्ष्वाकु
13.	गौत्र	–	काश्यप
14.	पत्नी का नाम	–	यशोदा देवी
15.	पुत्री का नाम	–	प्रियदर्शना
16.	भाई का नाम	–	नन्दीवर्धन
17.	बहन का नाम	–	सुदर्शना
18.	कुमार काल	–	30 वर्ष
19.	शरीर प्रमाण	–	7 हाथ प्रमाण
20.	गृह वास में ज्ञान	–	मति,श्रुत, अवधिज्ञान
21.	दीक्षा तिथि	–	मार्ग शीर्ष कृष्णा 10
22.	दीक्षाकासमय	–	क्षत्रिय कुण्डपुर
23.	दीक्षा के समय तप	–	दो दिन कीतपस्या
24.	दीक्षा का पर्याय	–	42 वर्ष
25.	दीक्षा वृक्ष		अशोक वृक्ष

26.	दीक्षा परिवार	–	अकेले दीक्षित
27.	साधना काल	–	12 वर्ष 6 मास 15 दिन
28.	प्रथम देशना स्थल	–	जृंभक ग्राम (देवों के बीच में)
29.	प्रथम देशना तिथि	–	बैशाख शुक्ला 10
30.	द्वितीय देशना	–	बैशाख शुक्ला एकादशमी
31.	अन्तिम देशना स्थल	–	पावापुरी हस्तिपाल राजा की शाला
32.	प्रथम पारणा स्थल	–	कोल्लाग सन्निवेश
33.	प्रथम पारणा दाता	–	बहुल ब्राह्मण
34.	केवल ज्ञान तिथि	–	वैशाख शुक्ला दशमी
35.	केवल ज्ञान स्थल	–	ऋजु बालु का नदी के किनारे
36.	केवल ज्ञानोत्पति	–	दूसरे समवसरण में तीर्थ व संघ की उत्पत्ति
37.	केवल ज्ञान का समय	–	दिन का अन्तिम प्रहर
38.	तीर्थोत्पत्ति	–	
39.	आयु	–	72 वर्ष
40.	गणधर	–	इन्द्रभूति आदि 11 गणधर
41.	केवल ज्ञानी	–	700
42.	अवधि ज्ञानी	–	1300
43.	मन पर्यवज्ञानी	–	500
44.	वादी	–	400
45.	साधु सम्पदा	–	14,000
46.	साध्वी सम्पदा	–	36,000
47.	श्रावक संख्या	–	15,9000
48.	श्राविका संख्या	–	31,8000
49.	चातुर्मास संख्या	–	42
50.	निर्वाण भूमि	–	पावापुरी (बिहार)
51.	मोक्ष परिवार	–	एकाकी सिद्ध
52.	मोक्षासन	–	पर्यकासन
53.	निर्वाण कल्याणक तिथि	–	कार्तिक कृष्णा 30

54. भगवान ने साधकजीवन में तपस्या काल के कुल 4515 दिनमें सिर्फ 349 दिन आहार किया भगवान ने बेले के दिन दीक्षा ली थी। इसलिये एक उपवास और जोड़ दें तो कुल 4166 दिन तपस्या में बीते ।

शांतिलाल रामानी
(संयोजक)

जन्म-जयन्ति पर दोहान्जलि

(डॉ.श्रीमती कोकिला भारतीय)

समता, शुचिता, सत्य, समर्पित, पा परिमल सा जीवन ।
जन्म जयन्ति पर्व प्रसंग पर, गुर चरणों में शत् वन्दन ।
क्षितिज निनादित करता, आओ मंगल भावों में बह जाओ,
जन्म जयन्ति जयन्त गुरु की, अंजुली भर-भर अर्घ्य चढ़ाओ ।
जय-जयवन्त-जयन्त-जयन्ति, ज्यौर्तिमय-जन-जैत्ता,
तप-जप-संयम आराधन, औ ! परम अध्यात्म प्रणेता ।
उदधि सी उत्ताल तरंगे, उर को उर्जावान बनाती,
मधुकर जन्म जयन्ति महौत्सव, मंगल भावों के दीप सजाती।
अम्बर-अवनि-तारे-सितारे, सब करते अभिनन्दन,
परिषद्-प्राण-प्रदाता-पुरु के, पावन पद पंकज में वन्दन।
रोम-रोम में अगम अगोचर, अविनाशी नवकार,
जावरा शहर में जन्म जयन्ति वन्दन वार हजार ।
दसों दिशाओं में गुरुवर की, कीर्ति पताका,
जन्मौत्सव श्री जयन्त गुरु का, आओ गाएं गौरव गाथा ।
गुरु-गरिमा-गौरव-गर्वित, गुणगान करें, मंगल पा जाएं,
अमृतमय अनुष्ठान बने, यह जन्मौत्सव स्वर्णिम बन जाए ।
अर्पित-अक्षत-कुंकुम चन्दन, भावों से अभिषेक करें ।
आप जियें हजारों साल-साल के दिन भी पचास हजार बने ।

जगमग-जन्म-जयन्ति-ज्योति, जुग-जुग जियै श्री जयन्त गुरुवर ।
कोकिल रीम-रीम यै गाएं, हो शत-शत-शत शतायु सूरिवर।
शुभ उत्तमोत्तम भावों के, उत्कृष्ट निलय-अनुष्ठान बनाएं,
प्राणाधार परिषद् पुरुवर का, जन्मोत्सव जावरा में मनाएं ।
मानवता के मधुबन मधुकर, दृढ़ संकल्प सिन्दूर सजाएं।
जय जयवन्त जयन्त जयन्ति,गुरु गरिमा का गुलाल उड़ाएं ।
आत्म-ज्ञान आलोकित गुरुवर, वैभव के सर्वोच्च शिखर ।
जन्मोत्सव जावरा शहर में अर्पित श्रद्धासिक्त सुमन प्रवर ।

गुरु की सेवा में

(श्री घेवरचंदजी नाहर, जमखंडी, कर्नाटक)

जिसने मिटाया गच्छ में फैले शिथिलाचार को,
जिसने बताया मार्ग सच्चा संघ और समाज को,
जिसने किया सचेत फिर से त्रिस्तुति के सिद्धांत को,
ऐसे गुरु राजेन्द्र को वंदन करुं वंदन करूं ।।1।।

थे तर्क में निपुण खूब शास्त्रों का ज्ञान था,
चर्चा चक्रवर्ती के नाम से, नाम खूब विख्यात था,
संगीत में सर्वोपरी ज्योतिष में प्रख्यात थे,
ऐसे गुरु धनचंद्र को वंदन करुं वंदन करुं ।।2।।

थे सरस्वती के नंद आप, भगवानजी के लाल थे,
हुयी दीक्षा छोटी उम्र में, सुज्ञान के भंडार थे,
चंद्रराज चरित्र जैसे कोश की रचना की थी आपने,
ऐसे सूरि भूपेन्द्र को, वंदन करूं वंदन करूं ।।3।।

चौदह वर्ष की आयु में दीक्षा ग्रहण की आपने,
सूरि राजेन्द्र ना चरणे रही, खूब ज्ञान पाया आपने,

शाश्वत धर्म के दीप को, रौशन किया है आपने,
ऐसे गुरु यतीन्द्र को वंदन करुं वंदन करूं ।।4।।
थी असीम कृपा सरस्वती का जिनके सिर पर हाथ था,
मोहन विजय जैसे मुनि का जिसको मिला साथ था,
थे विद्या के भंडार, जन जन में जिसका नाम था,
गुरु विद्या सूरि के चरणों में वंदन करुं वंदन करूं ।।5।।
क्या भाग्य थे पैपराल के जहां जन्म पाया आपने,
सूरि यतीन्द्र के हाथ दीक्षा, ज्ञान पाया आपने,
हुए पुण्य सम्राट आप जिनका हर जुबा पर नाम है,
ऐसे गुरु जयंत को वंदन करु वंदन करु ।।6।।

अभिवन्दना ! अभिवन्दना !

(श्री इंदिरा घोड़ावत, झाबुआ)

मानव जीवन की दुर्लभता समझ करके,
जीवन की क्षणभंगुरता का विचार करके
मृगतृष्णा है सुख की चाह चिन्तन करके,
संसार-असार, संयम-सार ऐसा बोध पा करके,
कमल-सदृश कीच से दूर संसार भावना पा करके
दस दुर्लभ बोल सा अंतिम बिन्दु प्रवज्या स्वीकार करके
आप सभी मुमुक्ष- आत्मा ने सिद्धपथ स्वीकार किया ।
अभिवन्दना ! अभिवन्दना !!
पाँचवे आरे के आप सभी लग रहे हैं जैसे महावीर ।
चौबीस तीर्थंकर भगवन्-सी प्रतिमूर्ति पाकर ।
क्षण-भर का भी प्रमाद न कर बने हो गौतम गंभीर ।
अनन्तकाल के भवभ्रमण अन्त करने का है प्रसंग आत्मोद्धार ।

आत्मा को विषय-कषाय से मुक्ति का यह स्वर्णिम अवसर ।
'करेमि भंते' - पाठ उच्चारित करवा रहे- राष्ट्रसंत - करुणा सागर 'मधुकर'
श्री संघ रोमांचित होकर रहा, जय जयकार के गगनभेदी स्वर ।
स्वर्ग से देवता भी हर्षित हो अर्पित कर रहे मुक्ताहार ।
सचमुच-थराद की वीर धरा पर स्वा है-साक्षात् समवसरण ।
और अन्त में :-
हे मोक्ष पथ के पथिक ! लक्ष्य सिद्धि की ओर बढ़ो ।
जीवन-पुष्प पुष्पित पल्लवित सुरभित बने ।
परम् भव-तारक गुरुदेव का सदैव वरद् हस्त बना रहे ।
ज्ञान-मेह सावन बन बरसे आत्मधरा पर ।
आत्म-शुद्धि होती रहे, अध्यात्म की फुहारों से ।।
इन्दु की अन्तर मन की स्वीकारें अनुमोदना ! अनुमोदना !!

गुरूवर वन्दना स्वीकारजो

(साध्वीश्री रुचिदर्शनाश्रीजी म.सा.)

परमेष्ठि ना त्रीजा पदे, स्वरेकर लगे शोभता ,
वीतराग मार्ग पे चालवानो, सामर्थ्य सांचो धरावता,
जीनमार्ग सांचो बतावी ने, अम बालुड़ा ने उबारता ,
औ जयन्त मधुकर मारा गुरुवर, वन्दना स्वीकारजो ।
पंचम काल भले विषम हो पुण्य मारू प्रबल छे,
आज्ञा अने शासन तमारू मारी साधनानो बल छे,
रखवलना जो था कदिय मारी, दृष्टि तमारी परिवार छे,
औ जयन्त मधुकर मारा गुरुवर, वन्दना स्वीकार जो ।
सामर्थ्य अद्भुत खुं तमारुं, पापी पावन थई जता ,
आत्मनुज्ञान अपूर्व तमारूं, विरोधियों पण नमी जत ,

कल्पवृक्ष सम आशीष तमारूं, वांछित सहुं ना फली जता,
औ जयन्तमधुकर मारा गुरुवर वन्दना स्वीकार जो ।
नवकार ना साधक अजोड़, शासन ना शणगार हता ,
परहित ना शुभ भाव सदा, मच्छ ना आधार हता,
वात्सल्य सिंधु विशाल जे, करुणा तणा अवतार हता ,
औ जयन्त मधुकर मारा गुरुवर वंदना स्वीकार जो ।।

मधुकर शब्दाजंलि

(तर्ज– मोहन आओ तो सही, गिरधर आओ तो सही)

मधुकर आओ तो सही, गुरुवर आओ तो सही ।
भक्तों की भीड़ खड़ी, गुरुवर कब से यही ।। मधुकर....1

पेपराल के पूनमचंदा, रूपवती के नंदा ।
जिन शासन के राजा, गुरुवर सदा जयवंता ।। मधुकर....2

पाट दीपाया राजेन्द्र गुरु का, हो गुरु गुणवंता ।
ध्यान, जाप खूब किया, हो सरल विरल संता ।। मधुकर 3

नगर-डगर विचरे, गुरु भारत के भगवंता ।
हृदय पटल बिराजे, सब जन-मन भाग्यवंता ।। मधुकर....4

पेपराल अवतारी, बाग पधारे हो सुखवंता ।
मालव, मरुधर छोड़, बिराजे भांडवपुर पुण्यवंता ।। मधुकर...5

पाट दीपाये जयंत का, नित्यसेन, जयरत्न शोभवंता ।
सुनील-ज्योति शीश नमे गुरु चरणे और नमे श्रीमंता ।। मधुकर...6

शब्द संयोजन – सुनील डैडी

गुरु परंपराएँ पुण्य सम्राट गुरुदेव श्री के
देवलोक गमन की कालगणना

(मुनि चारित्ररत्न विजयजी)

जैन शासन में आचार्य भगवंत का स्थान तीर्थंकर परमात्मा से दूसरे स्थान पर आता है। क्योंकि जिस समय भव्यात्माओं का मोक्ष मार्ग दिखाकर तीर्थंकर परमात्मा अजरामर पद को प्राप्त करते हैं। उस समय उनके विरहकाल में द्वादशांगी रूप सम्पूर्ण प्रवचन को और जैन संघ के उत्तरदायित्व को आचार्य भगवंत ही धारण करते हैं।

भगवान महावीर के महान और पवित्र शासन में समय-समय पर अनेक आचार्य भगवंत हुये उसमें श्री सौधर्म बृहत्तपोगच्छीय त्रिस्तुतिक परम्परा के जैनाचार्य विश्वपूज्य अभिधान राजेन्द्र कोष रचिता गुरुदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. के षष्ठम पट्टधर सुविशाल गच्छाधिपति पुण्य सम्राट गुरुदेव श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. वर्तमान काल में अजोड़ शासन प्रभावक हुये।

गुरुदेव श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. के जीवन का किसी भी प्रसंग को लें, तो कोई ने कोई महत्वपूर्ण प्रेरणा हमें दृष्टिगोचर होगी, जीवन के अंतिम क्षण तक सतत्-अनवरत् शासन प्रभावना में व्यस्त रहने के बाद भी गुरुदेव श्री ध्यान-साधना तप और आराधना में संल्लीन रहकर आत्मा की गहराईयों तक पहुँचने में सक्षम हुये थे।

गुरुदेव श्री की सहन सरलता, विनम्रता और साधुजनोचित आचार निष्ठा और संयम साधना में सदैव जागरूकता के दर्शन कर प्रत्येक आराधक नतमस्तक हो जाता था। वे केवल शासन प्रभावक न रहकर तत्वदृष्टा, परम विशिष्ट ध्यान योगी एवं सूक्ष्म जगत के अन्वेषक बन गये थे, गुरुदेव श्री का जन्म विक्रम बीसवीं शताब्दि के अंतिम दशक में हुआ और इक्कीसवीं शताब्दि के प्रथम दशक के अंतिम वर्ष में संयम जीवन ग्रहण कर भगवान महावीर के शासन में पंचम पद पर आरुढ़ हुये और मुनि अवस्था में तीन दशक तक ज्ञान ध्यान और आराधना में अग्रसर रहते हुये जैन शासन में

विद्वत्ता की प्रथम पंक्ति में आपका नाम स्थापित हुआ। आप श्री ने ज्ञानाभ्यास दरम्यान त्रिस्तुतिक जैन संघ को मार्गदर्शन एवं निश्रा प्रदान कर गुरु गच्छ की महिमा को नई ऊंचाई प्रदान की।

गुरुदेवश्री को इक्कीसवीं शताब्दि के चतुर्थ दशक में अखिल भारतीय सौधर्म बृहत्तोपगच्छीय त्रिस्तुतिक जैन संघ ने जैनाचार्य के रूप में तृतीय पद पर बिराजमान किया तब से निरन्तर अपने उत्तरदायित्व का निर्वाह करते तीन दशक तक अविस्मरणीय शासन प्रभावना की। इन तीन दशक में त्रिस्तुतिक संघ की गौरव गाथा का पूरे देश में चहुँ दिशा में विस्तार हुआ वह आपके परिश्रम और पराक्रम की देन है, शासन प्रभावना एवं आत्म कल्याण करते हुए जीवन के आठवें दशक के चतुर्थ वर्ष में प्रथम माह में आपका देवलोक गमन हुआ।

गुरुदेव श्री का देवलोक गमन गुरु परंपरा की कालगणना करते हुए त्रिस्तुतिक सिद्धांत के पुनरुद्धारक गुरुदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. के देवलोक गमन बाद 110 वर्ष 3 महीने और 25 दिन बाद हुआ यानि विश्व पूज्य गुरुदेव के देवलोक बाद 13 वर्ष 8 महीने 22 दिन चर्चा चक्रवर्ती आचार्य भगवंत श्रीमद् विजय धनचन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. देवलोक हुए, उनके बाद 16 वर्ष 5 महीने चार दिन पर साहित्य विशारद आचार्य भगवंत श्रीमद् विजय भूपेन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. का गमन हुआ, उनके बाद 23 वर्ष 10 महीने 3 दिन पर व्याख्यान वाचस्पति आचार्य श्रीमद् विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. देवलोक हुए, उनके बाद 19 वर्ष 6 महीने 28 दिन बाद कवि हृदय आचार्य भगवंत श्रीमद् विजय विद्याचन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. का देवलोक गमन हुआ उनके देवलोक गमन बाद त्रिस्तुतिक जैन संघ के विशाल पुण्य साम्राज्य का उत्तर दायित्व निभाते हुये पुण्य सम्राट युग प्रभावक गुरुदेव श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. का 36 वर्ष 8 महीने और 28 दिन पे देवलोक गमन हुआ, आप श्री का देवलोक गमन संवत् के आइने में वीर सं. 2543, विक्रम संवत् 2074 (कार्तिक 2073), राजेन्द्र संवत् 110, इस्वी सन् 2017 रहा।

आलेखन समय आपश्री के देवलोक गमन के दो वर्ष पूर्ण होने पर श्रद्धा और समर्पण के पुष्प अर्पण करते हुए पंचाग से भाव पूर्ण वंदना करते हुए आशीर्वाद एवं कृपा दृष्टि की कामना करते हैं।

श्री जयंतसूरि वंदना

(श्रीमती पारसमणी मारवाड़ी)

एक बार गुरु से मिली तो बात समझ में आ गई।
बार-बार गुरु से मिली आशीष उनका पा गई।
गुरु पूजा की तो, दृष्टि उनकी उठ गई।
ऐसे पुण्य सम्राट की पुण्याई को भावभरी वन्दना ।।
नवकार की आराधना कर, आराधक बने हो गुरुवरा।
साधक बनकर सिद्धी पाई, वचन सिद्ध हुए गुरुवर।
उग्रविहारी धर्म प्रचारी जिनवाणी सुनाई गुरुवर।
ऐसे राष्ट्रसंत, युग पुरुष को भावभरी वंदना।
जीर्णोद्धार तीर्थोद्धार कराकर जिनालयों का लाभ ले लिया।
प्रतिष्ठा कराकर उपाश्रय बनवाकर भक्तों को लाभ दे दिया।
उपधान उजमणा तपजप कराकर, तपस्वियों के भावर जगा दिया।
ऐसे तारक महापुरुष अव्रतारी को भावभरी वंदना।
सादगी, सरलता सौम्य, समभाव था गुरुवरा।
जहाँ-जहाँ भी चरण पड़े, धन्य हो गई वो धरा (तीर्थबन गई वो धरा)
भेदभाव सब मिटाकर, एकता कराई गुरुवरा।
ऐसे समदृष्टि कल्याणकारी विश्वविख्यात पुरुष को भावभरी वंदना।
सूरज में आग है चन्द्रमा में दाग है।
निष्कलंकित हैं, सर्वगुणों की खान हैं।
अनंत उपाधियों से अलंहित हैं।
जिनशासन की शान हैं।
ऐसे ऐतिहासिक नामी पुरुष को पारसमणी की भावभरी वंदना।
ऐसे पंचमहाव्रतधारी गुरु को भावभरी वन्दना।
गुरु सम्मुख गई तो विनय से सिर झुकाया।
गाँवली करी वन्दन किया धर्मलाभ मिल गया।
मंगलाचरण जिनवाणी, महामंगलिक सुनाई।
पुण्य सम्राट की पुण्याई की जग में जय-जयकार हो गई।

दिव्य पुरुष
जयन्त सेनसूरीजी म.सा.

(श्री अनिल जैन)

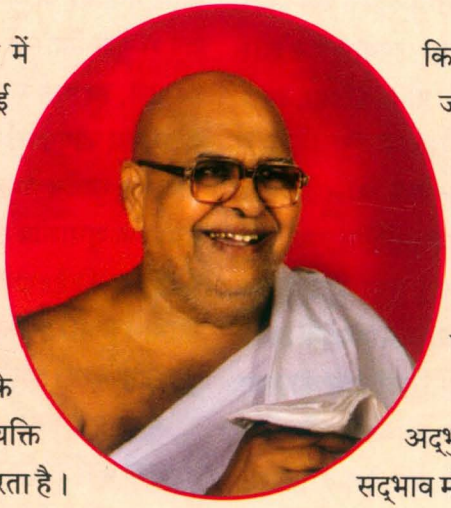

गुरुवर, दिव्यता में विलीन होकर नई आभा दे रहे हैं। उनकी दिव्यता से सारे कार्य सुचारू रूप से चल रहे हैं। गुरु का आभामण्डल इतना तेजोमयी है कि उनके सम्पर्क में आने पर व्यक्ति सुखानुभूति अनुभव करता है।

'दिव्य ज्योत जयन्त ज्योत है'

पूज्य गुरुवर ध्यानी थे, ज्ञानी थे, योगी थे, सरल थे, दृढ़चारित्र्य, चूढ़ामणि थे, आत्मवैरागी थे, पूज्यश्री प्रसादी थे। ऐसी अनेक उपमाएँ भी छोटी हैं।

गुरुदेव पुण्य सम्राट का तेज मैंने हर जगह देखा। गुरुदेव गौतम प्रसादी लब्धिवंत थे। महानता इतनी कि छोटा से छोटा व्यक्ति सहज रूप से उनसे मिल लेता था। गुरुदेव की वाणी का पान एक बार कर लेता था, वह उनका मुरीद हो जाता था। हमने दादा गुरुदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. को नहीं देखा, किन्तु पुण्य सम्राट को जरूर देखा है। जब पुण्य सम्राट इतने उच्च व दक्ष थे, तो दादा गुरुदेव कितने उच्च भाव वाले होंगे ?

'विरल विभूति अद्भुत योगी सरल मना
सद्भाव मोही'

पूज्य गुरुदेव पुण्य सम्राट का सारा जीवन का अवलोकन करते हैं तो ऐसा आभास होता है कि वीर प्रभु महावीर साक्षात् उपस्थित हैं। सारा जीवन संघ समाज जन-जन की पीड़ा की चिन्ता की। अंतिम क्षण तक वीर प्रभु की देशना सभी साधु संतों को दी। यह समझाइश इतनी सरल थी कि प्रत्येक साधु-साध्वी को यह आभास नहीं हुआ कि गुरुदेव समाधि मरण लेंगे।

प्रभावी तीर्थ भाण्डवपुर की तीर्थ धरा पर पुण्य सम्राट का आगमन सारा दिन संघ समाज, साधु-साध्वी से चर्चा

कर दिव्य ज्योति में विलीन होगा, हमें दिव्यता का आभास कराता है।

गुरुदेव के साथ बिताये हर क्षण का हमें आभास है। मैं उनके ज्ञानांजन का दिवाना हूँ कितने ज्ञानारागी थे, मेरे गुरुवर । पल-पल बीता जा रहा है, उनका उपयोग कर लो। दिन हो या रात्रि, बैठक हो या प्रतिष्ठा, सारा समय चिन्तन मनन में रहता था।

किसी व्यक्ति ने गलत भी बोल दिया हो तो उसमें अच्छाई निकाल लेना, यह गुण दिव्य पुरुष का ही था। पूज्य गुरुदेव का नवकार से अटूट नाता था। उन्होंने अपने जीवन में जितनी भी सिद्धियाँ प्राप्त की, वह इस नवकार से ही थी। नवकार उनके रग-रग में बसा था। आज सारे देश में विधि-विधान के साथ नवकार मंत्र की आराधना होती है। वह पुण्य सम्राट की ही देन है। उन्होंने नवकार को साधा था। सागर जितनी गहराई में जाकर नवकार के एक-एक शब्द का विश्लेषण किया। बाग चातुर्मास के दौरान मौन-साधना (एक माह) में अड़सठ तीर्थ भाव की रचना कर संघ समाज में भक्ति के माध्यम से नवकार को कैसे साधा जाये ? यह बताया । 68 अक्षर, 68 तीर्थ का उल्लेख कर अद्‌भुत कार्य किया गुरुदेव ने । भक्ति में ही शक्ति है। इस बात को ध्यान में रखकर यह रचना की थी। पुण्य सम्राट ने नवकार मंत्र के करोड़ों मंत्रित वासक्षेप से अनेक बीमारियाँ आदि-व्याधि, उपाधि दूर की है। मैं स्वयं साक्षी हूँ। गुरुदेव ने मुझे इतनी बात समझाई थी कि जीवन में नवकार व गुरुदेव का बराबर स्मरण करना। आज नवकार के जाप, ध्यान, भक्ति और जप से मुझे नित नई ऊर्जा प्राप्त हो रही है। हर क्षण, हर पल नवकार का सुमिरन करने से तुम्हारा जीवन नई ऊँचाईयों पर पहुँचेगा। यह शब्द गुरुदेव ने मुझे कहे थे। आज पुण्य सम्राट के शुभाशीष से 108 नवकार के दोहे की रचना की है। दोहे लिखने का सहज मुझे आभास हुआ। इनकी बानगी के रूप में यहाँ कुछ दोहे बता रहा हूँ

नवकार है परफेक्ट,
नही कोई साईड इफेक्ट ।
नवका का नीर जो पीता है,
बन जाता है वो वीर है ।
नवकार का मैजिक,
खत्म होता है लॉजिक ।

इस तरह चिन्तन करते हुए मुझे 108 दोहे लिखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। अन्त में पुण्य सम्राट के लिये मैंने 35 वर्ष पूर्व श्री भाण्डवपुर तीर्थ की धरा पर यह पंक्तियाँ लिखी थी।

जयन्त सदा जयवन्त रहे,
यह ज्योति सदा अमरवन्त रहे ।
हर जनम-जनम में मिले सान्निध्य तुम्हारा,
हे कोटी-कोटी वन्दन तुम्हें ।

परिषद का अभिमान...
गुरुवर गुण की खान

(श्री सुनील बांठिया, इंदौर)

शान्ति, समता, क्षमागुण, ज्ञानदर्शन का भण्डार थे। शिरोमणी संकल संघ के भूलोक का श्रृंगार थे।

जिनशासन के राजा, सबके खेवनहार थे।
नवपद में सुशोभित, ऐसे मेरे गुरुराज थे ।।

जिनशासन के पुखराज, शान्तमूर्ति, प्रफुल्लित मनोहारी मुखमुद्रा के धनी, साहित्य जगत में यश पताका फहराने वाले, शब्दों के शिल्पी, परम श्रद्धेय राष्ट्रसंत जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. के चरणों में शत् शत् वंदन जैनागम में गुरु गुणगान की भरपूर प्रशंसा की गई है। गुरुदेव के प्रति सच्ची, निष्ठा, भक्ति भावना एवं कृतज्ञता का सर्वश्रेष्ठ परिचायक उनके गुणों का वर्णन है। परमपूज्य राष्ट्रसंत का व्यक्तित्व एवं कृतित्व प्रभावोत्पादक है। भाषा साहित्य में जितने भी अच्छे विशेषण हैं वे सारे विशेषण गुरुवर के लिये कम पड़ते हैं। ऐसा एक भी गुणधर्म नहीं जो उनके उज्ज्वल व्यक्तित्व में परिलासित न हुआ हो। दीक्षित होने के साथ ही एक-एक करके सारे गुण अलंकृत होते गये।

आप विद्वान भी, विनम्र भी
आप गंभीर भी, उन्नत भी
आप तेजस्वी भी, सौम्य भी
आप तर्कनिष्ठ भी, आस्थाशील भी ।
कहीं तार्किकता का रंग, कहीं श्रृद्धा का गुलाल ।
कहीं समर्पण की सरिता, कहीं स्नेह का सागर ।
कहीं निस्पृहता का आकाश, कहीं विनय का प्रकाश ।
कभी ध्यानी, कभी ज्ञानी ।
कभी गुरु, कभी शिष्य, कभी तपस्वी, कभी मनस्वी ।
कभी मौनी, कभी मुखर ।

पेपर खत्म हो जाएंगे लिखते-लिखते लेकिन गुरुवर का गुणकोष खत्म नहीं होगा। ऐसे अनन्त गुणों के धारी

गुरुवर ने जबसे शासन की बागडोर संभाली तब से अन्तिम समय तक निरन्तर संघ को गति प्रदान करते हुए जहाँ एक ओर संयम साधना तप आराधना व मनोमंथन कर साधना के उच्चतम शिखर को स्पर्श किया वहीं दूसरी ओर कई धार्मिक अनुष्ठान, मन्दिर का जिर्णोद्धार, नवीन मन्दिर, गुरु मन्दिर, उपाश्रय, स्कूल, कॉलेज, अस्पताल आदि का निर्माण करवाकर मानव सेवा से जन-जन को लाभान्वित किया व मूक प्राणियों के लिये पांजरापोल में दान करवाना जीवन मात्र के प्रति आपके चिन्तन को दर्शाता है।

आचार्यश्री ने अपने ज्ञान, ध्यान व साधना के स्तर पर जो आत्म साक्षात्कार किया था उसे उन्होंने विविध गौरवमयी ग्रन्थों में काव्यरूपों में प्रस्तुत किया है। प्रमुख ग्रन्थों के साथ-साथ हजारों धार्मिक, सामाजिक, भूगोल, खगोल, ज्योतिषि, सभ्यता व संस्कृति आदि सम्पूर्ण विषयों पर लेखनकर तीर्थंकरों की धर्मदेशना को जन-जन तक पहुँचाया है। आपके रचित गीत, स्तवन, सज्झाय, कविता, दोहे, छन्द, चौपाई आदि काव्यकला का अनुपम उदाहरण हैं जो नित्य ही हम गाकर भक्ति प्रदर्शित करते हैं। आत्मस्पर्शी होने के कारण गुरुदेव का साहित्य अत्यन्त मार्मिक, रोचक व प्रेरक बन पड़ा है। गुरुदेव का अन्तरंग व्यक्तित्व उनकी काव्य-कृतियों में व्याप्त है। उनके पदों में परमात्म प्रेम की धारा भी अबाधगीत से बहती है। अनेक पदों में सभी धर्मों का व परमात्मा के सभी नामों का समावेश है क्योंकि जिन्हें परमतत्व की अनुभूति हो जाती है वहाँ संकीर्णता नहीं रहती है। उनका अपना एक धर्म होता है और वह है आत्मधर्म श्रुत और शील के अद्भुत समीकरण, प्रतिभा, परिश्रम व प्रेम की पावन त्रिवेणी आचार्यश्री ने वास्तव में साहित्योपासना कर जैनशासन की अनुपम सेवा की। आपके सम्पूर्ण व्यक्तित्व एवं कृतित्व का गम्भीरता से अध्ययन करें तो हम पायेंगे की गुरुदेव स्वयं एक धर्मगाथा थे एक अद्भुत शास्त्र थे जिसे समझना एक पवित्र साधना है।

राष्ट्रसंत, लोकसन्त, लोककल्याण में अपने जीवन को समर्पित करने वाले 'व्यक्तित्व एवं कृतित्व' के धनी थे हमारे गुरुदेव।

जिनका स्मरण युगों-युगों तक किया जाएगा।

जिनकी आशी दृष्टि में प्रेम है,
जिनकी दिव्य दृष्टि में क्षेम है।
ऐसे परम उपकारी गुरुवर को सादर श्रद्धाजंलि है।

पुण्य सम्राट श्रीमद् विजयजयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा. का

गागर में सागर के समान अल्प परिचय...

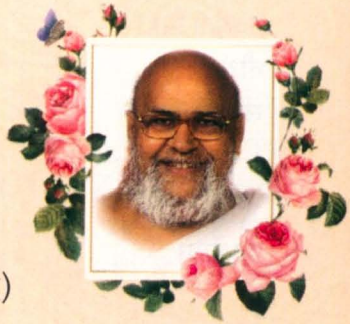

जन्म तिथि	:	मगसर कृष्णा 13, वि.सं. 1993
जन्म भूमि	:	पेपराल, जि. बनासकांठा (थराद)
जन्म नाम	:	पूनमचंदजी
पिताश्री	:	श्रेष्ठीवर्य स्वरूपचंदजी
माताजी	:	रत्नकुक्षी पार्वतीदेवी
कुल	:	धरू वंश
दीक्षा तिथि	:	महा सुदी-4, वि.सं. 2010
दीक्षा भूमि	:	सियाणा, जि. जालोर (राज.)
दीक्षा प्रदाता	:	पीताम्बर विजेता आचार्यश्री यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.
दीक्षा नामकरण	:	मुनिराज श्री जयन्तविजयजी म.सा.
मनोनीत आचार्य	:	श्री कुलपाकजी तीर्थ (आ.प्र.) वि.सं. 2039
आचार्यपद तिथि	:	महा सुदी-13, वि.सं. 2040
आचार्यपद भूमि	:	श्री भाण्डपुर तीर्थ, जि. जालोर (राज.)
आचार्यपद नाम	:	प.पू. आचार्यदेव श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.
भाषाज्ञान	:	हिंदी, अंग्रेजी, गुजराती, मारवाडी, संस्कृत इत्यादि
प्रथम शिष्य	:	मुनिराज श्री नित्यानंद विजयजी म.सा.
विहार यात्रा	:	1 लाख 40 हजार कि.मी, 15 प्रदेशों में विचरण
साहित्य यात्रा	:	अनेक विषयों पर आधारित 200 से ज्यादा साहित्य/अभिधान राजेन्द्र कोष का 3 बार प्रकाशन
संयम प्रदान	:	200 से ज्यादा मुमुक्षु भाई-बहनों को दीक्षा प्रदान/5 बार सामूहिक दीक्षा प्रदान/शिष्य संपदा-40
प्रतिष्ठाचार्य	:	250 से ज्यादा जिनालय और गुरु मंदिरों की प्रतिष्ठा-अंजनशलाका

गुरुमंदिर प्रणेता	:	200 से ज्यादा श्री राजेन्द्रसूरीश्वरजी गुरुमंदिर का निर्माण प्रेरणा एवं प्रतिष्ठा
नवकार निष्ठा	:	55 वर्षों से अखंड नव दिवसीय नवकार आराधना आयोजन
तीर्थप्रणेता	:	भारत भर में 25 भव्य तीर्थों का निर्माण
संस्थापक	:	अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन तरुण परिषद-महिला परिषद, श्री राज राजेन्द्र धर्मोत्तेजक परिषद, मधुकर, संस्कार ज्ञानायतन।
पद प्राप्ति	:	संघ एकता शिल्पी, संयम दानेश्वरी, युग प्रभावक, जिनशासन सम्राट, प्रतिष्ठा शिरोमणि, राष्ट्रसंत, लोकसंत, पुण्य सम्राट्
श्रेष्ठ मार्गदर्शन	:	अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद परिवार, शाश्वत धर्म (मासिक), यतीन्द्र जयन्त ज्ञानपीठ
प्रेरणा प्रदान	:	गौशाला, हॉस्पिटल, विद्यालय का निर्माण
पट्टधर	:	पू.आ. श्री नित्यसेन सूरीश्वरजी म.सा., पू.आ. श्री जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा.
शतावधानी शिष्य	:	मुनि श्री प्रत्यक्षरत्नविजयजी म.सा.
काव्यरचनानिपुण	:	2000 से अधिक स्तवन, 200 से अधिक सज्झाय, चैत्यवंदन स्तुति आदि
गुणनिधार	:	गंभीरता, सरलता, सहनशीलता, वात्सल्य, प्रसन्नता, गीतार्थता
तपस्या	:	अठ्ठाई तप-3, 1 माह की मौन साधना, बाग चातुर्मास-2004
दीक्षा पर्याय	:	63 वर्ष (त्रिस्तुतिक परम्परा में सर्वाधिक)
आचार्य पर्याय	:	34 वर्ष
आयुष्य	:	81 वर्ष
चातुर्मास	:	63
देवलोक गमन	:	वैशाख वदी-5, मध्यरात्रि 11.30, वि.सं. 2073, भाण्डवपुर तीर्थ (राज.)
अग्नि संस्कार	:	वैशाख वदी-7, विजय मुहूर्त, भाण्डवपुर तीर्थ (राज.)

पुण्य सम्राट करूणा के अवतार थे

(अशोक श्रीश्रीमाल, इंदौर)

परम पूज्य गुरुदेव श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. दया, करूणा, क्षमा के पर्याय थे। पूज्य श्री हर क्षण प्राणी मात्र के लिए कल्याण का भाव रखते थे, जब भी कोई अवसर मिलता पूज्यश्री जीवों को बचाने, अभयदान देने, जीवदया का कार्य करने-करवाने की प्रेरणा देते थे। जब भी कोई महोत्सव होता चाहे वह प्रतिष्ठा का हो, दीक्षा का हो, नवकार आराधना का हो या ऐसे कोई भी प्रसंग जिसमें बड़ी रसोई होती गुरूवर उन गूंगे-मूंगे जीवों की जीवदया की राशि आवश्यक एकत्रित करवाकर उपयोग करवाते थे।

टाण्डा का प्रसंग सभी को याद है जहाँ गुरूदेव ने भगवान महावीर के जन्म कल्याणक के दिन ईद भी होने से अपनी प्रभावशाली प्रेरणा से ईद पर हिंसा रूकवा दी थी।

राजेन्द्र नगर नैल्लोर पर अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के स्वर्ण जयंति समारोह अवसर पर राह में एक बकरा जिसे बेचने के लिए कुछ लोग मोटर साईकल पर ले जा रहे थे, करूणा के विभूति ने अपने श्रावकों के माध्यम से तुरन्त खरीदवा लिया उसे अभयदान दिया और जब तक गुरुदेव की तीर्थ पर स्थिरता रही उसे प्रतिदिन नवकार व मांगलिक सुनाते थे। वह प्राणी भी अति उत्साह से सुनते हुए श्रवण करता था।

घटना दक्षिण भारत विहार की है, पूज्यवर अपने श्रमण संघ के साथ विहाररत थे, रास्ते में एक बैल जिसे कोई ट्रक वाला भयंकर टक्कर देकर घायल कर गया, बैल तड़प रहा था लगभग प्राण निकलने वाले थे, गुरुदेव रुके नवकार सुनाया, मांगलिक सुनाई और तब पूज्य श्री नित्यानंद विजयजी म.सा. को कहा इसे नवकार सुनाते रहना, जब तक यह जीव शान्ति पूर्वक विदा नहीं ले ले। राणापुर में पूज्य साध्वीश्री देशनानिधी श्रीजी म.सा. के दीक्षा अवसर का था, पूज्यश्री रजला से राणापुर की ओर विहार करते बड़ी घाटी तक आ गये। यकायक उनकी निगाहें एक पिल्ले पर पड़ी, गुरुदेव ने पूछा यह कहाँ से आ गया पता चला यह तो टोले के साथ रजला से पीछे-पीछे आ गया, इतने में कुत्ते का वह बच्चा गुरुवर के पैर चाटने लगा, गुरुदेव ने स्नेह से सहलाते हुए एक कार से पुनः उसकी माँ के पास भिजवाया।

नवकार मंत्र आराधना ने सायंकाल प्रतिक्रमण के पश्चात् हम कुछ आराधक गुरुदेव के पास बैठ जाते थे, गुरुदेव पुराने स्मरण व अध्यात्म की चर्चा करते थे। विजयवाड़ा नवकार मंत्र आराधना के समय प्रतिक्रमण पश्चात् हिंसा-अहिंसा पर इतने मार्मिक ढंग से प्रस्तुति दी कि मेंगलवा हाल मुकाम दिल्ली के एक गुरुभक्त ने कहाँ गुरुदेव मुझे जीवदया में इतनी रकम खर्च करना-आप आदेश दें।

गुरुदेव ने कहा- यूँ तो हम जीवों को घांस, गुड़, चुग्गा पानी देते हैं अच्छी बात है लेकिन मैं चाहता हूँ तुम कत्ल खाने में कटने के लिए जा रहे जानवरों को जो भी निश्चित रूप से

मरेंगे ही उनमें से आधे पैसों से जानवरों को खरीद लो और गौ-शाला पहुँचवा दो। और शेष राशि गौशाला को पहुँचा दो जिससे उनका रख रखाव भी होता रहेगा। ऐसे में तुम्हें उन मरते हुए प्राणियों को अभयदान का अपूर्व पुण्य मिलेगा। उन भाईयों ने दूसरे दिन ही जोधपुर जाकर यह कार्य किया और तब से आज तक प्रतिवर्ष वह जीव बचाने का कार्य करता रहता है ।

गुरूदेव अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के सम्मेलन/अधिवेशन अथवा जब भी सदस्यों का एकत्रित होने का मौका मिलता वे इस हेतु प्रेरणा देते थे।

उन्हीं की प्रेरणा से डीसा-अहमदाबाद व गुजरात की परिषद पांजरापोल के माध्यम से जीवों को रख-रखाव करती विशेषकर मकर संक्रान्ति पर पतंगबाजी के दौरान घायल पक्षियों को तुरन्त ईलाज मुहैय्या करवाती है।

अहमदाबाद की तरूण परिषद ने अनेक बार कटने जा रहे पशुओं को पुलिस माध्यम से बचाया। गुजरात के मुख्यमंत्री ने भी इन्हें प्रशंसा पत्र दिया। अभी हाल ही मैं जीव दया के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने पर डीसा के श्री हसमुख भाई वेदलिया को राज्यपाल व मुख्यमंत्री ने गणतंत्र दिवस पर सम्मानित किया। इसके बुनियाद भी पूज्य गुरुदेव की ही प्रेरणा रही। पूज्य गुरुदेव की प्रेरणा व भावना को सम्मान देते हुए भारत भर की अनेक परिषद शाखाएँ इस कार्य को प्राथमिकता से कर रही हैं ।

मध्यप्रदेश के नवगठित राणापुर शाखा ने बीमार व अनुपयोगी प्राणियों को बचाने का एक अभियान चला रखा है।

परिषद शनिवार को बाजार के दिन मंडी में किसान, आदिवासी द्वारा इस प्रकार बेचने के लिए आए जानवरों को खरीदती है। ये जानवर सामान्यतः कसाई या कत्लखाने वाले ही खरीदते हैं। आदिवासी किसान इसलिए बेच देते हैं कि अब वह उनके लिए अनुपयोगी एक तरफ उनके लिए खिलाने का व ईलाज का पैसा बचेगा तो दूसरी तरफ बेचने पर पैसा मिल जायेगा। परिषद इन दुर्बल जानवरों को खरीदकर पांजरापोल गौशाला में भेज रही है। अभी तक सैंकड़ों जानवरों को बचा चुकी है।

10 मार्च 2019 को इंदौर में एक मुमुक्षु भाई श्री मयंक पावेचा व वर्षीतप तपस्वी परिषद के महामंत्री अशोक श्रीश्रीमाल, दीपमाला श्रीश्रीमाल के अभिनंदन समारोह प्रसंग पर एक मार्मिक अपील पर 50 से अधिक मुक पशुओं को कत्लखाने से छुड़वाने का संकल्प लेकर छुड़ाने की प्रक्रिया आरंभ हो गई ।

सूरत परिषद ने पूज्य पुण्य सम्राट के देवलोक गमन के पश्चात् से एक वर्ष तक प्रतिदिन अभियान चला रखा था। आज भी यह परिषद ग्रामीण क्षेत्रों से इस प्रकार के जीवों को बचाकर अभयदान दे रही है।

पूज्य पुण्य सम्राट की यह प्रेरणा इस प्रकार जीवों के लिए वरदान बन गई । दक्षिण भारत की बैंगलोर, मैसूर, हुबली आदि शाखाएँ हर माह पांजारापोल जाकर जीवदया के कार्य करती हैं ।

जयंतसेन हस्ताक्षर

(भक्तों को पूज्य गुरुदेव द्वारा प्रसादी रूप भेजे गये पत्रों का यहाँ क्रमशः प्रकाशन किया जायेगा)

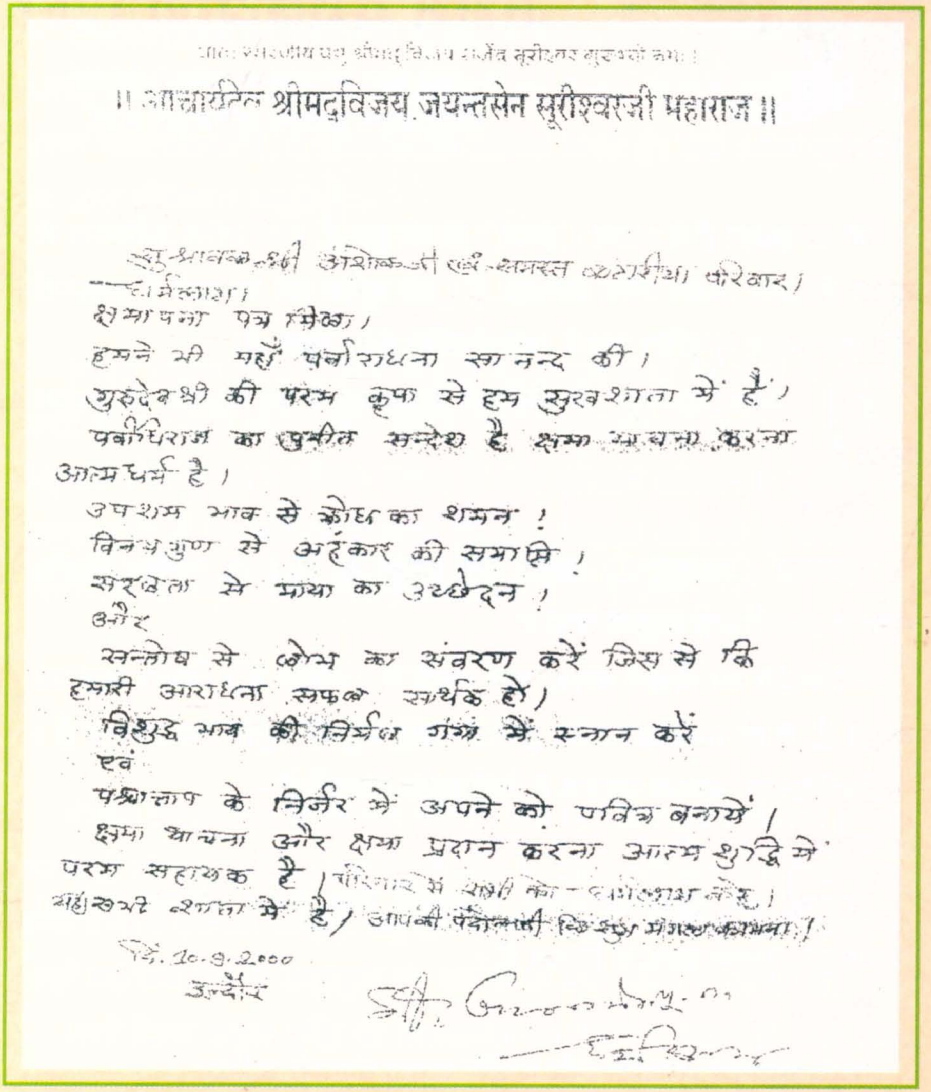

प्रातः स्मरणीय प्रभु श्रीमद् विजय राजेन्द्र सूरीश्वर गुरुभ्यो नमः।

॥ आचार्यदेव श्रीमद्विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी महाराज ॥

सुश्रावक श्री अशोकजी एवं समस्त कटारीया परिवार।
— धर्मलाभ।
क्षमापना पत्र मिला।
हमने भी यहाँ पर्वाराधना सानन्द की।
गुरुदेवश्री की परम कृपा से हम सुखशाता में हैं।
पर्वाधिराज का पुनीत सन्देश है क्षमा याचना करना आत्म धर्म है।
उपशम भाव से क्रोध का शमन।
विनय गुण से अहंकार की समाप्ति।
सरलता से माया का उच्छेदन।
और
सन्तोष से लोभ का संवरण करें जिससे कि हमारी आराधना सफल सार्थक हो।
विशुद्ध भाव की निर्मल गंगा में स्नान करें
एवं
पश्चात्ताप के निर्झर में अपने को पवित्र बनायें।
क्षमा याचना और क्षमा प्रदान करना आत्म शुद्धि में परम सहायक है। परिवार में सभी को धर्मलाभ कहें। सभी सुखशाता में है। आपकी [illegible] मंगलकामना।

दि. 10-9-2000
इन्दौर

[illegible]

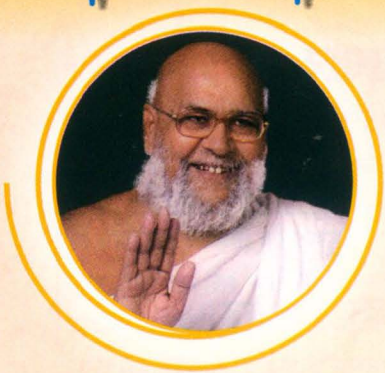

प्रवचन

अशुभ वचनयोग (26)

स्व. पुण्य सम्राट युग प्रभावक लोकसंत जैनाचार्य
श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.

जो समझदार हैं वे मत्सर (ईर्ष्या) से भरे हुए हैं, धनी लोग अभिमान से दूषित हैं। और अन्य लोग बेसमझ हैं (जो सूक्ति को समझने में असमर्थ हैं) इस प्रकार सुभाषित अपने आप में जीर्ण होता रहता है।

इसी 'उत्तराध्ययनसूत्र' में चौबीसवें अध्ययन में प्रभु महावीर ने उपदेश दिया है :-

असावज्जं मियं काले, भासं भासिज्ज पन्नवं ।।

प्रज्ञावान (समझदार) व्यक्ति को समय के अनुसार सीमित निर्दोष भाषा में अपनी बात कहनी चाहिये ।

परिस्थिति का विचार करके कम शब्दों में (संक्षेप में) निर्दोष बात जो कहते हैं, वे ही समझदार वक्ता होते हैं- यह प्रभु की सूक्ति का आशय है । 'विवेकविलास' नामक पुस्तक में ऐसी सूक्ति मिलती है -

वाक्यं प्रियहितं वाच्यं, देशकालनुगं बुधैः।।

विद्वानों को देशकालानुसार हितकारी प्रिय वचन बोलना चाहिए। 'तत्त्वामृत' नामक ग्रन्थ में लिखा है -

निरवद्यं वदेद्वाक्यम्, मधुरं हितमर्थवत् ।।

मधुर, हितकर, सार्थक और निर्दोष वाक्य बोलना चाहिए।

बोलने को तो कौआ भी बोलता है, परन्तु लोग कोयल

की बोली ही सुना करते हैं, क्योंकि उसमें मधुरता होती है-

कोयल काकों देत है, कौआ कासों लेत ?
मीठे बोल सुनाइकै, मन बस में करि लेत ।।

कोयल किसी को कुछ देती नहीं और कौआ किसी से कुछ लेता नहीं, परन्तु कोयल मीठी बोली से सबका मन वश में कर लेती है, इसी प्रकार जो लोग मीठा बोलते हैं, वे लोकप्रियता अर्जित करते हैं। एक अन्य सुभाषित के द्वारा नीतिकार कहते हैं :-

काकः कृष्णः पिकः कृष्णः, को भेदः पिककाककायोः ।
वसन्तसमये तात ! काकः काकः पिकः पिकः ।।

कौआ काला होता है और कोयल भी काली होती है। दोनों में अन्तर क्या है ? (कुछ नहीं) फिर भी हे तात ! वसन्त ऋतु आने पर (लोग पहचान लेते हैं कि) कौआ-कौआ है और कोयल कोयल है (बोली से समझ लेते हैं कि कौआ कौनसा है और कोयल कौनसी है नीतिकार शिरोमणि श्री विदुरजी का कथन इस विषय में इस प्रकार है :-

अव्याहृतं व्याहृताच्छ्रैय आहुः, सत्यं वदेद् व्याहृतं तद् द्वितीयम् ।
प्रियं वदेद् व्याहृतं तत् तृतीयं, धर्मं वदेद् व्याहृतं तच्चतुर्थम् ।।

- विदुरनीतिः 4/12

बोलने की अपेक्षा न बोलना श्रेष्ठ है। यह एक बात हुई । बोलना हो तो सत्य ही बोलना चाहिए। यह दूसरी बात है, जो उससे श्रेष्ठ है। सच्ची बात मीठी भाषा में बोलनी चाहिए, यह तीसरी बात उससे अच्छी है। मीठी बोली में कही गई बात धर्म के अनुकूल हो। यह चौथी बात उससे भी अच्छी है।

वाणी किस प्रकार बुद्धि के मार्गदर्शन की अपेक्षा रखती है, उसे एक उदाहरण के साथ शास्त्रकार समझाते हैं :-

पुव्वं बुद्धीए पासेत्ता, तओ वक्कमुदाहरे ।

अचक्खुओव नेयारं, बुद्धिमन्नेसए गिरा ।।

पहले बुद्धि से परखकर फिर बोलना चाहिए, क्योंकि अन्धा व्यक्ति जिस प्रकार मार्गदर्शक (नेता) की अपेक्षा रखता है, उसी प्रकार वाणी भी बुद्धि के मार्गदर्शन की अपेक्षा रखती है ।

बोलने में बुद्धि का जब अंकुश रहता है, तभी वक्ता को यह भान रहता है कि देखी-सुनी समस्त बातें मुँह से बाहर निकालने योग्य नहीं होती :-

सव्वं सुणाति सौतेन, सव्वं पासइ चक्खुणा ।

न च दिट्ठं सुतै धीरो, सव्वं उज्झितुमरहित ।।

- थैरगाथा 8/500

मनुष्य कान से कुछ सुनता है और आँख से कुछ देखता है, परन्तु धीर (धैर्यशाली) पुरुष देखी-सुनी सब बातों को मुँह से प्रकट नहीं करता ।

देखी-सुनी बातों में से जितना अंश प्रकट करने योग्य समझते हैं, उतना ही प्रकट करते हैं, इसीलिए, पहले भली-भाँति सोचकर फिर बोलना चाहिए, ऐसा कहा गया है-

अणुचिन्तिय वियागरे ।।

बिना विचारे बोलना अशुभवचन - योग है। उससे कैसे-कैसे अनर्थ हो जाते हैं ?

इसके कुछ उदाहरण सुनिए :-

मानव शरीर पर वाणी का कैसा प्रभाव होता है ? सो जानने के लिए कुछ डॉक्टरों ने एक ऐसा कैदी माँग लिया, जिसे मृत्युदण्ड दिया जा चुका है।

प्रयोग के लिए उस कैदी को एक टेबल पर लिटा दिया गया। फिर उनकी आँखों पर पट्टी बाँध दी गई, जिससे वह केवल सुन सके, परन्तु कुछ देख न सके । (क्रमशः)

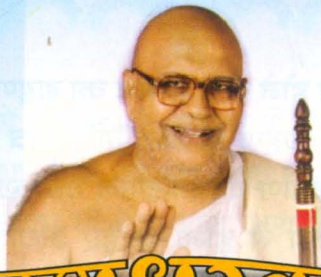

गणधरवाद

प्रवचनकार

स्वर्गीय मनीषी लोकसंत आचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा.

व्यक्त- परन्तु इस प्रकार के परमाणु का अस्तित्व नहीं है, क्योंकि वह सामग्री से उत्पन्न नहीं होता।

महावीर- एक तरफ तो तुम यह कहते हो कि सब सामग्रीजन्य है और फिर कहते हो कि परमाणु नहीं है। यह तो परस्पर विरुद्ध कथन है। जैसे कोई कहे कि सभी वचन झूठे- असत्य है, तो उसका यह कथन जैसे स्ववचन विरुद्ध है, वैसे ही इसमें भी विरोध है, क्योंकि यदि परमाणु ही न हो, तो उसके अलावा ऐसी कौन-सी सामग्री है, जिससे यह सब उत्पन्न होता है ? क्या यह सब आकाश कुसुम से उत्पन्न होता है ? इसलिए यदि सभी सामग्रीजन्य मानना हो, तो परमाणु रूप सामग्री का अभाव नहीं माना जा सकता।

सभी अदृश्य नहीं है

व्यक्त- किन्तु परभाग अदृश्य है ही और निकटवर्ती भाग के भी सूक्ष्म होने से वह भी अदृश्य है- इत्यादि तर्क द्वारा जिस सर्वशून्यता की सिद्धि की थी, उसका क्या होगा ?

महावीर- इसमें भी विरोध है, क्योंकि दृश्य वस्तु के अग्रभाग को ग्रहण करने एवं देखने पर भी कहते हो कि वह नहीं है। इसमें विरोध नहीं तो और क्या है ?

व्यक्त- वस्तुतः सर्वभाव होने से अग्रभाग का ग्रहण भी भ्रांति ही है।

महावीर- अग्रभाग का ग्रहण भी यदि भ्रांति मात्र हो, तो शून्य रूप से समान होने पर भी खर-विषाण का अग्रभाग क्यों ग्राह्य नहीं होता या तो दोनों का ग्रहण समान रूप से होना चाहिए अथवा नहीं होना चाहिए। समान होने पर भी ऐसा होना सम्भव नहीं है कि एक का तो ग्रहण हो और दूसरे का न हो तथा विषर्यय क्यों नहीं होता ? स्तंभादि के अग्र भाग के बदले खर-विषाण का ही अग्रभाग दिखे और स्तंभादि के अग्र भाग के बदले खर-विषाण का ही अग्रभाग दिखे और स्तंभादि का अग्रभाग न दिखे, ऐसा क्यों नहीं होता ? इसलिए ऐसा नहीं माना जा सकता कि सभी कुछ शून्य ही है।

इसके अतिरिक्त दूसरी बात यह है कि पर भाग नहीं दिखता, इसलिए अग्रभाग भी नहीं होना चाहिए, यह कैसा अनुमान ? क्योंकि अग्रभाग तो अबाधित प्रत्यक्ष सिद्ध है। इसलिए उक्त अनुमान से अग्नि के ऊष्णत्व की तरह अग्रभाग का बाध नहीं हो सकता, किन्तु इस अग्रभाग ग्राहक प्रत्यक्ष से ही तुम्हारा अनुमान बाधित हो जाएगा। याने अग्रभाग के ग्रहण से परभाग की भी सिद्धि हो जाएगी, क्योंकि अग्रभाग यह आपेक्षिक है। इसलिए यदि कोई पर भाग हो, तभी अग्रभाग सम्भव है, अन्यथा नहीं। इसलिए अग्रभाग के अस्तित्व से परभाग के अस्तित्व का अनुमान सहज है।

अदर्शन अभाव साधक नहीं है

दूसरी बात यह है कि अदर्शन मात्र से वस्तु का निह्नव-अपलाप नहीं किया जा सकता, क्योंकि देशादि से विप्रकृष्ट व मेरु-पिशाचादि वस्तुएँ विद्यमान होकर भी नहीं दिखने से उनका अभाव नहीं माना जा सकता। परभाग के अदर्शन मात्र से अग्रभाग का निषेध नहीं किया जा सकता, परन्तु अग्रभाग के दर्शन से अदृश्य पर भाग का अस्तित्व भी अनुमान से सिद्ध किया जा सकता है। जैसे कि दृश्य वस्तु का परभाग भी है, क्योंकि तत्सम्बद्ध अग्रभाग का ग्रहण होता है, जैसे आकाश के पूर्व

भाग का ग्रहण होने से तत्सम्बन्धी परभाग भी है ही। इसी प्रकार दृश्य वस्तु का परभाग भी है। तथा तुमने जो यह कहा था कि अग्रभाग का भी एक भाग अग्र है और उसका भी एक भाग अग्र है, ऐसा करते -करते जो सर्वाग्र भाग हैं, वह तो सूक्ष्म है और अदृश्य है। इसलिए अग्रभाग का सर्वथा अभाव है इत्यादि, वह भी अयुक्त है। क्योंकि इसमें भी यदि परभाग न माना जाए, तो अग्रभाग सम्भव ही नहीं होगा। इसलिए परभाग के अदृश्य होने पर भी उसे स्वीकार करना ही चाहिए।

यदि सर्वशून्य ही हो, तो फिर अग्रभाग, मध्यभाग और परभाग ऐसा भेद भी कैसे सम्भव है ?

व्यक्त- परमत की अपेक्षा ऐसा भेद किया गया है ।

महावीर- आयुष्मन ! किन्तु जहाँ सर्वाभाव हो, वहाँ यह स्वमत और परमत ऐसा भेद किस तरह हो सकता है। नहीं मानने पर ही अग्रभाग, मध्यभाग, परभाग ये भेद स्वीकार किए जा सकते हैं और यदि ऐसे भेदों को स्वीकार न किया जाए, तो फिर खर-विषाण जैसे इन विकल्पों का अर्थ भी क्या है ? अर्थात् वैसे विकल्प करना निरर्थक है।

यदि जब सर्वशून्य हो, तो ऐसा कैसे सम्भव है कि अग्रभाग ही दिखे और परभाग न दिखे ? वस्तुतः कुछ भी नहीं दिखना चाहिए और ग्रहण भी विपर्यास क्यों नहीं होता ? अर्थात् ऐसा क्यों नहीं होता कि परभाग ही दिख जाए, किन्तु अग्रभाग न दिखे ? इससे सर्वशून्यता असिद्ध है।

यदि ऐसा नियम हो कि परभाग नहीं दिखता है, इसलिए वस्तु शून्य है, तो फिर स्फटिक की सत्ता तो स्वीकार करनी ही होगी, क्योंकि उसका तो परभाग भी दिखता है।

व्यक्त- स्फटिकादि भी वस्तुतः शून्य ही है।

महावीर- तब तो परभाग के अदर्शन से वस्तु का अभाव सिद्ध नहीं होगा। परभाग का अदर्शन यह हेतु बन जाएगा। अतः यही कहो कि कुछ नहीं दिखता इसलिए सर्वशून्य है ।

(क्रमशः)

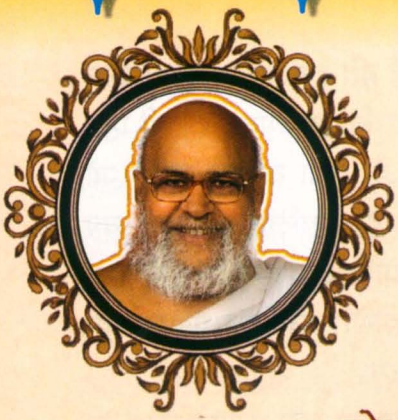

लघु कथाएँ

मैं जानता हूँ

स्व. पुण्य सम्राट युग प्रभावक लोकसंत जैनाचार्य
श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.

चोरी पकड़ी गयी

एक राजा की राज्य सभा में एक पंडितजी थे। एक बार राजा ने पंडितजी से 'तन्तु कहा करन्त ।' की समस्या पूर्ति करने के लिए कहा। पंडितजी घर गये, पर समस्या पूर्ति नहीं कर सके, इसलिये निराश हो गये। उनकी पुत्रवधू ने उनसे उदासी का कारण पूछा। पंडितजी ने वह समस्या बता दी। पुत्रवधू बड़ी बुद्धिमान थी। उसने समस्या पूर्ति कर दी।

दूसरे दिन पंडितजी ने राज दरबार में समस्या पूर्ति करते हुए दोहा सुनाया-

साठ वर्ष के बाद जो, नर बनता है कन्त ।
वह बूढ़ा वह बालिका, तन्तु कहा करन्त ।।

समस्या पूर्ति से राजा प्रसन्न हो गया। उसने दूसरी समस्या पंक्ति दी- 'किस मुख घालूँ खीर।' पुत्रवधू की सहायता से पंडितजी ने इस समस्या की पूर्ति भी कर दी-

बालक रावण जनमियो, दशमुख एक शरीर ।
माता मन में चिन्तवे, किस मुख घालूँ खीर ।।

राजा ने पंडितजी के सामने एक समस्या और रखी- 'बिरला देख्या कोय।'

दूसरे दिन राज्य सभा में पंडित ने समस्या पूर्ति की -

सात समुन्दर मैं फिरी, सब जग लीनो जोय ।
साधु सती औ सूरमा, बिरला देख्या कोय ।।

पर इस बार पंडितजी की पोल 'फिरी' शब्द से खुल गई। राजा ने यह समझ लिया कि किसी स्त्री ने यह समस्या पूर्ति की है। राजा

के पूछने पर लज्जित होकर सिर झुकाकर पंडितजी ने कहा- मैंने किसी भी समस्या की पूर्ति नहीं की है। सारी बुद्धिमानी मेरी पुत्रवधू की है। उसी ने सब समस्याओं की पूर्ति की है।

महल कभी गिर जायेगा

इस दुनियाँ में जो कुछ दिखाई देता है, वह सब समय आने पर नष्ट हो जाता है। बगीचे में कलियाँ खिलती हैं और फूल मुरझा जाते हैं। एक बालक जन्म लेता है, किशोरावस्था और जवानी पार करके बूढ़ा हो जाता है और फिर मर जाता है। उसकी मृत देह को उसके ही रिश्तेदार शमशान में ले जाकर जला देते हैं। मनुष्य दूसरी चीजों की अनित्यता को देखते हुए भी अपने बारे में नहीं सोचता, यह बड़े आश्चर्य की बात है।

एक राजा ने एक बड़ा शानदार महल बनवाया। उस महल के निर्माण के लिए देश के कुशल कारीगर लगे थे। करोड़ों रुपयों की लागत से यह महल बना। महल का उद्घाटन किया गया। नगर के सभी प्रतिष्ठित लोगों को समारोह में आमन्त्रित किया गया। सब लोग आये और दावत में शरीक हुए। सबने महल देखकर उसकी प्रशंसा की और सब चले गये। केवल एक दार्शनिक वहाँ बैठा रहा और टकटकी लगाये महल की ओर देखता रहा।

राजा ने पूछा- क्या आपको इस महल में कोई कमी दिखाई दे रही है ?

दार्शनिक बोला- हाँ राजन् ! मुझे इसमें केवल दो कमियाँ दिखाई दे रही हैं। पहली यह कि इसे बनाने वाला एक दिन मर जायेगा और दूसरी यह कि किसी दिन यह महल भी नष्ट हो जायेगा ।

महल बन्यो सारो घणो, पण एमाँ बे खोट ।
करनारो मरशे कदी, पडशे महल सचोट ।।
यह संसार एक स्वप्न है।
सबको जाना एक दिन, तज तन धन परिवार ।
जयन्तसेन सब व्यर्थ है, मद मिथ्या अधिकार ।।

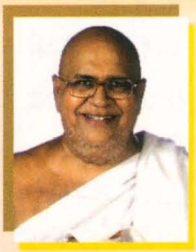

उत्तरदाता
स्व. जैनाचार्य श्रीमद् विजय
जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा.

प्रश्नोत्तरी

शब्द नय किसे कहते हैं?

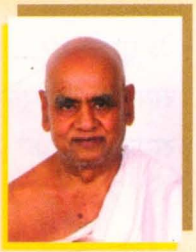

प्रश्नकर्ता
जैनाचार्य श्रीमद् विजय
नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा.

प्र. नैगम नय किसे कहते हैं ?

उ. 'न एको गमो नैगमः' अर्थात् जो अंश आरोप और विकल्प से वस्तु को जाने। जैसे निगोदिया जीव को सिद्ध कहना, और चौदहवें गुण स्थान वाले को संसारी कहना यह अंश है।

लकड़ी के घोड़े को घोड़ा कहना यह आरोप, जैसे रथ के लिए लकड़ी काटने के लिए वन में जाते हुए सुथार से कोई पूछे कहाँ जाते हो ? वह कहे कि रथ लाने जाता हूँ।

प्र. संग्रह नय किसको कहते हैं ?

उ. अपनी जाति का विरोध न करके अनेक विषयों का जो एकपने से ग्रहण करे उसको संग्रह नयन कहते हैं। जैसे जीव कहने से सब जीवों का ग्रहण होता है।

प्र. व्यवहार नय किसे कहते हैं ?

उ. संग्रह नय से ग्रहण किये हुए पदार्थों को विधि पूर्वक भिन्न-भिन्न करे उसे व्यवहार नय कहते हैं। जैसे जीव के त्रस और स्थावर भेद करना।

प्र. पर्यायार्थिक नय के कितने भेद हैं ?

उ. त्रदजुसूत्र, शब्द, समभिरूढ़ और एवं भूत ये चार भेद हैं।

प्र. त्रदजुसूत्र नय किसको कहते हैं ?

उ. ऋजु यानी सरल अर्थात् भूत भविष्यत् की अपेक्षा न करके जो वर्तमान पर्याय मात्र को ही ग्रहण करे उसको त्रदजुसूत्र नये कहते हैं।

प्र. शब्द नय किसे कहते हैं ?

उ. लिङ्ग, कारक वचन, काल और उपसर्ग वगैरह के भेद से वस्तु को भिन्नपने ग्रहण करे उसको शब्द नय कहते हैं। जैसे 'दार, भार्या, कलत्र ये तीनों भिन्न-भिन्न लिङ्ग के शब्द एक ही स्त्री पदार्थ के वाचक हैं किन्तु यह नय स्त्री पदार्थ को तीन रूप से ग्रहण करता है। तथा 'मैं भोजन करता हूँ और मुझे देखता हूँ।' इत्यादि कारक आदि के भेद से भी भेद समझ लेना।

स्वस्थ्य प्रतिस्पर्द्धा करें

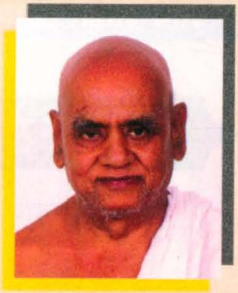

गच्छाधिपति जैनाचार्य
श्रीमद् विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा. की डायरी के पृष्ठ

बुधवार

प्रतिद्वन्दिता में कोई बुराई नहीं है बशर्ते कि यह स्वस्थ हो । प्रतिस्पर्धा से प्रतिभा को उन्कृत होने का अवसर मिलता है। व्यक्ति में प्रतिस्पर्धा की भावना होना कोई विकृति नहीं है। यह उसे विकास की ओर प्रेरित करती है।

वह निरंतर अपनी ऊँचाई बढ़ाने का प्रयत्न करता है। प्रतिस्पर्धा स्वस्थ होनी चाहिए जिसमें किसी रेखा को छोटी रेखा सिद्ध करने के लिए बड़ी रेखा के रेखांकन का सिद्धान्त लागू हो। रेखा को लघु सिद्ध करने के लिये उसे मिटाने का प्रयत्न अस्वस्थ प्रतियोगिता है। प्रतिद्वन्दिता में जितने भी दूषण उत्पन्न हुए हैं, उनका कारण अस्वस्थ रीतियों का उपयोग है। व्यक्ति दूसरों के साथ दौड़ लगाते हुए प्रतिद्वन्दी को लंघी मारने का प्रयत्न कर बैठता है। यह अनुचित है। ऐसे व्यक्ति न तो स्वयं का समुचित विकास कर पाते हैं, न ही अपनी ऊँचाई अर्जित कर पाते हैं।

गुरुवार

जैन धर्म का जिनको अध्ययन नहीं है, वे इसके विषय में भ्रामक प्रतिपादन करते हैं।

अधिकांश पश्चिमी विद्वान मानते थे कि जैन धर्म अन्य धर्म की शाखा है। कई ने इसके मूल के रूप में वैदिक संस्कृति को माना जबकि कई बौद्ध धर्म मानते रहे हैं। जैन धर्म के विषय में अब विद्वानों को वास्तविकता का ज्ञान होना प्रारंभ हुआ है। यह उल्लेखनीय है कि अब शोध की प्रवृत्ति जागृत होने पर तीर्थंकर महावीर देव के अलावा तीर्थंकर नेमीनाथजी तथा तीर्थंकर पार्श्वनाथजी को ऐतिहासिक पुरुष माना जाने लगा है।

कितनी विडम्बना है कि जो कृष्णजी को ऐतिहासिक पुरुष स्वीकार करते हैं, वे नेमीनाथजी के सम्बन्ध में विपरीत राय रखते हैं। जैन समाज के लिये महत्वपूर्ण कार्य जैन इतिहास पर शोध को प्रोत्साहित कर वास्तविकता प्रकाश में लाना है।

मांसाहार से ग्लोबल वार्मिंग का अभिशाप

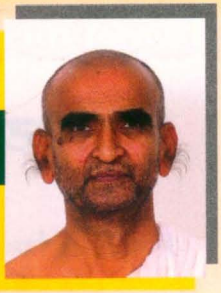

(जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा.)

दुनिया में ऐसे बहुत से कारक हैं, जिससे पर्यावरण का संतुलन प्रतिदिन बिगड़ता ही जा रहा है और जिसमें मानव मुख्य भूमिका निभा रहा है। प्रकृति में मानव के जीविकोपार्जन तथा वृद्धि व विकास के लिए खनिज, वनस्पतियां तथा अनाज उपलब्ध हैं। मानव के सम्पूर्ण विकास के लिए प्रकृति में पर्याप्त मात्रा में अनाज पैदा होता है। प्रकृति ने सभी जीवों के लिए भोजन की व्यवस्था की है परन्तु मानव प्रकृति के नियमों के विरुद्ध जाकर प्राकृतिक पारिस्थितिक तंत्र का संतुलन बिगाड़ने पर तुला हुआ है। वह शुद्ध शाकाहार (अनाज) तथा अन्य प्राकृतिक खाद्य पदार्थों की उपेक्षा कर मांसाहार की ओर अपने कदम तेजी से बढ़ा रहा है। मांसाहार के सेवन से ग्लोबल वार्मिंग के कारण पृथ्वी का तापमान प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है।

मांसाहार स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव डालता है और साथ ही पर्यावरण को भी नुकसान पहुंचा रहा है। जिस प्रकार देश में आर्थिक विकास प्रगति की ओर बढ़ रहा है उसी के साथ मांस व पशुपालन उद्योग तेजी से फल-फूल रहा है। जैसे देखा जाए तो पहले चीन में सुअर का मांस सिर्फ वहाँ का धनिक वर्ग ही सेवन करता था पर आज आधुनिकता बढ़ने के साथ गरीब वर्ग भी इसका प्रतिदिन के भोजन में सेवन करने लगा है जिससे मांस के आयात-निर्यात में बढ़ौत्तरी हुई है। जो राज्य आर्थिक स्तर पर विकसित होते जा रहे हैं उनमें मांस की खपत भी बढ़ती जा रही है। प्राचीन समय में कमजोरी व कुपोषण को दूर करने में जहाँ विभिन्न प्रकार की दालों व फलों का उपयोग किया जाता था उस स्थान पर आज मांस का सेवन किया जा रहा है। कमजोरियों के निदान हेतु मांस को भ्रमपूर्ण प्राथमिकता देने पर तुला हुआ है। सन् 1961 में विश्व में कुछ मांस आपूर्ति लगभग 7 करोड़ टन थी जो 2008 में बढ़कर 28 करोड़ टन अर्थात चौगुनी हो गई है और यह सब विकासशील देशों में तेजी से बढ़ रहा है जो विनाशकारी है मशीनों

के माध्यम से पशुओं के वध व मांसाहार जीवों में तेजी से वृद्धि ने मांस को पहले की तुलना में बढ़ा दिया है। पशुओं से कम समय में अधिक मांस प्राप्त करने के लिए उन्हें अधिक मात्रा में अनाज खिलाया जाता है अर्थात विश्व का एक-तिहाई अनाज पशुओं को खिलाया जाता है ताकि उनका मांस प्राप्त किया जा सके। अनाज को अधिक मात्रा में पशुओं को खिलाने से भुखमरी के शिकार लोगों की संख्या बढ़ती ही जा रही है साथ ही अधिक मात्रा में पशु आहार तैयार करने के लिए विभिन्न प्रकार के रासायनिक कीटनाशकों और उर्वरकों तथा पानी का अधिक उपयोग किया जा रहा है जिससे पर्यावरण को नुकसान तथा पानी के संकट की समस्या बढ़ती ही जा रही है। मांस प्राप्त करने के लिए मानव नए-नए कृत्रिम तरीके अपना रहा है जिससे बर्ड फ्लू, स्वाइनफ्लू तथा मैड काऊ जैसी नई महामारियां और वायरस फैलाकर अपने (स्वयं) तथा दूसरों के जीवन से खिलवाड़ कर रहा है। मांस उत्पादन में खाद्य पदार्थों की बड़े पैमाने पर बर्बादी होती है एक किलो मांस पैदा करने में 7 किलो अनाज या सोयाबीन की आवश्यकता होती है साथ ही भारी मात्रा में पानी की बर्बादी होती है।

अनाज के मांस में बदलने की प्रक्रिया में 90 प्रतिशत प्रोटीन, 99 प्रतिशत कार्बोहाइड्रेट और 100% रेशा नष्ट हो जाता है और कई गुना पानी की बर्बादी हो जाती है। पशुपालन के तरीके से कृषी व भोजन तैयार करने में अत्यधिक जमीन व साधनों-संसाधनों की आवश्यकता होती है और इसके लिये वनों को काटा जाता है वर्तमान में विश्व की दो-तिहाई जमीन पशुपालन व चरागाह के लिए लगा दी गई है। और जैसे-जैसे मांस की खपत में बढ़ौत्तरी होती जाएगी वैसे-वैसे ग्रीनहाउस प्रभाव तेजी से बढ़ता जाएगा। एफएओ के रिसर्च के अनुसार अमेरिका में 70% भूमि को चरागाह में बदल दिया गया है पेड़-पौधों की कमी ने CO_2 (कार्बन डाई आक्साइड) की मात्रा में बढ़ौत्तरी की है क्योंकि पेड़ पौधे CO_2 (कार्बन डाई आक्साइड) को ग्रहण कर मानव को प्राणवायु O_2 (ऑक्सीजन) देते हैं पशुओं के मांस से NO_2 (नाइट्रस ऑक्साइड) गैस निकलती है जो CO_2 की तुलना में 296 गुनी जहरीली होती है। पर्यावरण संरक्षण के संबंध में कहा गया है कि यदि पृथ्वी को प्रदूषण मुक्त और बढ़ते ग्लोबल वार्मिंग तथा जल संकट से बचाना है तो हमें मांसाहार बन्द करना पड़ेगा और इसके लिए आने वाली भावी पीढ़ी को सचेत व जागरूक करना होगा। तभी हमारी पृथ्वी प्रदूषण मुक्त हो पाएगी और हमें शुद्ध वातावरण में खुशहाल जिन्दगी जीने का अवसर मिल सकेगा।

अध्यक्षीय पाती

जैनत्व के चिन्हों का संरक्षण आवश्यक

वाघजीभाई वोरा
राष्ट्रीय अध्यक्ष, श्रीसंघ

जैनत्व जैन धर्म की पहचान है, इसे कमजोर किये जाने पर जैनधर्म का लोप शनैः शनैः इतिहास के पृष्ठों में होता रहेगा। वर्तमान में देश में जैन धर्मावलम्बियों की संख्या कुल आबादी में एक प्रतिशत से भी कम है। जैन धर्म अनुयायियों को चाहे अल्पसंख्यक घोषित कर दिया गया हो लेकिन जैन तीर्थों, जैन चिन्हों, जैन प्रतीकों, जैन संस्कृति के आयामों की सुरक्षा उस कारण बढ़ी नहीं है। जैन धर्म के मानने वालों का स्वाभिमान कई बार प्रश्न चिन्हों को निगलने की स्थिति में आ जाता है।

देखा जाए तो प्रजातंत्र संख्या बल के आधार पर निर्णायक बिन्दु तक पहुंचता है। बीसवीं सदी के मध्य में भारत की संविधान सभा में पांच जैन प्रतिनिधि थे, गुजरात, मध्यप्रदेश जैसे राज्यों में मुख्यमंत्री पद तक जैन पहुंचे (गुजरात में वर्तमान में भी जैन मुख्यमंत्री हैं) केन्द्रीय मंत्रिमण्डल में दो तीन या अधिक जैन मंत्री सम्मिलित रहते थे लेकिन वर्तमान में लोकसभा या राज्यसभा में जैनों का उतना प्रतिनिधित्व नहीं है। इसका कारण स्पष्ट है कि प्रजातंत्र की अनुपम शक्ति का उपयोग जातिवाद के आधार पर समूह संगठित कर होने लगा है। अतएव वोटों का संख्याबल जैनों को विजय से पीछे धकेल देता है।

यही नहीं जैन संस्कृति की पहचान को विलुप्त करने के प्रयास योजनाबद्ध तरीके से चलते रहते हैं। पाठ्य पुस्तकों में जैन तथ्यों के साथ छेड़छाड़ होती रहती है। कहीं जैन धर्म को अन्य धर्म की शाखा बताया जाता है तो कहीं जैन तीर्थंकरों के जीवन चारित्र को विकृत कर दिया जाता है, तीर्थंकर महावीर को जैन धर्म का संस्थापक घोषित कर चौबीस तीर्थंकरों की परम्परा और उसमें भी विशेषतः ऋषभदेवजी, नेमीनाथजी, पार्श्वनाथजी की ऐतिहासिकता को नकार दिया जाता है। जैन धर्म को स्वतंत्र धर्म या जैन संस्कृति को पृथक एवं प्राचीन संस्कृति मानने के कई अजैन इतिहासकार या बुद्धिजीवी तैयार ही नहीं हैं।

इस प्रकार की जटिल परिस्थितियों में जैनत्व के चिन्ह कमजोर नहीं पड़े तथा हम स्वयं या हमारे पूज्य आचार्यगण अथवा श्रमण समुदाय अवसरवाद की हवा में बंध कर हमारे अस्तित्व को खो नहीं देवें, यह सावधानी आवश्यक है।

अध्यक्षीय संदेश

आरूढ़ हों साधना के मार्ग पर

रमेशभाई धरू
राष्ट्रीय अध्यक्ष

इसी मास दिनांक 17 अप्रैल 2019 बुधवार को तीर्थंकर श्री महावीर स्वामी का जन्म कल्याणक उत्सव तथा दिनांक 26 अप्रैल 2019 शुक्रवार को लोकसंत पुण्य सम्राट जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. की द्वितीय पुण्यतिथि का पर्व आ रहा है। परिषद परिवार को इनके आयोजन सम्पूर्ण समाज या त्रिस्तुतिक श्रीसंघ जैसी भी स्थानीय परिस्थितियां हो, उनके साथ सहयोग से अपने स्तर का करना चाहिये।

वर्तमान में वीतराग देव श्री महावीर स्वामी के शासनकाल में हम हैं उन्होंने केवल ज्ञान प्राप्ति के पश्चात् समवसरण में बिराजमान होकर जिन पंच महाव्रतों का उद्घोष किया, वे उनके द्वारा प्रतिपादित धर्म का स्वरूप हैं। इस जन्म कल्याणक दिवस से उनके अवतरण का 2600 वां वर्ष प्रारंभ हो रहा है। इतनी दीर्घ अवधि के पश्चात् भी उनके उपदेशों की वर्तमान सर्वमान्यता तथा विश्व भर में फैले उनके अनुयायियों द्वारा की जाने वाली प्रभावना निःसन्देह उनके वचनामृतों की सर्व व्यापकता की परिचायक हैं। उन्होंने हमारी आत्मा के उद्धार का मार्ग प्रतिपादित किया। हमारे आयोजन उनके जन्म कल्याणक पर्व पर ऐसे हों जो हमारी आत्मा को प्रशस्त कर सकें।

पुण्य सम्राट जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा. का सर्वाधिक उपकार हम सभी पर है। उन्होंने हमें सम्यक्त्व का मार्ग प्रदान किया तथा हमारी साधना पद्धति को सही दिशा दिग्दर्शित की। जिनवाणी के मार्ग को हमारी समझाईश तथा जीवन प्रणाली से सम्बद्ध कर उनने हमें वीतराग प्रदत्त मार्ग का अनुकरण करने की प्रेरणा दी। उनके चिरबिछोह को दो वर्ष व्यतीत होने जा रहे हैं लेकिन उनकी कृपा की वर्षा हम पर निरंतर है। हमें लगता ही नहीं है कि वे हम से दूर अन्य लोक के वासी बन गये हैं। उनके उपदेश तथा उनकी भावभंगिमाएं हमारे जीवन का अंग बन चुकी हैं। हम उनको अपने से पृथक नहीं कर सकते। उन्होंने जो मार्ग आलोकित किया तथा श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद को सशक्त-सफल-सारस्वत बनाकर हमें जो अनमोल रत्न प्रदान किया उनकी रक्षा करना हमारा पावन कर्त्तव्य है। हम निरंतर उनकी दया की वांछा करते रहें।

दोनों पर्व दिवसों पर सुव्यवस्थित आयोजन के लिये दिग्दर्शन आपको प्राप्त होगा, आशा है हम अपने जीवन को साधना के मार्ग पर आरूढ़ करने का पराक्रम करते रहेंगे।

श्रेणिक तथा अभयकुमार

(मुनिराज डॉ. श्री सिद्धरत्नविजयजी म.सा.)

अभयकुमार ने ग्रामवासी ब्राह्मणों को सलाह दी कि वे राजा के पास जाकर राजा को कहें कि 'महाराज आपकी आज्ञा का पालन होगा। हम बालू की रस्सी बनाकर आपको शीघ्र ही भेज देंगे। पर आप हमें बालू की रस्सी का एक टुकड़ा नमूने के रूप में दिला दीजिए। जिसके आधार पर हम बालू की वैसी ही रस्सी बनाकर आपको भेंट कर देंगे।' और अगर राजा जो भी उत्तर दे आप लोग विनम्रता पूर्वक महाराजा से कहना कि जो रस्सी आपके राजगृह में नहीं है ऐसी अनमोल वस्तु हम गरीब आपको कहाँ से बनाकर देंगे ? हम तो आपकी गरीब प्रजा हैं। राजदरबार में पहुंचकर और जैसा राजकुमार ने कहा था वही महाराज से कह दिया।

गांववालों की बात सुनकर महाराज चकित हो गये और कुछ कहे बिना ब्राह्मणों को घर भेज दिया। गांव के लोगों ने राहत की स्वांस ली। अगले दिन महाराजा ने गांववालों को परेशान करने के लिए फिर से एक योजना बनाई और अपने सैनिकों को भेजकर गांव वालों से कहा कि 'तुम्हारे गाँव में स्वच्छ और मीठे पानी का जो कुंआ है उसे हमारे यहाँ भेज दीजिए।' यह सुनकर ब्राह्मणों के पैरों के नीचे से मानों जमीन खिसक गई हो। वे सोच रहे थे कि ये हो क्या रहा है एक परेशानी जाती ही नहीं कि दूसरी आ जाती है। सभी ब्राह्मण इकट्ठा हुए और अभयकुमार के पास गये और उनसे सारी बात बताई। राजकुमार अभय महाराज की आज्ञा सुनकर हँस पड़े। और थोड़ा सोचकर उनकी समस्या का समाधान किया और कहा कि कल दरबार जाकर जो समाधान मैंने बतलाया है वही राजा के समक्ष प्रस्तुत कर देना दूसरे दिन कुछ ब्राह्मण राजदरबार गये और महाराज की जय-जयकार की और विनम्रता के साथ कहा कि महाराज आपने हमारे गाँव का कुआ मंगवाकर हम गरीब प्रजा पर जो उपकार किया है उसके लिये हम आपके आभारी हैं। पर आपको तो ज्ञात ही होगा कि देहाती गाँव के कुएं शहर के माहौल से अनभिज्ञ हैं और अकेले शहर आने से डरते हैं इसलिए आप राजदरबार से एक कुंआ गांव भिजवा दीजिए उसके साथ गाँव

का कुंआ खुशी-खुशी पहुंच जाएगा।

ब्राह्मणों का उत्तर सुनकर राजा को कुछ संदेह हुआ कि ये ब्रह्माण तो इतने प्रभावशाली (तीक्ष्णबुद्धि) नहीं दिखते तो फिर इनके उत्तर इतने सटीक कैसे आ रहे हैं कौन है, जो इनकी सहायता कर रहा है। और मेरे सारे प्रश्नों का समाधान कर रहा है। ब्राह्मणों के जाने के बाद राजा ने कुछ अपने सैनिकों को बुलाकर कहा- 'कि तुम लोग नन्दीग्राम जाकर पता लगाओ कि कौन व्यक्ति है, जो मेरी एक भी चाल सफल नहीं होने दे रहा है और ब्राह्मणों की सहायता कर रहा है?' गुप्तचर नन्दीग्राम गये। वहाँ जाकर उन्होंने देखा कि एक छोटा परदेशी कुमार है जो बहुत तेज और विलक्षण बुद्धि का धनी है और वही सब ब्राह्मणों की सहायता कर रहा है। बालक के बारे में पता लगाते हुए सभी गुप्तचर गाँव के बाहर उद्यान में गये। जहाँ वह कुमार अन्य बालकों के साथ जामुन के पेड़ पर चढ़कर जामुन खा रहे थे। गुप्तचर पेड़ के नीचे जाकर खड़े हो गये। जब कुमार की नजर उन पर पड़ी तो कुमार ने कहा कि 'जामुन खाओगे क्या ?' तब गुप्तचरों ने कहा कि 'हाँ जरूर खायेंगे।' फिर कुमार ने कहा कि ठण्डे खाओगे कि गरम ? पहले तो गुप्तचरों ने कुछ सोचा फिर बोले कि गरमागरम जामुन खिलाओ । कुमार ने कुछ पके-पके जामुन तोड़कर हाथों से थोड़ा मसलकर उन्हें मिट्टी में फेक दिया। (क्रमशः)

श्री पाल-रास और जीवन-चरित्र

श्रीपाल-रास और जीवन-चरित्र-लेखक व सम्पादक जैनाचार्य श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म. प्रकाशक तथा प्राप्ति स्थान-दिव्य संदेश प्रकाशक ठि. सुरेन्द्र जैन, मरीन लाईन्स (ई) मुंबई-400002, मो. 9892069330, टेलि. 022-40020120, पृष्ठसंख्या-210, छपाई-सफाई-पक्कीबाइडिंग, बहुरंगी कव्हर, कागज-ठीक । मूल्य 160 रूपए द्वितीय आवृत्ति ।

श्री नवपद ओली के प्रसंग पर नौ आयंबिल के साथ श्रीपाल और मयणा सुन्दरी के रास का वाचन किया जाता है । इस रास के रचयिता महोपाध्यायगण श्री विनयविजयजी म. तथा श्री यशोविजयजी म. है । आचार्य विजय रत्नसूरीश्वरजी म. ने इसका हिन्दी सम्पादन तथा आलेखन किया है । पुस्तक में रास के हिन्दी में आलेखन के साथ ही नवपद आराधना विधि, नवपद वंदना, नवपद ध्यान तथा रास मूलतः भी संग्रहित हैं । हिन्दी में जैन साहित्य का अभाव है, उसकी पूर्ति यह ग्रंथ करता है । आशा है यह न केवल श्री नवपद आराधकों का मार्गदर्शन करेगा अपितु उनकी श्रीनवपद में निष्ठा भी सुदृढ करने की दिशा में अपना महत्वपूर्ण योगदान देगा - सुरेन्द्र लोढा

गतांक के आगे

साध्वी श्री रूद्रसोमा
(वीर की छठी शती)

संशोधक–मुनि श्री चारित्ररत्नविजयजी म.सा.

माता रूद्रसोमा के अपने संन्यासी जीवन और प्रेरणा से संतुष्ट होकर राजपुरोहित सोमदेव तथा उनके परिवार के अन्य सदस्यों ने आचार्य रक्षित के पास जाकर अपने तथा परिवार के सदस्यों के कल्याण हेतु पंचमहावृत के समान संन्यासी जीवन की शिक्षा दीक्षा ली।

आर्या रूद्रसोमा ने अपने जीवन में कठोर तप करके तथा अनेक वर्षों तक सन्यासी जीवन में लोगों की सेवा करते हुए अपने जीवन को सफल बनाया है। आर्या रूद्रसोमा के गृहस्थ जीवन और संन्यासी जीवन दोनों ही मानवमात्र के लिये प्रेरणादायक रहे हैं क्योंकि गृहस्थ जीवन में उन्होंने अपने पति, पुत्रों व परिवार वालों की सेवा की तो संन्यासी जीवन में प्राणीमात्र की सेवा करते हुए पुण्य कमाया। उन्होंने अपने वंश (कुल) के बारे में न सोचकर लोकहित व लोककल्याण को महत्व दिया वे मानती थीं कि अगर जीवन को सफल बनाना है तो गरीब और असहाय लोगों की सेवा करो पशु–पक्षियों की सेवा करो तभी अपना (स्वयं) उद्धार होना तय है। जो उच्चकोटी का ज्ञान रूद्रसोमा के मन में भरा पड़ा था उन्होंने उसका सदुपयोग किया और अपने व्यवहारिक जीवन में ज्ञान का उपयोग कर अपने आप को सिद्ध किया। अपने वंश को आगे न बढ़ाकर रूद्रसोमा ने अपने दोनों पुत्रों आर्य रक्षित और फल्गुरक्षित को संन्यासी मार्ग पर अग्रसर किया। रूद्रसोमा के कठोर तप और बलिदान का फल ही था कि बालक रक्षित आगे चलकर युग प्रवर्तक, युग सुधाकर बना और लोगों को आध्यात्म और मानवता की शिक्षा दी।

रूद्रसोमा के अपने इसी बलिदान और पुत्रों को संन्यासी जीवन व्यतीत करने के कारण उनका वंश आगे नहीं बढ़ सका। पर इस कीर्तिमान व गौरवपूर्ण कार्य के कारण रूद्रसोमा का नाम संसार में अमर हो गया।

रूद्रसोमा के समय से आज तक अनेक महिलाओं ने पुत्रों को जन्म देकर अपने वंशों को क्रमानुगत कई वर्षों तक चलाया पर मानव समाज आज उनमें से किसी को भी नहीं जानता, किन्तु रूद्रसोमा के अपने पुत्रों का लोकहित में बलिदान तथा सन्यासी जीवन में एक प्रकाश की ज्योती की तरह स्वयं जलकर समाज को प्रवज्ज्वलित करने के कारण संसार में रूद्रसोमा का नाम आज भी उसी श्रद्धा और पवित्रता के साथ लिया जाता है ऐसी दिव्य नारी शक्ति को संसार शत्–शत् नमन करता है।

भाण्डवपुर एक संस्मरण

यह पूर्णतः प्रगट है कि शब्द-शब्द में मधुर-सुवास होती है, शब्द और उसका अर्थ भी होता है । शब्द एक होता है, अर्थ अनेक होते हैं। मन्दिर-साहित्य पर दृष्टिपात होता है, तत्काल एक ही शब्द अनेक अर्थो और आशयों में प्रतिबिम्बित होकर हमारे सन्मुख आता है। उदाहरण स्वरुप प्रासाद अथवा मन्दिर शब्द के सन्दर्भ में विचार-विमर्श कर लेते हैं- उत्तर भारत से लेकर दक्षिण तक पद-यात्रा करने पर विदित हो जाता है, कि मन्दिर शब्द एक ऐसा शब्द है जो छोटे से छोटे ग्राम और बड़े से बड़े नगर में अव्याबाध रूप से प्रविष्ट हो चुका है ।

शिव शब्द इतना सहज और सरल है कि श्मशान भूमि से लेकर वन-प्रान्तर तक उस का प्रवेश है । जिस दिन मनुष्य के अन्तर-मानस में देवत्व जागा, उसी दिन से शिव और ऋषभ का पदार्पण संभव हुआ । शिवजी एवं ऋषभजी अन्तरिक्ष से कदापि अवतरित नहीं हुए है, किन्तु मनुष्य के मनोभूमि पर अंकुरित हुए हैं।

इतना सा शब्द-चर्वण करने के अनन्तर यह ध्वनित होता है कि शब्द एक है और अर्थ अनेक है । जैसा कि- जल-मन्दिर, विद्या-मन्दिर, गुरु-मन्दिर, जहाज-मन्दिर, समाधि-मन्दिर, इत्यादि-इत्यादि । धर्म और दर्शन की शब्दावली में हम न जाकर सीधे-सीधे यह कहना चाहते हैं कि मनुष्य के मन में शिवत्व जागा है, अर्हत् तत्त्व जाग उठा है, उसी क्षण से सम्यक्त्व का सूर्योदय हुआ है, सूर्य स्वयं प्रकाशित है किन्तु वह बादलों को जन्म देता है, वे बादल उसी

सूर्य को आच्छादित कर देते हैं और तत्काल लगता है अब सूर्य का अस्तित्व कहीं आया है किन्तु अगले ही क्षण में सूर्य उन बादल दल को छिन्न-भिन्न कर देता है। यही यथार्थ कथन आत्मा के संदर्भ में पूर्णतः घटित हो जाता है।

क्रान्ति और कान्ति के आलोक पुरुष विश्व बन्ध जैनाचार्य राजेन्द्र सूरि की पट्ट-परम्परा के दीप्तिमान् सूर्य आचार्यश्री जयन्तसेन सूरिजी और विश्ववन्द्य उपाध्याय श्री पुष्कर मुनिजी का मधुर-मिलन सर्वप्रथम जोधपुर में संभव हो सका। उसके अनन्तर राजस्थान और मध्यप्रदेश के अंचलों में बहुधा होता रहा। मेरा भी आप श्री से अनेक प्रसंगों पर चाक्षुष प्रत्यक्ष भी होता रहा है। मेरा यह परम सौभाग्य है कि मुझे आपश्री जी द्वारा आलिखित कतिपय पुस्तकों पर प्रस्तावना-प्रलेखन का स्वर्णिम अवसर भी प्राप्त हुआ इतना ही नहीं, आपश्री जी के सन्त-परिवार के संग भी वार्ता-विचारण होती रही है।

स्वर्णे सौरभम् की यह सदुक्ति इसी वर्ष भाण्डवपुर में शब्दशः घटित है कि पूर्व-सम्पर्क और स्नेह पूर्ण संमिलन के स्वरूप हमारे होली चातुर्मास की अवस्थिति यहीं हुई जिसकी यह मधुर फलश्रुति है कि प्रस्तुत पावन भूमि पर जैनाचार्य जयरत्न सूरीश्वरजी श्रमण-समुदाय के साथ पुनः संमिलन का अवसर अपने आपमें एक वाचासगोचर है, इस प्रचुर -प्राचीन स्थल की पहचान राष्ट्रीय -राजमार्ग पर हो र ही है। यह वह संस्मरणीय पुण्य-क्षेत्र है कि जहाँ स्वाध्याय और साहित्य की दृष्टि से अनुकूल-अवकाश है। साधना के दृष्टिकोण से भी यह स्थली हमारे अन्तर्जगत् के प्रदूषण को जड़मूल से मिलाती है और पर्यावरण को वृद्धिगत करने में सर्वथा एवं सर्वदा सक्षम बने यही मंगल-प्रभात की बेला में मंगल कामना।

उपाध्याय रमेशमुनि शास्त्री

भाण्डवपुर तीर्थ- दि.9 मार्च 2019

प्रांसगिकम्

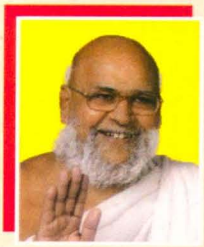

मेरे गुरु थे "सर्वगुणनिपुण"

(पुण्य सम्राट गुरुदेवश्री के शिष्यरत्न मुनि श्री निपुणरत्नविजय)

पेपराल से भांडवपुर...
पूनमचंद से पुण्यसम्राट्...

इस विराट जीवनयात्रा के कई अद्भूत, अजोड़, अकल्पनीय, अविस्मरणीय, अगाध, अक्षय, अनुपम पहलू है । जिसके साक्षी बनने का सौभाग्य लाखों गुरुभक्तों को मिला है । इस यात्रा का मंगलाचरण गुजरात के एक छोटे से गांव पेपराल से धरु कुलवंशी श्रेष्ठीवर्य श्री स्वरुपचंदजी धरु की धर्मोपासिका रत्नकुक्षिणी सुश्राविका पार्वतीबाई की कुक्षि से हुआ था । जिस यात्रा ने 81 वर्ष में अनेकानेक मुकाम हासिल किये । भव्य इतिहासों का सृजन किया, अनेक भव्यात्माओं का उद्धार किया, सदा अमर रहने वाले शासन प्रभावक कार्यों को सम्पन्न किया । इस यात्रा के **अग्रतःसर** थे समर्थ साधक, विरल व्यक्तित्व, निस्पृह नेतृत्व, साधना शिखर, गुणगंभीर, सरल स्वभावी, दीर्घदृष्टा, तत्व रसिक, ज्ञान समुद्र, सहज संवेगी, देशना निपुण, मधुर वचस्वी, क्षमाधन, तीर्थ प्रणेता, परिषद विकासक, यशस्वीनायक, धैर्यताधारक, सक्षम निर्णायक, सफल सन्मार्ग दर्शक, दुःखनिवारक, अप्रमत्त आराधक, नवकार पुरुष, दयावान, क्रियाशील, भवोदधि तारक, शासन्नोयक, संघ एकता शिल्पी, सकशलेखक, प्रवचनकुशल, गीतार्थ गणनायक, समयज्ञ, साहित्य मनिषी, प्रतिष्ठा शिरोमणी, संघ हितचिन्तक, राष्ट्रसंत, लोकसंत,पुण्यसम्राट गुरुदेव श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा., जिन्हें गुरु के रुप में पाकर हमारा जीवन धन्य-धन्य हो गया । उसी के जीवन का अर्थ है, जिनके गुरु 'समर्थ' हैं । ऐसे समर्थ गुरु की प्राप्ति ही जीवन का सद्भाग्य, सौभाग्य, अहोभाग्य, साफल्य, सार्थक्य है ।

पूज्यपाद श्री की अनेक उपलब्धियों से भरी जीवन यात्रा को लाखों आंखों ने निहारा है । एक ही व्यक्तित्व में इतना सामर्थ्य बिना दिव्य शक्ति संभव नही । पू. गुरुदेव श्री परमात्मा के परम प्रेमी थे, साथ ही पूर्ण समर्पित गुरु चरणोपासक भी थे । गुरु सेवा में सदा रत् रहकर गुरु कृपा के सच्चे अधिकारी बने, यहाँ तक कि उनकी

देहाकृति भी गुरु समान ही थी, मानो गुरु ही शिष्य में समाविष्ट हो गये हों।

पू. गुरुदेवश्री ने सुविशुद्ध आचार-विचारों का पालन करते हुए संघ-शासन-गुरुगच्छ के महीमासभर अनेक प्रभावक कार्यों को अपने श्रेष्ठ मार्गदर्शन एवं प्रभावी सानिध्य प्रदान कर सम्पन्न किये। मैंने भी पूज्यश्री के ज्ञानमय-गुणमय-वैराग्यमय जीवन को खूब समीपता से देखा है। वे हर गुणों से पूर्ण थे, सम्पूर्ण थे, परिपूर्ण थे, In Short कहूं तो निपुण थे।

* श्री धर्माचार्य बहुमान कुलकम् में लिखा है -

गुरुणो नाणाइजुया, सयलभुवणमज्झंमि।

ज्ञानादि गुणों से युक्त गुरु सकल पृथ्वी में पूजनीय है।

* श्री यतिलक्षण समुच्चय में लिखा है-

गुणरागी य पवद्दइ, गुणरयणनिहीण पारत्तंतंमि।

गुणरागी ऐसा भावचारित्री सभी कार्यो में गुणरत्नों के निधि समान गुरु के पारतंत्र्य अनुसार करता है।

* **गुरुगुणरयणेहि मंडीयशरीरा-(संथारापोरसि)**
* **गुरु के गुण का नही पार लहुं-(श्री राजेन्द्रसूरि अष्टप्रकारी पूजा)**
* **आत्मतत्त्वप्रकाशेन, तावद्सेव्यो गुरुत्तमः (ज्ञानसार)**

ऐसे अनेक शास्त्रों में गुरु महीमा का अद्भूत वर्णन है।

चलो, गुणनिधान गुरुदेव श्री के गुणमय जीवन का दर्शन कर धन्य बनें।

* लेखनकला हो या क्रियारुचि * विहारबल हो या विचारबल * स्वाध्याय रूचि हो या क्रियारूचि * अनुभव ज्ञान हो या चिन्तन * निर्णय क्षमता हो या कार्य दक्षता * दूरदर्शिता हो या वचनसिद्धता * गंभीरता हो या सरलता * वाग्कला हो योगक्षेम कला * अप्रमत्तता हो या समयज्ञत्ता * विनय सम्पन्नता हो या आचार निष्ठा * साहित्य सृजन हो या काव्य सृजन * प्रभावकता हो या सादगीपूर्णता * निर्भयता, निर्मलता, निस्पृहता, सहनशीलता, समभाव इन सभी क्रियाओं में आप सिद्ध थे, प्रसिद्ध थे, माहिर थे, जगजाहिर थे।

हम भी गुरुदेवश्री के गुणों का अनुशरण कर हमारे जीवन में उन्हें जीवंत रखेंगे.... यही भावना...

।। शास्त्रवचनम् ।।

सद्गुरुः किंस्वरुपम् ?

(पुण्यसम्राट ज्ञानजनम् पर्व-पाटण)

* **देशको गुरुरुच्यते (पंचाशक प्रकरण-टीका)**

जो धर्म के ज्ञाता हो, धर्म का आचरण करने वाले हो, हमेशा धर्म में तत्पर हो, एवं जीवों को धर्मशास्त्रों का सत्य उपदेश देने वाले 'गुरु' कहे जाते हैं।

* **गुरवो मताः (योगशास्त्र)**

जो पंच महाव्रतधारी हो, धीर स्वभावी हो, भिक्षा द्वारा जीवन निर्वाह करने वाले हो, समभाव में स्थित हो, धर्म के उपदेशक हो, उसे 'गुरु' कहा जाता है।

* **एरिसा गुरुणो (संबोध सित्तरी)**

पांच इन्द्रियों के दमन में तत्पर, जिन्होने जिनकथित सिद्धान्तों में से परमार्थ ग्रहण किया हो, ऐसे पंच समिति, तीन गुप्ति से गुप्त 'गुरु' की शरण प्राप्त हो।

* **तेऽहं गुरुं सययं पूययामि (दशवै कालिक सूत्र)**

लज्जा, दया, संयम, ब्रह्मचर्य, कल्याण के भागी जीव के लिये विशुद्ध स्थान समान ऐसे गुरु, जो **हमेशा** मेरा अनुशासन करते हैं। ऐसे 'गुरु' की मैं **हमेशा** पूजा करता हूँ।

* **गुरुरित्यभिधीयते (द्वयोपनिषद्)**

'गु' अर्थात् अंधकार, 'रु' अर्थात् अंधकार को रोकने वाले, ऐसे जो अज्ञान अंधकार को रोक दे, उसे 'गुरु' कहते है।

* **सद्गतिर्गुरुः (अर्हद गीता)**

'गुरु आंख है', गुरु दीपक है, गुरु सूर्य-चन्द्र है, गुरु देव है, गुरु मार्ग है, गुरु दिशा है, गुरु सद्गति है।

* **संवेग रंग तरंग झीले, मार्ग शुद्ध कहे मुधा।**
  तेहनी सेवा कीजिए, जिम पीजिए समता सुधा ।।
  (समकित सज्झाय)

* **ज्ञान प्रकाश करे, मोह तिमिर हरे, जेहने सद्गुरु सूर।**
  (सवासो गाथा स्तवन)

* **'सद्गुरु' शुद्ध मारग ओलवावे, भूले को पंथ बतावेजी....**
  (श्री राजेन्द्र सूरि अष्टप्रकारी पूजा)

कालचक्र तथा उसके आरे

(मुनिराज श्री प्रशमसेनविजयजी म.)

श्री पद्मप्रभ भगवान

किस आसन से मोक्ष गये	कायोत्सर्ग	308	मोक्ष गये तब उनके साथ मोक्ष गये साधु
प्रथम आर्या	रति	दूसरा देवलोक	पिता की गति
माता की गति	मोक्ष	9 हजार कोटि सागरोपम	पूर्व तीर्थंकर मोक्ष जाने के कितने समय बाद मोक्ष
सम्यकत्व पश्चात के भव	3 भव	मुनि पिहिताश्रव	पूर्व तीसरे भव के गुरु
निर्वाण राशि	कन्या	चित्रा	निर्वाण नक्षत्र
निर्वाण समय	प्रथम प्रहर	30 लाख पूर्व	आयु प्रमाण
उत्कृष्ट तप	8 मास	38 गाऊ	समवसरण की ऊँचाई

तीर्थंकर का नाम	श्री सुपार्श्व नाथ	भाद्रवा वदी 8	च्यवन तिथि
पिता का नाम	प्रतिष्ठ राजा	पृथ्वी	माता का नाम
जन्म तिथि	जेठ सदी 12	वाराणसी	जन्म स्थान
जन्म देश	काशी	छठा ग्रैवेयक	किस देवलोक से आये
जन्म नक्षत्र	विशाखा	तुला	जन्म राशि
लंछन	साथिया	सुवर्ण	वर्ण
गण–नाम	राक्षस	मृग	योनि नाम
जिस कुल में जन्म	इक्ष्वाकु वंश	काश्यप	गौत्र

सम्राट श्री संप्रति

(सुरेन्द्र गंग)

क्या आप जानते हैं कि इतिहास में एक मात्र सम्राट जो भगवान महावीर के निर्वाण के बाद 244 से 293 वर्ष तक 40 वर्ष का इनका राज्य काल रहा जो मात्र एक माह की उम्र में राज्य अभिषेक हुआ। युवा अवस्था में आर्य श्री सुहास्ति सूरिजी म.सा. से प्रतिबोध प्राप्त कर व्रतधारी श्रावक बने उन्होंने चीन, सिलेज, अफगानिस्तान, बलुचिस्तान, नेपाल, भूटान, तुर्की में भी जैन धर्म का प्रचार-प्रसार किया।

जिनके शासन काल में 1 करोड़ 25 लाख जिन प्रतिमा, 1 करोड़ 20 लाख मंदिर (नूतन जिनालय), 1300 जिर्णोद्धार एवं 600 दान शाला बनाई। उन्होंने उज्जैन में श्रमण भगवंतों का सम्मेलन आयोजित कर उनका छोटे गांव व आचार्य देश में विहार कर जैन धर्म का प्रचार-प्रसार किया।

परमार्हत् श्री कुमार पाल महाराज

कलिकाल सर्वज्ञ श्री हेमचन्द्राचार्यजी म.सा. से प्रतिबोध पाकर इन्होंने श्रावक जीवन के बारह व्रत को स्वीकार किया था 18 देशों के राज्य वहिवर जैसे सांसारिक एवं व्यावहारिक कार्यों में व्यस्त रहते हुए भी उनका जीवन धर्म एवं नीति से सुवासित था उनकी सेवा में 18 लाख थल सैनिक, 11 लाख घोड़े, 11 हजार हाथी, 50 हजार रथ थे इन सबको पानी छानकर पिलाते थे। उन्होंने 1440 नूतन जिनालयों का निर्माण 16 हजार जिर्णोद्धार, 36 हजार जिन प्रतिमा, 600 लहियो द्वारा आगम लेखन कराया। जीनशासन काल साधुत्व प्राप्त करने के लिए नित्य प्रभुजी के सन्मुख आंसु बहाते थे।

बंधु युगल वस्तुपाल-तेजपाल

1 लाख 5 हजार जिन प्रतिमाजी, 1300 जिनालय 3202 जिर्णोद्धार, 84 सरोवर, 184 पोषध शाला, 882 वैधशाला, 609 तपस्वी निवास, 400 पानी की प्याऊ, 600 धर्मशाला, 600 सदाव्रत, 36 लाख द्रव ज्ञान भंडार, 18 करोड़ 16 लाख गिरनार तीर्थ में 12 करोड़ 53 लाख आबु तीर्थ में सदव्यय, 27 आचार्य पदवी महोत्सव, 12 श्री शंत्रुजय तीर्थ, छरिपालित संघ निकाले।

- मधुकर संस्कार ज्ञानायातन से साभार

दिव्य प्रकाशित श्रमण भगवान
महावीर जीवन के दो प्रसंग

(शान्तिलाल सगरावत, मंदसौर)

शुभाशुभ कार्य का शुभाशुभ फल –

श्री श्रमण भगवान महावीर पहले देवानंदा नामक ब्राह्मणी के गर्भ में आए थे एवं बाद में सौधर्मेन्द्र के आदेश से हरिणैगमेशी देव के द्वारा यह गर्भ त्रिशला माता के गर्भ में संक्रमित किया गया था, उसके पश्चात् माता त्रिशला ने वर्द्धमान को जन्म दिया।

गर्भ संक्रमित करने की प्रक्रिया 'सब जीवों के अपने कर्म (भाग्य) के अनुसार, देवों को भी कार्य करने की बुद्धि उत्पन्न होती है के मूल सिद्धान्त या व्यवस्थाओं के कारण होती है। कर्म के उपरांत करने की शक्ति देवों में भी नहीं है। यहाँ भी पूर्व भव की घटित एक घटना से ऐसा संभव हुआ। त्रिशलारानी का जीव देवरानी था और देवानंदा का जीव जेठानी था। दोनों एक ही परिवार में निवास करती थी। लेकिन कषाय महान् बलवान है। यदि जीवन भला करने की चाहना करें तो भी कषाय बुरा कर डालते हैं। लोभ वश जेठानी ने देवरानी का रत्नकरंडक चुरा लिया। देवरानी के खूब खोजबीन करने पर भी नहीं मिलने पर काफी बोलचाल हुई। इस सब के बावजूद भी जेठानी ने रत्नकरंडक नहीं लौटाया। इसके कारण कर्मबंध गया। वह कर्म देवानन्दा के उदय में आया और वह त्रिशला देवरानी की देनदार हो गई। इस कारण इन्द्र को भी विचार आया कि त्रिशलारानी को ही पुत्र रत्न दिलवाऊँ । जो जीव शुभाशुभ कर्म करेगा उस जीव को शुभाशुभ फल मिलता ही है। इसी वजह से त्रिशलारानी के गर्भ में पुत्र रत्न वर्द्धमान संक्रमित हुए।

प्रश्न यह उठता है कि भगवान को गर्भ परावर्तन कराते किसने देखा ? स्वयं श्रमण भगवान महावीर ने बताया कि देवानंदा मेरी माता है, जिनके गर्भ में मैं बंयासी दिन रहा और त्रिशला माता की कुख से मेरा जन्म हुआ ।

घटना भगवान महावीर को केवल ज्ञान होने के बाद की है। प्रभु अपने दिव्य प्रकाश से आम लोगों के अन्धकार को भगा रहे थे। इसी बीच एक दिन ऋषभदत्त ब्राह्मण अपनी भार्या देवानन्दा के साथ प्रभु दर्शन को आये। जब देवानंदा ने प्रभु महावीर को देखा तो उनकी छाती से दूध बहने लगा। रोम-रोम पुलकित हो उठा। वह एक टक वात्सल्य बिखेरते अंतर्मन से प्रभु को देख रही थी।

तब श्री गौतम गणधर ने प्रभु से पूछा- 'प्रभुजी यह औरत आपको टकटकी लगाकर क्यों देख रही है और इसके स्तन से दूध क्यों बह रहा है ?

प्रभु महावीर ने उत्तर दिया- हे गौतम ... ! यह ब्राह्मण स्त्री देवानंदा मेरी माता है मैं 82 दिनों तक इनके गर्भ में रहा, मैं इनका पुत्र हूँ इसीलिये मेरे प्रति वात्सल्य भाव

छलक रहा है। 82 दिनों के बाद माता त्रिशला की कुख से मेरा जन्म हुआ। इस घटना का वर्णन भगवती सूत्र नामक पाँचवें अंग सूत्र में है।

जलते जान जलना –

एक दिन जमाली ने प्रभु वर्धमान से पूछा– यदि आपकी आज्ञा हो तो मैं अपने शिष्यों के साथ स्वतन्त्र विहार कर लोगों को धर्मोपदेश दूँ। कोई अनिष्ट होने का ज्ञान होने से प्रभु मौन रहे। कोई प्रत्युत्तर नहीं देने से जमाली समझा प्रभु सहमत हैं और वे शिष्यों के साथ विचरने लगे।

एक बार जमाली मुनि अचानक बीमार हो गये । आराम करने के लिये शिष्यों से उन्होंने संथारा– बिस्तर तैयार करने को कहा। थोड़ी देर बाद जमाली मुनि ने शिष्यों से पूछा–क्या संथारा तैयार हो गया है ? उस समय शिष्य संथारा कर ही रहे थे पर उन्होंने उत्तर दिया – संथारा तैयार हो गया है।

जमाली मुनि ने देखा कि अभी संथारा तैयार होने की प्रक्रिया चल रही है अतः वे शिष्यों के संथारा तैयार होने की बात पर नाराज हो गये और बोले कहाँ हो गया है, संथारा तैयार ? तब शिष्यों ने कहा– भगवान महावीर की शिक्षाओं के अनुसार 'जो कार्य किया जा रहा है, उसे कर दिया गया है ही मानने की बात कही गई है उनका यही उपदेश है।

यह सुन जमाली का मन विद्रोह कर उठा और इस सिद्धान्त को मानने से मना कर दिया। इसके लिये आगमों में शब्द आए हैं– 'कड़ मने कडे' एवं 'कड़े-कड़े' यह मुख्य बिन्दु है, जिसने प्रभु वीर और मुनि जमाली को भिन्न कर दिया। जमाली मुनि ने सर्वज्ञता हासिल करने की बात कहना शुरू कर दिया। इस पर प्रभु महावीर ने उसे संघ से निष्कासित कर दिया।

विडम्बना है कि प्रभु वर्द्धमान की पुत्री प्रियदर्शना ने भी अपने सर्वज्ञ पिताश्री को छोड़कर पति जमाली मुनि के मार्ग का अनुसरण करना स्वीकारा और पिताश्री से सम्बन्ध तोड़ लिये। अंततः एक दिन एक घटना से प्रियदर्शना को अपनी त्रुटि का ज्ञान हो गया।

प्रियदर्शना जिस कुम्हार के यहाँ ठहरी थीं, उस कुम्हार ने जान बुझकर उस पर आग की चिन्दगारी फैंक दी। इससे उसकी साड़ी जलने लगी। इस पर प्रियदर्शना ने कुम्हार से कहा– अरे ! तुम यह क्या कर रहे हो ? तुम्हारी असावधानी से तो मेरी साड़ी जल गई। तब कुम्हार बेला– तुम असत्य को बोल रही हो ? तुम्हारे सिद्धान्त के अनुसार तो सम्पूर्ण कपड़े के जलने पर ही कहना चाहिये कि कपड़ा जल गया है, जब कि प्रभु महावीर का तो उपदेश है–''जलते जान जलना है'' याने कपड़े को जलते जानने पर भी जलना कहा जाता है।

प्रियदर्शना को उसी वक्त अपनी त्रुटि का अहसास हो गया और वह अपने पति जमाली का असत्य पथ छोड़कर श्रमण भगवान के पास आकर प्रायश्चित लेकर पुनः मूल संघ में शामिल हो गई।

मुनि जमाली तो अपने सिद्धान्त पर ही अड़ा रहा और अपने पापों का प्रायश्चित किये बिना ही स्वर्गवासी हो गया। उसके अनुयायियों के अभाव में उसके सिद्धान्त उसी के साथ चले गये।

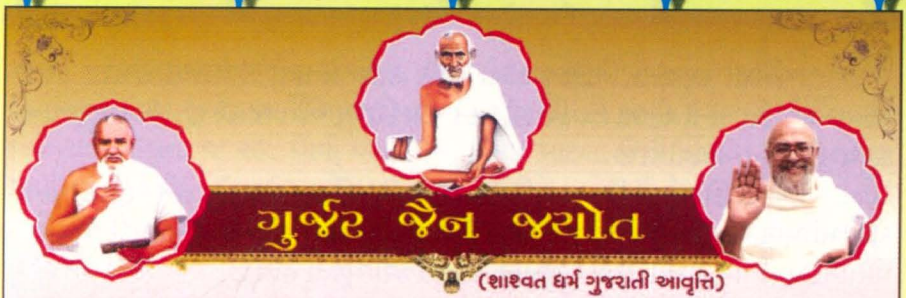

સંપાદક : સુરેશ સંઘવી
ફ્લેટ નં.બી-૧૦૩, બોરસલ્લી એપાર્ટમેન્ટ, ત્રીજે માળ,
ખાનપુર જી.પી.ઓ. નજીક, ખાનપુર, અમદાવાદ-૧. મો. : ૯૭૨૪૫૭૧૦૩૯

ભગવાન મહાવીરે શું કહ્યું ?

લેખક : આચાર્ય શ્રી જયંતસેનસૂરિ 'મધુકર'

અકિંચનતાનો અનુભવ

तण्हा हया जस्स न होइ लोहे । लोहो हओ जस्स न किंचणाइ ।।

(જેનામાં લોભ નથી હોતો, તેની તૃષ્ણા નષ્ટ થઈ જાય છે, અને જે અકિંચન છે, તેનો લોભ નષ્ટ થઈ જાય છે.)

''કિંચનનો અર્થ છે કંઈક. જે સમજે છે કે આ દુનિયામાં કાંઈ નથી, જે વિચારે છે કે જન્મતી વખતે આપણે સાથે કોઈ વસ્તુ નથી લાવ્યા, અને મરતી વખતે પણ સાથે કાંઈ આવવાનું નથી. સમસ્ત ધન, ખેતર, મકાન વગેરે અહીં જ પડ્યું રહેવાનું છે - જે જાણે છે કે આત્મા સિવાયની બધી વસ્તુઓ જડ છે ક્ષણ ભંગુર છે, તે જ અકિંચન છે.''

એવી વ્યક્તિ લોભી થઈ શકતી નથી, અર્થાત્ જે અકિંચન છે, એનો લોભ સર્વથા નષ્ટ થઈ જાય છે.

એ જ ક્રમમાં આગળ ચાલીને જ્ઞાનીઓ કહે છે કે જેનામાં લોભ નથી હોતો, અર્થાત્ જે પોતાની સંપત્તિને વધારેમાં વધારે વધારવાની લાલચમાં નથી પડતો નવ્વાણુના ફેરામાં નથી પડતો તેની તૃષ્ણા નષ્ટ થઈ જાય છે.

આ રીતે તૃષ્ણાનો નાશ કરવા માટે લોભનો અભાવ આવશ્યક છે, અને લોભના અભાવને માટે મનમાં અકિંચનતાનો અનુભવ ! - ઉત્તરાધ્યયન સૂત્ર, ૩૨/૮

અડિયલ ટટ્ટુ

मा गलियस्सेव कसं, वयणमिच्छे पुणो पुणो ।

(વારંવાર ચાબુકનો માર ખાનાર અડિયલ ટટ્ટુની જેમ કર્તવ્યપાલન માટે વારંવાર ગુરુઓની આજ્ઞાની અપેક્ષા ન રાખો)

હંમેશાં કરવાનાં નિશ્ચિત કામો વગર કહ્યે પોતાની ઈચ્છાથી હંમેશા કરતા રહેવામાં જ શિષ્યની શોભા છે. વિવેકી અને નમ્ર શિષ્ય એમ જ કરે છે, અને ગુરુઓના હૃદયમાં સ્થાન મેળવી લે છે.

એથી ઊલટું જે શિષ્ય અવિવેકી હોય છે - ઉદ્ધત હોય છે, તેને રોજ કરવાનાં કામોમાં પણ આજ્ઞા કરવી પડે છે. એવા શિષ્યો ગુરુઓની દૃષ્ટિમાં નીચા પડી જાય છે. પોતાની મૂર્ખતાને કારણે તેઓ ગુરુઓને નાખુશ કરી મૂકતા હોય છે.

એવા શિષ્યોની અડિયલ ટટ્ટુ સાથે સરખામણી કરી શકાય છે, કારણ કે એવા ટટ્ટુ એકવાર ચાબુક ખાઈને થોડે દૂર સુધી બરાબર ચાલે છે, ને પાછા ઊભા રહી જાય છે. બીજીવાર ચાબુક ખાઈને થોડે દૂર ચાલીને વળી હઠીને ઊભા રહે છે. આમ, એને ચલાવવા વારંવાર ચાબુક ફટકારવા પડે છે. કહ્યું છે કે શિષ્યોએ એવા અડિયલ ટટ્ટુ ન બનવું જોઈએ.

- ઉત્તરાધ્યયન સૂત્ર ૧/૧૨

વધારે પ્રમાણમાં ન ખાઓ

नाइमत्तपाण भोयण भोइ से निगाथे

(જે વધારે પડતું અન્ન-જળ ગ્રહણ નથી કરતો તે જ નિર્ગ્રંથ છે)

ઘણા માણસો એવા હોય છે કે જે સ્વાદની લાલચમાં ઠાંસી ઠાંસીને ભોજન કરે છે, અને પછી લાંબા વખત સુધી બિમાર રહે છે.

કોઈએ ઠીક જ કહ્યું છે કે, આપણે જે કાંઈ ખાઈએ છીએ તેના બે તૃતીયાંશ ભાગથી આપણે જીવીએ છીએ અને બાકીના એક તૃતીયાંશથી ડોક્ટર જીવે છે ! સ્પષ્ટ છે કે જોઈએ તે કરતાં વધારે ખાવાથી આવતી બીમારીનો ઈલાજ કરાવવામાં ડોક્ટરને જે ફી આપવી પડે છે તેનાથી તે જીવતા રહે છે.

જો આપણે નિયમિત રીતે અને જરૂર પુરતું ભોજન કરીએ તો આરોગ્ય આપણી મુઠ્ઠીમાં જ છે ! એટલા માટે સ્વાદેન્દ્રિને વશમાં રાખવી જરુરી છે. જે સંયમી છે, સાધુ છે, નિર્ગ્રંથ છે, તેની પાસેથી એવી આશા રાખી જ શકાય કે તે પ્રમાણમાં ભોજન અને જરુરી જળ ગ્રહણ કરશે અને સ્વાદના લોભમાં ન પડી વધારે ખાવા-પીવાનો પ્રયત્ન નહીં કરે.

એટલા માટે કહ્યું છે કે નિર્ગ્રંથ કદી વધારે પ્રમાણમાં અન્ન-જળ લેતા નથી.

આચારાંગ સૂત્ર ૨/૩/૧૫/૪

"અતિવેળા" ન બોલીએ

નાઈવેલ વએજ્જા

(ઘણા વખત સુધી અને અમર્યાદ ન બોલવું)

"વેળા"નો અર્થ સમય પણ થાય છે અને મર્યાદા પણ થાય છે. એટલે આ સૂક્તિના બે અર્થ થાય છે.

પહેલો અર્થ એ છે કે સાધકે ઘણા સમય સુધી બોલવું ન જોઈએ. ઘણી વ્યક્તિઓને વધારે બોલવાની આદત પડી જાય છે. જો તેને અવસર મળે તો તે દિવસ અને રાત બોલતા જ રહે. એવી વ્યક્તિઓ ફૂટેલા માટલા જેવી હોય છે. તેમાં જેમ પાણી ટકતું નથી, તે જ પ્રમાણે બકબક કરનારાઓના પેટમાં કોઈ વાત ટકી શકતી નથી. સાધક સંયમી હોય છે. તેણે વાણી ઉપર સંયમ રાખવાની ટેવ પાડવી જોઈએ, જેથી ઓછામાં ઓછા સમયમાં તે પોતાની વાત પૂરેપૂરી કહી શકે.

સૂક્તિનો બીજો અર્થ એ છે કે બોલવામાં મર્યાદાનું ઉલ્લંઘન ન થાય. જેમ કે મોટાઓની વાતમાં વચ્ચે ન બોલવું. જ્યાં ''આપ'' શબ્દનો પ્રયોગ કરવો જોઈએ, ત્યાં ''તું'' કે ''તમે'' શબ્દનો પ્રયોગ ન કરવો જોઈએ. દોષવાળી ભાષા ન બોલીએ. હિંસા કે કોઈપણ પાપમાં પ્રેરે તેવી ભાષા ન બોલીએ.

આ પ્રમાણે ''અતિવેળા'' શબ્દના બંને અર્થ અહીં ઇચ્છિત હોવાથી આપણી વાત સંક્ષેપમાં કઈ રીતે કહી શકાય ? એનું ઉદાહરણ આ સૂક્તિ પોતે જ છે !

– સૂત્રકૃતાંગ સૂત્ર, ૧/૧૪/૨૫

પુણ્ય સમ્રાટની પુણ્ય સપ્તમીએ.. બાળપણથી મળ્યા હતા પ્રભુ મહાવીર...

આલેખન : પુણ્ય સમ્રાટ ગુરૂદેવશ્રીના શિષ્યરત્ન
મુનિશ્રી નિપુણરત્ન વિજયજી મ.સા.

કોઈપણ શ્રીમંત કુળમાં જન્મ લેનારો બાળક ગર્ભ શ્રીમંત કહેવાય. કારણ કે તે જન્મતા જ એ સંપત્તિનો અધિકારી બની જાય છે. તેમ જ જૈન કુળમાં જન્મ લેનારો ''ગર્ભપુણ્યવંત'' કહી શકાય. કારણ કે તેને જન્મતા લાખો જિનાલયો, કરોડો ગ્રન્થો, જિનબિંબો, સદ્‌ગુરુઓ જેવી તારક સંપત્તિનો અધિકાર મળી જાય છે. ચાલો... એક એવી ઘટનાના વાચક બનીએ. જેમાં એ બાળકને પ્રભુ મહાવીર માત્ર મળ્યા જ નહીં ફળ્યા પણ છે. જન્મથી જીવનભર સુધી જેનું જીવન મહાવીરમય બન્યું હતું.

વાત છે વિ.સં. ૧૯૯૩ની, ગુજરાત રાજ્યના બનાસકાંઠાના સમીપે વસેલું નાનકડું ગામ એટલે પેપરાળ. જેને ભારતના નકશામાં શોધવું પણ સહેલું ન હતું. આ ગામમાં વસવાટ કરતા હતા શ્રેષ્ઠીવર્ય સ્વરૂપચંદ ધરૂ, તેમના સૌભાગી સુશ્રાવિકા પાર્વતીબેન અને સંતાનો... ૭ સંતાનો પૈકી પંચમપુત્ર હતો પુનમચંદ.... જેવું નામ તેવો જ ગુણસમ્પન, બાળપણથી ધર્મની લગની લાગેલી હતી... માતા-પિતાના સંસ્કારોનું બળ પણ એમાં પૂર્ણરૂપે જોવાતું હતું. ગામમાં જિનાલય ન હોવાથી પુનમચંદ પગે ચાલી ૨ કિ.મી. દૂર જેતડા ગામે જતો હતો. ત્યાં બિરાજમાન હતા પ્રભુ

મહાવીર... પ્રભુ પૂજાના નિત્યક્રમથી પુનમચંદની પરિણતિ પણ વધુ નિર્મળ બની હતી. સમયના પ્રવાહે સપરિવાર થરાદનગરે આવી વસ્યો... પુનમચંદને તો અહીં પણ જાણે આનંદ ભયો... આટલા બધા જિનાલયો અને પરમાત્મા મળી ગયા.. તેમાં પણ મહારાજા કુમારપાળ વડે નિર્મિત મોટા મહાવીર... જેમને જોતા જ હૈયું હર્ષવિભોર બની જાય.. પુનમચંદ નિત્ય મહાવીરની પૂજા કરતા હતા. ૫૦૦ વર્ષથી મહેમાનરૂપે બિરાજમાન પ્રભુજીની પ્રતિષ્ઠાનો પ્રસંગ પ.પૂ. વ્યાખ્યાન વાચસ્પતિ શ્રીમદ્‌વિજય યતિન્દ્રસૂરિશ્વરજી મ.સા.ની નિશ્રામાં યોજાયો. જેમાં પુનમચંદે ઈન્દ્ર બની એ પ્રભુ મહાવીરના અભિષેક કર્યા હતા. પ્રભુ ભક્તિમાં ભીંજાયેલ પુનમચંદ ઉપર પ.પૂ. ગુરૂદેવ શ્રી યતિન્દ્ર સૂરિશ્વરજીની દીર્ઘદૃષ્ટિ પડી અને તેમની દિવ્ય દૃષ્ટિએ પુનમચંદ ભવ્ય ભાવીને નિહાળી લીધો. જેમ પ.પૂ.આ. શ્રી હેમચંદ્રસૂરિએ ચાંગદેવને નિહાળ્યો હતો. જે કલિકાલ સર્વજ્ઞ રૂપે જિનશાસનને પ્રાપ્ત થયા.

પૂર્વના પુણ્યોદય અને વીરભક્તિના મંગળ પ્રભાવે પુનમચંદ વૈરાગ્યવાસિત બન્યા. સદ્‌ગુરૂના સંયોગે વૈરાગ્ય પ્રબળ થયો. પરિજનોએ મોહવશ પ્રયત્નો કર્યા પણ મોહ થાકી ગયો, વૈરાગ્ય જીતી ગયો. વિ.સં. ૨૦૧૦માં સિયાણાનગરે પૂનમચંદ પ્રવજ્યા લઈ પ.પૂ. આ. શ્રી યતિન્દ્રસૂરિશ્વરજીના શિષ્યરૂપે મુનિ જયંતવિજય બન્યા. પછી સંયમયાત્રાના મંગળ મંડાણ થયા. ૭ વર્ષના ગુરૂ સાંનિધ્યે સુંદર જ્ઞાનાભ્યાસ, આચારનિષ્ઠ અને ગુરૂકૃપાના પૂર્ણ અધિકારી બન્યા, સ્વયં પૂ. ગુરૂદેવશ્રીએ સ્વમુખે મુનિ જયંતવિજયને ભાવિના સંઘનાયક ઉદ્‌ઘોષિત કર્યા હતા. વચનસિદ્ધ ગુરૂના વચનો ફળ્યા અને વિ.સં. ૨૦૪૦, મહા સુદી ૧૩ના દિવસે ત્રિસ્તુતિક શ્રીસંઘના નાયક રૂપે આચાર્યપદે બિરાજમાન થયા અને ત્યાં પણ શુભ સંજોગે ભાંડવપુર તીર્થાધિપતિ પ્રભુ મહાવીરનું સોહામણું સાનિધ્ય મળ્યું એ ધન્યધરાથી સ્વયંના પરમારાધ્ય પ્રભુ મહાવીરની ઉર્જા લઈ તેઓશ્રીના અજોડ શાસન પ્રભાવનાનો અસ્ખલિત પ્રવાહ પ્રારંભ થયો.

અદ્‌ભૂત – અકલ્પનીય શાસનના પ્રભાવક કાર્યો તેઓશ્રીના શાસનકાળમાં થયા, જિનશાસન, ત્રિસ્તુતિક સંઘ અને દાદા ગુરૂદેવ શ્રી રાજેન્દ્રસૂરિશ્વરજી મ.સા.ની યશોપતાકા દશેદિશાઓમાં ફરકવા લાગી. ૬૩ વર્ષના સંયમ પર્યાય અને ૩૬ વર્ષ આચાર્યપદ પર્યાયના સંગે ૮૧ વર્ષના આયુષ્યમાં તેઓશ્રીએ મહાન શાસનપ્રભાવક બની ભાંડવપુરની ધરતી પર પ્રભુ મહાવીરની શરણમાં અંતિમ શ્વાસ લીધા. બાળપણથી મળેલા મહાવીર અંત સમય સુધી તેમની સાથે જ રહ્યા. એમને માત્ર મહાવીર મળ્યા જ નહીં, ફળ્યા પણ છે. તેઓશ્રીની વિદાયને બે વર્ષ થયા છે છતાં પણ આજે તેઓશ્રી શાસનના દરેક પર્યાયમાં જીવંત છે, જીવંત રહેશે.

રાજસ્થાનની ધર્મધરા ફતાપુરા નગરીમાં ગચ્છાધિપતિ અને આચાર્યશ્રીની પાવનનિશ્રામાં પ્રતિષ્ઠાંજનશલાકા મહોત્સવ સંપન્ન

રાજસ્થાનની ધર્મધરા ફતાપુરા નગરીમાં પુણ્ય સમ્રાટ રાષ્ટ્રસંત આચાર્યદેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેનસૂરિશ્વરજી મ.સા.ના પટ્ટધર ધર્મદિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌ વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. - આચાર્ય શ્રીમદ્‌વિજય જયરત્નસૂરિશ્વરજી મ.સા. આદિ શ્રમણ-શ્રમણીવૃંદની પાવનકારી નિશ્રામાં ગત તા. ૧૫-૨-૨૦૧૯ના રોજથી તા. ૨૨-૨-૨૦૧૯ના રોજ દરમ્યાન શ્રી પાર્શ્વનાથ આદિજિનબિંબ, ગણધર અને ગુરુબિંબ આદિ પ્રતિષ્ઠાંજનશલાકા મહોત્સવ સંપન્ન થયો હતો.

આ પ્રતિષ્ઠાંજનશલાકા મહોત્સવમાં નિશ્રા પ્રદાન કરવા માટે બંને આચાર્ય ભગવંતોએ ભવ્ય સામૈયા સાથે પ્રવેશ કર્યો હતો. મહોત્સવના દરેક દિવસે પ્રવચન-વિવિધ પૂજાઓ, ભવ્યાતિભવ્ય અંગરચના અને સંગીતકારો દ્વારા પ્રભુભક્તિની રમઝટ સહિત અનેક ધર્મ અનુષ્ઠાનો સંપન્ન થયા હતા. તા. ૨૦-૨-૨૦૧૯ના રોજ ગુરુભગવંતોની નિશ્રામાં ભવ્યાતિભવ્ય અંજનશલાકા પ્રતિષ્ઠાનો વરઘોડો નિકળ્યો હતો. આ વરઘોડાએ અદ્દકેરૂ આકર્ષણ જમાવ્યું હતું.

તા. ૨૧-૨-૨૦૧૯ના રોજ પૂજ્ય ગુરૂ ભગવંતોની નિશ્રામાં ૐ પુણ્યાહં, ૐ પુણ્યાહંના ગગનભેદી નારાઓ સાથે હીંકાર મૂર્હતમાં પ્રતિષ્ઠા સંપન્ન થઈ હતી.

ધર્મદિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા., આદિ શ્રમણ-શ્રમણીવૃંદે ફતાપુરા નગરીની પ્રતિષ્ઠા સંપન્ન કરાવી તા. ૨૭-૨-૨૦૧૯ના રોજ રાની નગરમાં ગુરૂમંદિરની પ્રતિષ્ઠા હેતુએ ભવ્ય સામૈયા સાથે પ્રવેશ કર્યો હતો. તા. ૧-૩-૨૦૧૯ના રોજ પૂજ્યશ્રીની નિશ્રામાં લાભાર્થીપરિવાર દ્વારા ગુરૂમંદિરની પ્રતિષ્ઠા સંપન્ન થઈ હતી.

પુણ્ય સમ્રાટ દ્વારા સંસ્થાપિત.... શ્રી શંખેશ્વર રાજરાજેન્દ્ર ધામ તીર્થની પ્રતિષ્ઠા સંપન્ન

પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના પટ્ટધર ધર્મ દિવાકર પૂજ્ય ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા., સેવાભાવી ડો. મુનિરાજ શ્રી સિદ્ધરત્નવિજયજી મ.સા., મુનિરાજશ્રી વિધ્વદ્દરત્ન વિજયજી મ.સા., આદિ શ્રમણ-શ્રમણીવૃંદની પાવનકારી નિશ્રામાં સંવત ૨૦૭૫ના ફાગણ સુદ ૭ ને બુધવાર તા. ૧૩-૩-૨૦૧૯ના રોજ પુણ્યસમ્રાટ સંસ્થાપિત શિરોહી - પાવાપુરી હાઈવે સ્થિત શ્રી શંખેશ્વર રાજરાજેન્દ્રધામની ભવ્ય પ્રતિષ્ઠા સંપન્ન થઈ હતી.

પૂજ્ય ગચ્છાધિપતિની નિશ્રામાં પ્રતિષ્ઠાંજનશલાકા સમારોહ અંતર્ગત

લાભાર્થીપરિવારો દ્વારા કુંભ સ્થાપના અને દિપક સ્થાપના કરાઈ હતી. તીર્થ નિર્માણના મુખ્ય સહયોગી નાગોત્રા પરિવાર અને શ્રી સત્યવિજયહરણ પરિવાર દ્વારા ભોજનશાળા મંડપનું ઉદ્‌ઘાટન કરાયું હતું. વિજય મુહૂર્તમાં પરમાત્મા પાર્શ્વ પ્રભુના ચ્યવન કલ્યાણકની ભવ્યરૂપથી ઉજવણી કરાઈ હતી. અમદાવાદ ખાતે યોજાનાર આત્મોદ્ધાર-૩માં જોડાનાર ૨ મુમુક્ષુ બહેનોને પૂજ્ય ગચ્છાધિપતિશ્રીએ દીક્ષાના મુહુર્ત પ્રદાન કર્યા હતા. નાગોત્રા પરિવાર દ્વારા મુમુક્ષુ મિતલબેન અને પૂજાબેનનું બહુમાન કરાયું હતું.

આ પ્રતિષ્ઠાંજનશલાકા મહોત્સવના દરેક દિવસ દરમ્યાન સંગીતકારો દ્વારા વિવિધ પૂજાઓ ભણાવાઈ હતી અને રાત્રિ ભક્તિભાવનાના કાર્યક્રમો સંપન્ન થયા હતા. શ્રી નાગોત્રા પરિવાર દ્વારા નવનિર્મિત પેઢી કાર્યાલયનો ઉદ્‌ઘાટન કાર્યક્રમ સંપન્ન થયો હતો. તા. ૧૪-૩-૨૦૧૯ના રોજ શુભ મુહુર્તમાં લાભાર્થીપરિવાર દ્વારા સકળસંઘ સાથે ધ્વારોદ્‌ઘાટન કાર્યક્રમ સંપન્ન કરાયો હતો. આ અવસરે જોધપુર, નીમચ, અમદાવાદ, કુક્ષી, લાખણી, સિરોહી વિગેરે સ્થળોએથી વિશાળ સંખ્યામાં ગુરૂભક્તો ઉપસ્થિત રહ્યા હતા. શ્રી થરાદ શ્રી સંઘે સાધુ-સાધ્વીજી વૈયાવચ્ચનો અનુપમ લાભ લીધો હતો. પ્રતિષ્ઠાંજનશલાકા મહોત્સવ આયોજક શ્રી શંખેશ્વર રાજરાજેન્દ્ર ધામ દ્વારા મહેમાનો માટે આવાસ-નિવાસ-ભોજનની સુંદર વ્યવસ્થા કરાઈ હતી.

શ્રી ભાંડવપુર મહાતીર્થમાં મંદિર નિર્માણ કાર્યનો શુભારંભ

અતિ પ્રાચીન શ્રી ભાંડવપુર મહાતીર્થમાં પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના પટ્ટધર ભાંડવપુર તીર્થોદ્ધારક સંઘ શિલ્પી, સૂરિમંત્ર આરાધક આચાર્ય શ્રીમદ્‌વિજય જયરત્ન સૂરિશ્વરજી મ.સા., આદિશ્રમણ-શ્રમણીવૃંદની પાવન નિશ્રામાં કલિકાલ કલ્પતરુ, તપોનિષ્ઠ યોગિન્દ્રાચાર્ય પ્રાતઃસ્મરણીય દાદા ગુરુદેવ શ્રીમદ્‌વિજય રાજેન્દ્ર સૂરિશ્વરજી ગુરૂમંદિર અને પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિ સમાધિ મંદિરના નિર્માણ કાર્યનો શુભારંભ તા. ૯-૩-૨૦૧૯ને શનિવારના રોજ શુભ મુહુર્તમાં કરાયો હતો.

બંને મંદિરોનો ભટ મૂહુર્તે આચાર્ય શ્રીમદ્‌વિજય જયરત્નસૂરિશ્વરજી મ.સા. દ્વારા વાસક્ષેપ કરાયો હતો. ત્યારબાદ લાભાર્થીજીવાણા નિવાસી શ્રી મોહનલાલજી ગિરિધારીલાલજી છત્રિયા પરિવાર અને મેંગલવા નિવાસી શ્રી નેનમલજી સાહેબચંદજી બાલગોતા પરિવારે વાજતે-ગાજતે-ધૂમધામથી આચાર્ય દેવશ્રીની શુભ નિશ્રામાં પ્રથમ પાષાણનું મંડાણ કર્યું હતું. આ અવસરે નજીકના ક્ષેત્રોના સમાજજનો સાથે વિશાળ સંખ્યામાં ગુરૂભક્તો ઉપસ્થિત રહ્યા હતા.

આચાર્યશ્રીની પાવન નિશ્રામાં ડોરડા-ઝરડાજીમાં શ્રી રાજેન્દ્ર-શાંતિવિહાર જિનાલયની પ્રતિષ્ઠા સંપન્ન

આચાર્ય શ્રીમદ્‌વિજય જયરત્નસૂરિશ્વરજી મ.સા., અને મુનિમંડળનો તા. ૧૧-૩-૨૦૧૯ના રોજ શ્રી રાજેન્દ્ર-શાંતિવિહાર ડોરડા (ઝરડાજી)માં ભવ્યાતિભવ્ય સામૈયા સાથે પ્રવેશ થયો હતો. આ પ્રતિષ્ઠા મહોત્સવ દરમ્યાન કુંભ સ્થાપના, દિપક સ્થાપના, જ્વારારોપાણ, નવગ્રહ દશદિગ્પાલ, અષ્ટમંગલ પાટલપૂજન, પ્રતિરોજ વિવિધ પૂજાઓ, સંગીતકારો દ્વારા પ્રભુભક્તિ, પ્રભુજીને ભવ્ય અંગરચના વિગેરે આકર્ષણ જમાવતા ધર્મ પ્રભાવક કાર્યક્રમો સંપન્ન થયા હતા. તા. ૧૩-૩-૨૦૧૯ના મંગલમય દિવસે સાચા શ્રી સુમતિનાથ જિનાલયમાં પૂજ્ય આચાર્યશ્રીની નિશ્રામાં શુભ મુહુર્તે પ્રતિષ્ઠા આયોજક ભીનમાલ નિવાસી શ્રીમતી મંજુદેવી રમેશકુમારજી કોલચંદજી બાફના પરિવાર દ્વારા વિધિવિધાન સાથે ૐ પુણ્યાહં, ૐ પુણ્યાહં, પ્રિયંતામ્-પ્રિયંતામ્ના સામુહિક ગગનભેદી નારાઓ સાથે હર્ષોલ્લાસ ભર્યા વાતાવરણમાં પ્રતિષ્ઠા સાનંદ સંપન્ન થઈ હતી.

પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ની દ્વિતીય વાર્ષિક પુણ્યતિથિએ પુણ્ય પર્વોત્સવ...

આયોજક : શ્રી રાજરાજેન્દ્ર જૈન શ્વેતાંબર તીર્થદર્શન પબ્લિક ચેરીટેબલ ટ્રસ્ટ
દિવસ : સંવત ૨૦૭૫ના ચૈત્ર વદ ૭ ને શુક્રવાર તા. ૨૬-૪-૨૦૧૯
કાર્યક્રમ સ્થળ : શ્રી જયંતસેન મ્યુઝીયમ, મોહનખેડા તીર્થ,
પો. રાજગઢ, જિ. ધાર (મ.પ્ર.)
ફોન : ૦૭૨૯૬-૨૪૨૩૨૦/૨૪૫૩૨૦

અ. ભા. શ્રી રાજેન્દ્ર જૈન યુવક પરિષદ પરિવાર દ્વારા ધર્મ દિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. ના ૬૯ના જન્મ દિવસની ઉજવણી

પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના પટ્ટધર ધર્મદિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેનસૂરિશ્વરજી મ.સા.ના ૬૯મા જન્મદિવસ ફાગણ વદ ૬ ને મંગળવાર તા. ૨૬-૩-૨૦૧૯ના રોજ પરિષદ પરિવાર દ્વારા સમસ્ત શ્રીસંઘ અને પરિષદ શાખાઓમાં ગુરૂ ગુણાનુવાદ, સામુહિક નવકારમંત્રના જાપ અને સામાયિક વિગેરે ધર્મ પ્રભાવક કાર્યક્રમો સંપન્ન થયા હતા અને હર્ષભેર જન્મદિવસની ઉજવણી કરાઈ હતી. જે સંઘોમાં ઉજવણી કરાઈ હોય તે સંઘોને મો. ૯૮૨૭૨ ૪૪૧૭૫ વોટ્‌સઅપ પર માહિતી મોકલવા પરિષદ પરિવાર દ્વારા વિનંતી કરાઈ હતી.

પાટણ શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘમાં મુનિરાજ ભગવંતો ધર્મ અભ્યાસમાં ઓતપ્રોત

સન-૨૦૧૮ના વર્ષના ચાતુર્માસ દરમ્યાન અને હાલના તબક્કામાં પાટણશ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ ઉપર શાસનદેવની અસીમ કૃપા તપોનિષ્ઠ યોગિન્દ્રાચાર્ય પ્રાતઃ સ્મરણીય દાદા ગુરૂદેવ શ્રીમદ્‌વિજય રાજેન્દ્રસૂરિશ્વરજી મ.સા. તથા પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના દિવ્ય આશિષ અને વર્તમાન ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા., આચાર્ય શ્રીમદ્‌વિજય જયરત્ન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના શુભાશુભ આશિર્વાદ વરસી રહ્યા છે.

પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના શિષ્ય રત્ન અને શાસન-ગચ્છના ઉદયમાન સિતારા યુવા મુનિરાજશ્રી ચારિત્રરત્નવિજયજી મ.સા., જેમની વાણીના અમી છાંટણાથી શ્રોતાજનો ભીંજાઇ જાય છે એવા યુવા પ્રવચનકાર સરસ્વતીપુત્ર મુનિરાજ શ્રી નિપુણરત્ન વિજયજી મ.સા., મુનિરાજ શ્રી પ્રત્યક્ષરત્નવિજયજી મ.સા., મુનિરાજ શ્રી પવિત્રરત્નવિજયજી મ.સા., મુનિરાજશ્રી નિક્ષેપરત્નવિજયજી મ.સા. અને મુનિરાજ શ્રી નૈમિશરત્નવિજયજી મ.સા. ધર્મ અભ્યાસમાં ઓતપ્રોત બની સ્વાધ્યાય કરી રહ્યા છે.

ગત સમયમાં ૭૬ ઉપવાસની કઠોર તપશ્ચર્યા કરનાર તપસ્વીરત્ન મુનિરાજ શ્રી ચારિત્રરત્નવિજયજી મ.સા. મુનિરાજ ભગવંતોના અભ્યાસ ક્રમમાં એક મિનિટનો પણ સમયના વેડફાય તે માટે બેવડી ભૂમિકા નિભાવી રહ્યા છે. સ્વયં ગોચરી લેવા જવું અને કોઇ સંઘના કામ માટે જરૂર જણાયે સંઘના અગ્રણીઓ સાથે ચર્ચા કરી લે છે અને ત્યારબાદ તે પોતે અભ્યાસક્રમમાં જોડાઇ જાય છે. પુણ્ય સમ્રાટ સ્વાધ્યાય ખંડમાં સંઘના ખાસ કામ માટે આવવાનું થાય તો સંઘના વડીલો એ જ આવવું, મહિલાઓ માટે પ્રતિબંધ, સ્વાધ્યાય ખંડમાં ઈલેક્ટ્રીક લાઇટ નહીં આવા નિયમોનું પાટીયું લગાવી દેવાયું છે. આ છએ યુવા મુનિરાજ ભગવંતોની ધર્મ અભ્યાસની રૂચિને જોઇ પાટણનગરના જૈન પરિવારોમાં યુવા મુનિરાજ ભગવંતો માટે અનુમોદનાની વર્ષા વરસી રહી છે. શ્રી પંચાસરા પાર્શ્વનાથ જિનાલયની આજુબાજુમાં ઠાકોરબંધુઓની વસ્તી પણ મોટા પ્રમાણમાં છે. જ્યારે યુવા મુનિરાજ ભગવંતો ધર્મ અભ્યાસ માટે જતા હોય છે ત્યારે દુકાનમાં બેઠેલી કે ઉભેલી દરેક કોમની વ્યક્તિઓ યુવા મુનિરાજ ભગવંતોને નતમસ્તક વંદન કરવાનું ચૂકતા નથી. તપસ્વીરત્ન મુનિરાજ શ્રી ચારિત્રરત્નવિજયજી મ.સા., અને યુવા પ્રવચનકાર સરસ્વતીપુત્ર મુનિરાજશ્રી નિપુણરત્ન વિજયજી મ.સા.ની પ્રેરણાથી પ્રેરાઇ ઇતરકોમની કેટલીય વ્યક્તિઓએ હઠીલા વ્યસનોનો ત્યાગ કર્યો છે. પાટણ શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ સુંદર સેવા કરી રહ્યો છે.

"સદ્ગુરૂ" સમર્પણમ્

સંયોજન : યુવા પ્રવચનકાર સરસ્વતી પુત્ર મુનિરાજશ્રી નિપુણરત્નવિજયજી મ.સા.

તપોનિષ્ઠ યોગિન્દ્રાચાર્ય પ્રાતઃ સ્મરણીય શ્રીમદ્વિજય રાજેન્દ્રસૂરિશ્વરજી મ.સા., પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્વિજય જયંતસેનસૂરિશ્વરજી મ.સા.ના દિવ્ય આશિષ, ધર્મદિવાકર વર્તમાન ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા., -ભાંડવપુર તીર્થોદ્ધારક આચાર્ય શ્રીમદ્વિજય જયરત્નસૂરિશ્વરજી મ.સા.ના શુભ આશિર્વાદ, યુવા તપસ્વીરત્ન મુનિરાજ શ્રી ચારિત્રરત્નવિજયજી મ.સા.ની પ્રેરણા અને ચેતન્ય કાશ્યપ ફાઉન્ડેશન દ્વારા પ્રકાશિત ગુરૂની અસીમ મહિમા દર્શાવતા "સદ્ગુરૂ" સમર્પણમ્ નું સુંદર સંયોજન જેમની વાણીના અમીછાંટણાથી શ્રોતાજનો ભીંજાઇ જાય છે એવા યુવા પ્રવચનકાર સરસ્વતીપુત્ર મુનિરાજ શ્રી નિપુણરત્નવિજયજી મ.સા. દ્વારા પ્રકાશિત કરાયેલ છે જે અત્રે પ્રસ્તુત છે.

ડીઝાઈન અને સાઈઝ આવી કેમ ???

આ બુક છે મોબાઈલ નહીં, પણ એની ડીઝાઈન અને સાઈઝ મોબાઈલ જેવી છે, આજના સમયમાં દરેક વ્યક્તિને મોબાઈલનું વ્યસન લાગી ગયું છે. તેના વગર સહુ કોઇ પોતાને અધુરો માને છે. દરેક વ્યક્તિનો મૂલ્યવાન અધિકતમ સમય તેની સાથે વ્યતિત થતો હોય છે. એની આવશ્યક્તા સાથે તેની ઉપયોગિતાનું સાચું જ્ઞાન હોવું જરૂરી છે. નહીં તો સદ્ગુણોની સુવાસથી મહેંકવાવાળું જીવન દુર્ગુણોની દુર્ગંધથી મલિન થઇ જાય છે. મોક્ષદાયક સદ્ગુરુની મહિમા દર્શાવતી આ પુસ્તક સહુના હાથમાં તરત પહોંચી જાય, એને જોઈને જ લેવાનું મન થઇ જાય એ આશયથી પુસ્તકને મોબાઈલનું સ્વરૂપ અપાયું છે.

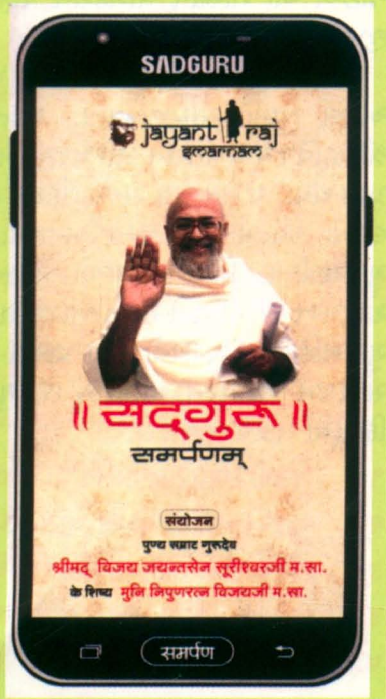

સદ્‌ગુરૂ સમર્પણમ્

જેમને હર પલ... હર ક્ષણ સન્માર્ગ, સંયમ, સંસ્કાર, સદ્‌ગુણ, સામર્થ્ય આપી મારા જીવનને ધન્ય બનાવ્યું એવા પુણ્ય સમ્રાટ ગુરૂદેવશ્રીના ચરણકમલોમાં સાદર સમર્પિત છે આ પુષ્પ

મારા ગુરૂ મહાન છે...

ગુરૂ વિના કેવી રીતે જીવવું ?

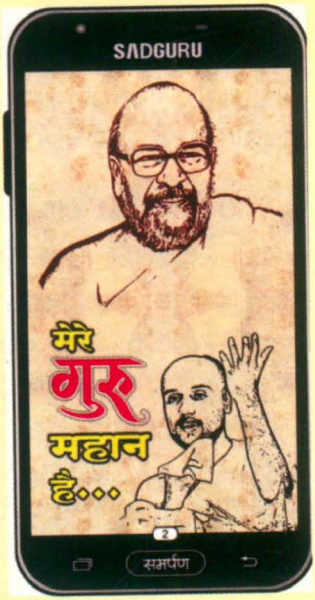

ગુરૂ જીવનના સુકાની હોય છે. ભવસમુદ્રને પાર કરવા માટે અમારા જીવન જહાજને સંભાળવાનું કાર્ય સમર્થ ગુરૂ જ કરી શકે છે. એ જહાજનું સંતુલન ન રાખવામાં આવે તો ડૂબવાની પુરી સંભાવના રહે છે. જીવન જહાજને સદ્‌ગુરૂને સોંપી દઈ નિશ્ચિત થઈ જવું જોઈએ આ શાસ્ત્રોનું માર્ગદર્શન પણ છે અને મારા જીવનનો અનુભવ પણ છે.

અસીમ પુણ્યોદયથી મને પરમાત્માતુલ્ય, અતુલ પુણ્ય સામ્રાજ્યવર્તા, આત્માનંદી ગુરૂદેવ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. ગુરૂ રૂપમાં પ્રાપ્ત થયા, જેમને શ્રેષ્ઠ સન્માર્ગદર્શક બની મારા જેવા લાખો આત્માઓને ધન્ય બનાવ્યા. પુણ્ય સમ્રાટ ગુરૂદેવશ્રીના વિયોગે લાખો ભક્તોના જીવનને શોકમગ્ન કરી દીધા તે સહુને આશ્વસ્ત કરવાનો પ્રયાસ ગુરૂ મહિમાના સુવચનો દ્વારા પ્રારંભ કરાયો છે. જેનું સંયોજન આ પુસ્તકમાં કરાયું છે. ગુરૂ જયંત સહુના દિલોમાં સદાય જીવંત છે.

– મુનિ નિપુણરત્નવિજયજી મ.સા.

૧. ગુરૂના ઈશારાને સમજવા વાળા મોક્ષના અધિકારી છે.

૨. ગુરૂએ નદી છે જે આપણને પરમાત્મારૂપી સમુંદરમાં પહોંચાડી દે છે.

૩. ગુરૂએક પાઠશાળા છે જ્યાં વિનય - વિવેકના પાઠ શિખવાડાય છે.

૪. ગુરૂઘણા જ મહાન હોય છે તેથી લાખો દિલોમાં બિરાજમાન થાય છે.

૫. ગુરૂની ભક્તિ કરવાવાળા જલ્દી મુક્તિ પ્રાપ્ત કરી શકશે. ગુરૂની નિંદા કરવાવાળા દર-દરની ઠોકરો ખાયા કરશે.

૬. ગુરૂની કૃપા જેના પર વરસે છે એના માટે દુનિયા તરસે છે.

૭. ગુરૂની શક્તિ સર્વત્ર વ્યાપ્ત છે એનો અહેસાસ સમર્પિત શિષ્ય જ કરી શકે છે.

૮. ગુરૂએ રસ્તો છે જેના પર ચાલી અનંત જીવો મોક્ષમાં પહોંચી ચૂક્યા છે.

૯. ગુરૂજહાજ છે જે આપણને સમંદર પાર કરાવે છે.

૧૦. ગુરૂની નજર જેના પર હોય છે તેને કોઈની નજર નથી લાગતી.

૧૧. ગુરૂના ઈશારાને જે સમજી લે છે તે વિનયવાન છે. (ઉત્તરાધ્યન સૂત્ર)

૧૨. ગુરૂની આશાતના કરવાવાળાનો ક્યારેય મોક્ષ નથી થતો.
(દશવૈકાલિક સૂત્ર)

૧૩. ગુરૂની આરાધના જેવું અમૃત નથી. વિરાધના જેવું ઝેર નથી.
(ધર્માચાર્ય બહુમાનકુલકમ્)

૧૪. ગુરૂ પ્રત્યેનો બહુમાનભાવ મોક્ષનું કારણ છે. (પંચ સૂત્ર)

૧૫. ગુરૂની આજ્ઞા વિના એક કદમ ન ચાલવું આજ્ઞા લઈ દુનિયા ફરી લેવી.

૧૬. ગુરૂ લાલ સિંગ્નલ છે તે કહે તો ચાલવું અને તે કહે તો થોભવું.

૧૭. ગુરૂ અજ્ઞાનતાના અંધકારને મીટાવવાળા સૂર્ય છે.

૧૮. ગુરુના ગુણોની સુવાસ ક્યારેય ઓછી થતી નથી.

૧૯. ગુરુ અર્થાત્ પરમાત્મા દ્વારા અધિકૃત વિશ્વસનીય સ્થાન.

૨૦. ગુરુ ક્યારેય પણ કલ્યાણ કરી શકે છે, જેવી રીતે મહાવીરે ગૌતમનું કર્યું હતું.

૨૧. ગુરુની આજ્ઞાપાલન મોક્ષનો શોર્ટકટ માર્ગ છે.

૨૨. ગુરુના ચરણોમાં બેસવું સરળ છે, ગુરુના હૃદયમાં બેસવું ઘણું કઠીન છે.

૨૩. ગુરુ સંગ જેની પ્રીત છે, હર કદમ પર તેની જીત છે.

૨૪. ગુરુ કૃપા પ્રાપ્ત કરવા પૂર્ણ સમર્થિત બનવું જરુરી છે.

૨૫. ગુરુની સાધનાને જોવા માટે ગુરુમય બનવું પડે છે.

૨૬. ગુરુના અનુશાસનમાં રહેવાવાળા મોક્ષના સિંહાસન પર બેસે છે.

૨૭. ગુરુથી દૂર રહેવાવાળા મોક્ષથી દૂર રહે છે.

૨૮. ગુરુ મોક્ષ મહેલનો પ્રવેશ દ્વારા છે.

૨૯. ગુરુ સમયજ્ઞ હોય છે એટલે આવવાવાળા સમયને જાણી લે છે.

૩૦. ગુરુ સૌના આધાર છે, એટલે ગુરુ વિના કોઇનો ભવપાર થતો નથી.

૩૧. ગુરુનું માર્ગદર્શન ડગલે ને પગલે આવશ્યક છે. જ્યાં સુધી આપણે મંઝિલ પર ન પહોંચીએ.

૩૨. ગુરુથી જ્ઞાનનો દિપક ઝળહળે છે. ગુરુથી જ જીવનના બધાં જ સંકટો ટળે છે.

૩૩. ગુરુ શિષ્યને ભવસાગરથી તરાવવા માટે સમર્થ હોય છે. પણ શિષ્યને પણ તેમ કરવાની ચાહના હોવી જોઇએ.

૩૪. ગુરુ એક એવી સુરત છે, દેખી શકો તો દેખો એય પ્રભુની મૂરત છે.

૩૫. ગુરુના માધ્યમથી જિન વચન આપણા સુધી પહોંચે છે. જિનવચન આપણને મોક્ષ સુધી પહોંચાડે છે.

૩૬. ગુરુ પ્રસન્નતાના મહાસાગર છે. તેમના શરણમાં આવવાવાળો પ્રસન્ન થઇને જ જાય છે.

(ક્રમશઃ)

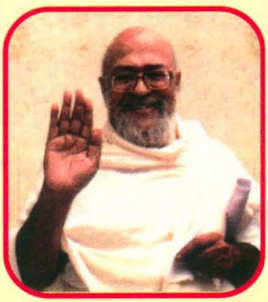

દિલ મે નામ તેરા હૈ, તૂ ભગવાન મેરા હૈ...
મૈં ભક્ત તેરા હનુમાનસા, તૂ રામ મેરા હૈ...
ગુરૂ જયંતસેનસૂરિનામ જપના કામ મેરા હૈ...
મૈં ભક્ત તેરા હનુમાનસા, તૂ રામ મેરા હૈ...
તુમ ગુરૂવર મેરે હો યે અભિમાન મેરા હૈ...
મૈં ભક્ત તેરા હનુમાનસા, તૂ રામ મેરા હૈ...
જો પાતા હૈ ગુરૂ કે ગુણ, વો બનતા હૈ જગમેં નિપુણ

શ્રી સૌધર્મ બૃહત તપોગચ્છીય ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ અમદાવાદ - રાજનગર (થરાદ)માં છવાયો અદ્‌ભૂત માહોલ

આત્મોદ્ધારના પાવન પ્રસંગનો થયો ભવ્ય શુભારંભ

શ્રી સૌધર્મ બૃહત તપોગચ્છીય ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ અમદાવાદ (થરાદ)ના તત્વાધાનમાં તપોનિષ્ઠ યોગિન્દ્રચાર્ય પ્રાતઃ સ્મરણીય દાદા ગુરૂદેવ શ્રીમદ્‌વિજય રાજેન્દ્રસૂરિશ્વરજી મ.સા. અને યુગપ્રભાવક પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ની દિવ્ય કૃપાથી અને ધર્મદિવાકર વર્તમાન ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. - ભાંડવપુર તીર્થોદ્ધારક આચાર્ય શ્રીમદ્‌વિજય જયરત્ન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ની પ્રેરણાથી અમદાવાદ - રાજનગરે યોજાનાર આત્મોદ્ધાર અંતર્ગત પ્રવચન શ્રેણીનું આયોજન પૂજ્ય મુનિરાજ શ્રી જિનાગમ વિજયજી મ.સા.ની પાવનકારી નિશ્રામાં તા. ૧૭-૩-૨૦૧૯ના રોજ સવારે ૮.30 કલાકે શાશ્વત ફ્લેટ મીઠાખળી ખાતે કરાયું હતું.

પ્રવચન સમાપન બાદ શ્રી ત્રિસ્તુતિક સંઘ અમદાવાદ - રાજનગરે (થરાદ) સંવત ૨૦૭૫ના વૈશાખ વદ - ૫ ને ગુરૂવાર તા. ૨૩-૫-૨૦૧૯ના રોજ ૧૮થી અધિક મુમુક્ષુઓના સામુહિક આત્મોદ્ધારની તૈયારી સ્વરૂપ ચઢાવા - નકરા વિગેરેના લાભ આપવાની શરૂઆત કરાઈ હતી. આ સમયે સમસ્ત સંઘમાં અદ્‌ભુત માહોલ છવાઈ ગયો હતો. શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ અમદાવાદ (થરાદ)ના સહુ ભાગ્યશાળી પરિવારોએ ઘણા ઉત્સાહ સાથે વૈરાગ્યના આ પાવન અવસરને ઉલ્લાસ અને ઉમંગથી વધાવી ચડતા ભાવે ચઢાવાના લાભો લીધા હતા. મુનિરાજ શ્રી જિનાગમરત્નવિજય મ.સા.ની વૈરાગ્યમય વાણી સાંભળી સહુ લક્ષ્મીના મોહને ત્યાગી વૈરાગ્યના રંગમાં રંગાઈ ગયા હતા. ઓળી આરાધનાના આગળના દિવસે બાકી ચઢાવા બોલાવવામાં આવનાર છે. જે લાભાર્થીપરિવારોની નામાવલી આગામી અંકમાં પ્રસ્તુત કરવામાં આવશે.

આત્મોદ્ધાર-૩નો અવસર શ્રી ત્રિસ્તુતિક જન સંઘ - અમદાવાદ રાજનગરમાં ઈતિહાસ રચશે, હજુ આત્મોદ્ધાર કરવાવાળા મુમુક્ષુઓની સંખ્યા વધવાની સંભાવના છે.

હાર્દિક શુભેચ્છા વધાઈ

ધર્મ દિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના
સંવત ૨૦૭૫ના ફાગણ વદ ~ ૬ ને
મંગળવાર તા. ૨૬~૩~૨૦૧૯....

૬૯મા જન્મ દિવસે

શુભેચ્છા સહ, અંતઃકરણપૂર્વક હાર્દિક વધાઈ...

શાશ્વત ધર્મ - ગુર્જર જૈન જ્યોત પરિવાર - સુરેશ સંઘવી

અમદાવાદ – રાજનગરે આત્મોદ્ધાર – 3

આત્મોદ્ધાર નિશ્રા પ્રદાતા : યુગ પ્રભાવક પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના પટ્ટધર ધર્મ દિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. – ભાંડવપુર તીર્થોદ્ધારક આચાર્ય શ્રીમદ્ વિજયજયરત્ન સૂરિશ્વરજી મ.સા.

આત્મોદ્ધારક - મુમુક્ષુ - ૧૮

	નામ	વય	ગામ
૧)	મુમુક્ષુ વિશેષભાઈ ભરતભાઈ બલ્લુ	૧૮	થરાદ
૨)	મુમુક્ષુ સંજયભાઈ હસમુખભાઈ મોરખીયા	૧૯	થરાદ (વાસણા)
૩)	મુમુક્ષુ મિલિબેન ભરતભાઈ બલ્લુ	૨૩	થરાદ
૪)	મુમુક્ષુ નિરાલીબેન હસમુખભાઈ ધરુ	૨૭	થરાદ (વાસણા)
૫)	મુમુક્ષુ સીલ્કીબેન મહેશભાઈ આંબાણી	૨૫	જુના ડીસા
૬)	મુમુક્ષુ નીશીબેન દિનેશભાઈ દોશી	૨૦	થરાદ (ઉંદરાણા)
૭)	મુમુક્ષુ નિયતિબેન નરેન્દ્રભાઈ સંઘવી	૨૩	થરાદ
૮)	મુમુક્ષુ રોશનીબેન સૂરજમલ રાંકા	૩૧	હૈદ્રાબાદ (રાખી–બાડમેર)
૯)	મુમુક્ષુ રીંકલબેન કીર્તિલાલ ઓઝા	૨૭	થરાદ (ઉંદરાણા)
૧૦)	મુમુક્ષુ મીનાબેન હસમુખભાઈ મોરખીયા	૫૩	થરાદ (વાસણા)
૧૧)	મુમુક્ષુ પૂજાબેન નરપતભાઈ દોશી	૨૩	થરાદ (ઈઢાટા)
૧૨)	મુમુક્ષુ રિદ્ધિબેન દિનેશભાઈ વોહેરા	૨૩	થરાદ (વામી)
૧૩)	મુમુક્ષુ ક્રિનાબેન શૈલેષભાઈ વોહેરા	૨૩	થરાદ
૧૪)	મુમુક્ષુ આંગીબેન પરેશભાઈ અદાણી	૨૧	થરાદ (ગડસીસર)
૧૫)	મુમુક્ષુ મિતલબેન વિનોદભાઈ દોશી	૨૫	થરાદ (જેટા)
૧૬)	મુમુક્ષુ પૂજાબેન દિનેશભાઈ મોરખીયા	૨૪	થરાદ (લાખણી)
૧૭)	મુમુક્ષુ મોક્ષાલીબેન કિરીટભાઈ વોરા	૨૩	થરાદ
૧૮)	મુમુક્ષુ વૈરાગીબેન કિરીટભાઈ વોરા	૨૨	થરાદ

-: આત્મોદ્ધારક આયોજક :-

શ્રી સૌધર્મ બૃહત તપોગચ્છીય ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ, અમદાવાદ – રાજનગર (થરાદ)

મધુકર સંસ્કાર જ્ઞાનાયતન

-: આત્મોદ્ધાર સ્થળ :-

વલ્લભ સદન રીવરફ્રંટ, આશ્રમ રોડ, અમદાવાદ (ગુજરાત)

-: આત્મોદ્ધાર દિવસ :-

સંવત ૨૦૭૫ના વૈશાખ વદ – ૫ ને ગુરુવાર તા. ૨૩-૫-૨૦૧૯

ઈન્દોરનગરે (મ.પ્ર.) દીક્ષાર્થીઅને તપસ્વીઓનો અભિનંદન સમારોહ સંપન્ન : ૫૦ અબોલ જીવોને અભયદાન

સંસારની ભૌતિક ભરમારમાં દેહની નશ્વરતાને ઉંડાઈથી સમજી પોતાની આત્માને શુદ્ધ સ્વરૂપ અને માનવ જીવનને સાર્થકતા પ્રદાન કરવાના હેતુ થાંદલા (મ.પ્ર.) નિવાસી ૨૭ વર્ષીય ઇંજિનીયર મુમુક્ષુ શ્રી મયંક પાવેચા આગામી અક્ષયતૃતિયાના દિવસે પૂજ્ય આચાર્યશ્રી ઉમેશ મુનિજી મ.સા.ના શિષ્ય શ્રી જિનેન્દ્રમુનિજી મ.સા. પાસે દીક્ષા અંગિકાર કરવા જઈ રહ્યા છે. દીક્ષા અને તપસ્વીઓની અનુમોદનાર્થે ઈન્દોર વર્ધમાન મેડિકોજ નરેન્દ્ર તિવારી માર્ગ, ઉષાનગર, સ્કીમ ૭૧ ગુમાસ્તાનગર ક્ષેત્રમાં મુમુક્ષુ શ્રી મયંક પાવેચા અને વર્ષીતપ તપસ્વી અ.ભા. શ્રી રાજેન્દ્ર જૈન નવયુવક પરિષદના રાષ્ટ્રીય મહામંત્રી તપસ્વીરત્ન શ્રી અશોકજી શ્રીશ્રીમાલ, દીપમાલા શ્રીશ્રીમાલ અને શ્રીમતી માયા વાગરેચાની રથ અને બગીઓમાં ભવ્ય શોભાયાત્રા કાઢવામાં આવી હતી. જે શોભાયાત્રા શ્રી સિમંધર સ્વામી જિનાલયના દર્શન કરી આણુ સ્વાધ્યાય પહોંચી હતી. રસ્તામાં વિભિન્ન સ્થાનો પર લોકોએ દીક્ષાર્થીઅને તપસ્વીરત્નો પર અભિનંદન વરસાવ્યા હતા. પુરા માર્ગ પર દીક્ષાર્થીએ વરસીદાન કર્યું હતું.

ટાંડા નિવાસી શ્રીશ્રીમાલ પરિવાર દ્વારા આયોજિત આ કાર્યક્રમમાં સર્વપ્રથમ દીક્ષાર્થીના પિતાશ્રી પ્રમોદજી અને માતા શ્રીમતી કિરણ પાવેચાનું અભિનંદન પત્રથી સન્માન શ્રી સુનિલકુમાર, શ્રીમતિ સંધ્યા અને પરિવારજનોએ કર્યું હતું. આ દીક્ષા અને તપ અનુમોદનાર્થે આયોજિત કાર્યક્રમમાં પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. દ્વારા ઘોષિત અ.ભા. શ્રી રાજેન્દ્ર જૈન નવયુવક પરિષદની શાખાઓ દ્વારા ચાલી રહેલ જીવ બચાવો અભિયાન અને પૂજ્ય શ્રી ગણેશીલાલજી મ.સા. તથા શ્રી ઉમેશ મુનિજી મ.સા.ની જીવદયાની પ્રેરણાનો ઉલ્લેખ કરતાં સભામાં ઉપસ્થિત સમુદાયને શ્રી અશોકજી શ્રીશ્રીમાલએ માર્મિક શબ્દોમાં આગ્રહ કર્યો કે, આપણે એ બિમાર અથવા વૃદ્ધ બિનઉપયોગી પશુ વેચવામાં આવે છે અને નિશ્ચિતરૂપથી કતલખાનામાં કપાઈ જશે એવા પશુઓની ખરીદી કરી (પાંજરાપોળ) ગૌશાળામાં મોકલી આપી અભયદાન અપાવવું જોઈએ.

શ્રીશ્રીમાલએ કહ્યું કે, તે માટે જીવદયા પ્રેમી એક અથવા એકથી અધિક જીવોને છોડાવવાની રકમ પ્રદાન કરી પુણ્ય પાર્જન કરી શકે છે. થોડી જ વારમાં ૫૦થી અધિક પશુઓને બચાવવાની રકમ એકત્રિત થઈ ગઈ હતી.

અ.ભા. શ્રી રાજેન્દ્ર જૈન નવયુવક પરિષદની ઈન્દોર, રાણાપુર, જોધપુર અને જાલના શાખાના માધ્યમથી બિમાર અને વૃદ્ધ પશુની ખરીદી કરી ગૌશાળામાં મૂકવામાં આવશે.

સુરત સ્થિત કાંતિલાલ અમુલખભાઇ ભણસાળી પરિવાર દ્વારા ચિ. શૈલેષભાઇના ૨૫ વર્ષની લગ્નતિથિની આધ્યાત્મિક સ્વરૂપે ઉજવણી

પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના પટ્ટધર ધર્મદિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા., ભાંડવપુર તીર્થોદ્ધારક આચાર્ય શ્રીમદ્વિજય જયરત્ન સૂરિશ્વરજી મ.સા.,ના આજ્ઞાનુવર્તીની વિશાળ સુશિષ્યાઓના ગુરૂણી પૂજ્ય સાધ્વીજી શ્રી અનંતદ્રષ્ટાશ્રીજી મ.સા., સરસ્વતીરત્ના પૂજ્ય સાધ્વીજી શ્રી મયુરકલાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા અત્યારે સુરતનગરે ધર્મ પ્રભાવનાની મહેંક પ્રસરાવી રહ્યાં છે.

તા. ૧૩-૩-૨૦૧૯ના રોજ થરાદ નિવાસી સુરત સ્થિત કાંતિલાલ અમુલખભાઇ ભણસાળીના સુપુત્ર ચિ. શૈલેષભાઇ અને તૃષાબેનની ૨૫મી લગ્નતિથિ ધર્મ પ્રભાવના કરવા સાથે ઉજવણી કરવા નક્કી કર્યું હતું. તે માટે ભણસાળી પરિવાર ઉક્ત પૂજ્ય સાધ્વીજી ભગવંતો પાસે પહોંચી જઈ પ્રેરણા કરવા વિનંતી કરી હતી. વ્યાખ્યાન સમયે પૂજ્ય સાધ્વીજી ભગવંતોની પ્રેરણા લઇ આ દંપત્તિએ પર્વ તિથિ એ બ્રહ્મચર્યના નિયમો લીધા હતા.

આ ઉજવણી રૂપે અડાજણ પાટીયા સ્થિત શ્રી શાંતિનાથ દાદાના જિનાલયમાં આવી પરિવાર ઝુમી ઉઠ્યો હતો, તે સમયે તૃષાબેન ભણસાળીની આંખમાં હર્ષના આંસુ આવી ગયા હતા. અલગ-અલગ છાબો ભરી વાજતે-ગાજતે બગીમાં બેસી શોભાયાત્રા કાઢવામાં આવી હતી. જિનબિંબ, ગણધરબિંબ, દાદા ગુરૂદેવબિંબ આ તમામ બિંબોને ચક્ષુ, ચાંદીના શ્રીફળ, જુમણા, હીરાજડિત સોનાના કળશ, ચાંદીની આરતી, મંગલ દિવો અર્પણ કર્યા હતા. પૂજ્ય સાધ્વીજી ભગવંતોની પ્રેરણાથી પ્રેરાઇ ગોપીપુરા સ્થિત શ્રી મુનિસુવ્રતદાદાના જિનાલયમાં સોનુ અર્પણ કર્યું હતું. સુરતના ૨૫ જિનાલયોમાં ભવ્યાતિભવ્ય અંગરચના, સ્નાત્ર મહોત્સવ, જિનાલયમાં અદ્ભૂત નંદાવ્રતની રચના, ફૂલોથી જિનાલયનો શણગાર, ચાંદીની ગીનીઓથી સ્વસ્તિકની રચના, ઉત્તમ ફળ નૈવેદ્યથી પ્રભુ ભક્તિ, સોનારૂપાના ફૂલોથી પ્રભુને વધામણા, પુષ્પવૃષ્ટિ વિગેરેથી ૨૫ વર્ષ લગ્નતિથિની આધ્યાત્મિક ઉજવણી કરી હતી.

આ અવસરે પધારેલ સંઘના સદસ્યોને બાજોઠ પર ભાણુ પીરસી જયણાપૂર્વક પ્રીતિભોજન સ્વરૂપે સાધર્મિક ભક્તિ કરી હતી અને પ્રભાવના આપી બહુમાન કર્યું હતું. અત્યારે ઉજવાતા અતિ ખર્ચાળ સામાજિક પ્રસંગો વખતે ધર્મ અને પરમાત્માને ધ્યાનગ્રસ્ત કરવા આ પ્રસંગ સમાજ માટે પ્રેરણારૂપ છે અને અત્યંત ગૌરવની વાત છે. ભણસાળી પરિવારની આ શાસન પ્રત્યેની ભક્તિની અનુમોદના કરીએ.

– શાશ્વત ધર્મ ગુજરાત પ્રતિનિધિ વિપુલ દોશી જેતડાવાળા દ્વારા

कुमकुम सने पगलिये

मीरपुर में एक तीर्थधाम का उदय

धर्म दिवाकरजी के सान्निध्य में अतिभव्य प्रतिष्ठोत्सव

'सिरोही देवभूमि पर आध्यात्म का एक अध्याय आज और जुड़ गया, तीर्थ नगरी सिरोही में एक तीर्थ आज और बन गया और देवनगरी के देवदर्शन सीरीज में एक और भव्य-अतिभव्य धाम के दिव्य दर्शन हुए ।' 'राजस्थान की पुण्य धरा, सिरोही-नई पावापुरी हाईवे रोड़ पर, अति प्राचीन मीरपुर तीर्थ के समीपस्थ पुण्य सम्राट श्री जयंतसेनसूरिश्वरजी म.सा. की पावन प्रेरणा से निर्मित श्री शंखेश्वर पार्श्व राज-राजेन्द्र धाम में भव्य अतिभव्य अंजन शलाका प्रतिष्ठा महोत्सव के साथ सिरोही के अध्यात्म की दुनिया में एक अध्याय और जुड़ गया।'

'अष्ट प्रतिहार्य युक्त तेइसवें तीर्थपति श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथजी भगवान की प्राण प्रतिष्ठा के साथ अनंत लब्धि निधान श्री गौतम स्वामी भगवानजी की, प्रातः स्मरणीय प्रभु श्रीमद् विजयराजेन्द्र सूरीश्वर गुरुदेवजी की, तीर्थ प्रणेता, प्रत्यक्ष, अप्रत्यक्ष आशीर्वाद दाता, सदैव स्मरणीय, पुण्य सम्राट आचार्य देवेश श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. और उनके गुरुदेव परमपूज्य श्रीमद् विजय यतीन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. की प्रतिमाओं की प्राण प्रतिष्ठा प.पू. आचार्यदेव धर्म दिवाकर श्रीमद् विजय श्री नित्यसेन सूरीश्वरजी म.सा. आदि की पावनकारी निश्रा में हुई ।'

'श्री महेन्द्र कुमार मिलापचंद जी जैन एवं श्री सत्यविजय त्रिलोकचंद्रजी हरण, श्री जयविक्रमजी (जय भाई) और समस्त ट्रस्टियों को कोटि-कोटि नमन और साधुवाद है जिन्होंने देवभूमि सिरोही में देवदर्शन का एक और अध्याय जोड़ा 'विशाल मंदिर में कई खूबसूरत पटों के भी दर्शन हम यहाँ करते हैं जिनमें श्री शत्रुंजय महातीर्थ (पालीताना), श्री सम्मेत शिखरजी जो बिहार में है और जहाँ 22 तीर्थंकरों का निर्वाण हुआ था, श्री पावापुरी महातीर्थ, श्री गिरनार महातीर्थों के दर्शन पटों में होते हैं ।'

'पिछले चार साल से यहाँ अनवरत काम चल रहा था और आगे भी चलता रहेगा। इस मंदिर परिसर में धर्मशाला, भोजनशाला भी बनाई गयी है जहाँ खूबसूरत फुलवारी और हरियाली को भी विकसित किया जा रहा है।'

'देवनगरी के देवदर्शन पार्ट-96 में 'श्री शंखेश्वर पार्श्व राज-राजेन्द्र धाम, वाडेली नदी के पास, सिरोही पावापुरी हाइवे पर स्थित तीर्थ के भावपूर्ण दर्शन कीजिए और देवदर्शन पार्ट-97 में श्री दण्ड, ध्वजा, कलश के दर्शन के साथ संपूर्ण परिसर के विहंगम नजारे को देखिए।'

12 मार्च 2019 को सुबह 9 बजे भगवान पार्श्वनाथ का दीक्षा कल्याणक भव्य रूप से मनाया गया जिसमें तीर्थ परिसर में भव्य शोभायात्रा का आयोजन हुआ जिसमें विशाल जनसमूह की उपस्थिति रही। तीर्थ निर्माण मुख्य सहयोगी परिवार एवं हजारों गुरु भक्तों में उत्साह से भाग लिया। दोपहर में साझी का आयोजन हुआ। पश्चात संध्या कालीन

मंगल बेला में भगवान के प्रतिष्ठा निमित्त चढ़ावे की जाजम गच्छाधिपति श्री की निश्रा में सम्पन्न हुई जिनमें कई गुरु भक्तों ने लाभ लिया।

पश्चात् 13 मार्च को प्रातः चतुर्विध संघ की उपस्थिति में पुण्याहम पुण्याहम की जयकारों के साथ प्राण प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई। बाद में प्रवचन मंडप में गच्छाधिपति श्री का मांगलिक हुआ। जिसमें शाह भंडारी परिवार चैन्नई वालों ने कामली का लाभ लिया इस निमित्त प्रतिवर्ष यह तीर्थ परिसर में गुरु सप्तमी मनाने का निर्णय किया गया।

14 मार्च को गच्छाधिपति की निश्रा में द्वार उद्घाटन हुआ इस तरह प्रतिष्ठा महोत्सव देव गुरु और धर्म कृपा से सानंद सम्पन्न हुआ आयोजक- श्री राज राजेन्द्र शंखेश्वर पार्श्व धाम सिरोही पावापुरी हाइवे थे।

फतापुरा में प्रतिष्ठाजनशलाका

फतापुरा। यहाँ धर्मदिवाकर, गच्छाधिपति श्रीमद् विजय नित्यसेन सूरीश्वरजी म.सा., सूरिमन्त्र आराधक, आचार्यदेवेश, श्रीमद् विजय जयरत्न सूरीश्वरजी म.सा. आदि श्रमण - श्रमणी भगवन्त की पावन निश्रा में श्री पार्श्वनाथ आदि जिनबिम्ब, गणधर व गुरुबिम्ब आदि की प्रतिष्ठांजनशलाका अष्टाह्निका महोत्सव के साथ सानन्द सम्पन्न हुई।

महोत्सव का शुभारम्भ आचार्यद्वय आदि श्रमण-श्रमणिवृन्द के भव्य मंगल प्रवेश के साथ हुआ। मंगल प्रवेश श्रीसंघ द्वारा भव्य सामैयापूर्वक कराया गया। मंगल प्रवेश के प्रसंग पर निकटवर्ती नगरों से विशाल संख्या में गुरुभक्त पधारे। महिलाओं ने मंगल कलश सिर पर धारण कर गुरु भगवन्तों की अगवानी करते हुए बधाया। सामैया नगर के प्रमुख मार्गों से होता हुआ मन्दिरजी पहुँचा। मार्ग में अनेक स्थानों पर गुरु भगवन्तों को गहुँली कर बधाया। पूरे सामैया में गुरुभक्त नाचते हुए अपनी प्रसन्नता दर्शाते हुए जयघोष कर रहे थे।

प्रतिष्ठांजनशलाका के आठों दिवस आचार्यद्वय की शुभनिश्रा में अनेक धार्मिक अनुष्ठान हुए जिसमें प्रतिदिन प्रवचन, विविध पूजाएँ, भक्ति, मनमोहक अंगरचना आदि कार्यक्रम हुए। विभिन्न संगीतकारों ने अपनी संगीतमय प्रस्तुतियों से सभी को आकर्षित किया।

दिनांक 20 फरवरी को गुरु भगवन्तों की निश्रा में भव्यातिभव्य अंजनशलाका प्रतिष्ठा का भव्य वरघोड़ा निकाला गया। वरघोड़े में आचार्य भगवन्तों एवं श्रमण-श्रमणिवृन्द के साथ हाथी, घोड़े, रथ, बैण्ड, ढोल-ढमाकों के साथ गुरुभक्त पूरे वातावरण को जयघोष के नाद से गुँजायमान कर रहे थे। गुरुभक्त पूरे मार्ग में नृत्य कर रहे थे तो वहीं महिलाएँ पारम्परिक वेश में सिर पर कलश धारण करते हुए गीत गान कर रही थी। वरघोड़ा नगर के प्रमुख मार्गों से होता हुआ आयोजन स्थल पर पहुँचा। वरघोड़े में अनेक नगरों के श्रीसंघ एवं गुरुभक्त भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

वरघोड़े के पश्चात् आयोजित धर्मसभा में श्रीमद् विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा. ने कहा कि फतापुरा में दादा गुरुदेव एवं

पुण्य सम्राट गुरुदेव का आशीर्वाद रहा है और उन्हीं के शुभाशीर्वाद से ऐतिहासिक प्रतिष्ठाजनशलाका होने जा रही है। आप सबकी गुरुभक्ति अनुमोदनीय है।

श्रीमद् विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा. ने सम्बोधित करते हुए कहा कि गुरुकृपा सबको प्राप्त नहीं होती है, जिसकी गुरु के प्रति श्रद्धा और समर्पण होता है वह गुरुकृपा को प्राप्त कर लेता है और फतापुरा संघ की गुरुभक्ति में कोई सन्देह नहीं है यह भव्य प्रतिष्ठा महोत्सव साक्षी है।

महोत्सव के अन्तर्गत प्रतिदिन आचार्य भगवन्तों की निश्रा में कुम्भ स्थापना, दीपक स्थापना, नवग्रह पाटला स्थापना, अष्टमंगल पाटला स्थापना, दशदिग्पाल पाटला स्थापना, वीस स्थानक पाटला स्थापना, सिद्धचक्र पाटला स्थापना, नन्दावर्त्त पाटला स्थापना, च्यवन कल्याणक महोत्सव, प्रभु के जन्मोत्सव, छप्पन दिक्कुमारियों द्वारा नाट्यकला का मंचन, इन्द्राणी द्वारा जन्मोत्सव का सुन्दर नाट्य मंचन, प्रभु का नामकरण, दीक्षा आदि कार्यक्रम विधिविधान के साथ सम्पन्न हुए। सभी कार्यक्रमों के लाभार्थी परिवारों का श्रीसंघ की ओर से बहुमान किया गया।

प्रतिष्ठा निमित्त मेहन्दी वितरण का कार्यक्रम भी हुआ। सभी श्राविकाओं ने उत्साह एवं उमंग से मेहन्दी ग्रहण कर अपने हाथों पर मेहन्दी रचाई।

विधि विधान के साथ अंजन विधान आचार्य भगवन्तों द्वारा किया गया। प्रतिष्ठा के दिन आचार्य भगवन्तों द्वारा विधिविधान के साथ शुभ मुहूर्त्त में श्री पार्श्वनाथ आदि जिन बिम्बों एवं गणधर भगवन्त सह श्री राजेन्द्रसूरिजी आदि गुरुभगवन्तों की प्रतिमाजी की हर्षोल्लास के वातावरण में प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई। अनेक नगरों से गुरुभक्त फतापुरा नगर में आयोजित इस प्रतिष्ठा महोत्सव में पधारे। जैसे ही पार्श्वनाथ प्रभुजी और गुरुदेव गादीनशीन हुए तो उपस्थित गुरुभक्तों के जयघोष से पूरा नगर ॐ पुण्याहं, ॐ पुण्याहं के घोष एवं जयकारों के स्वरों से गुँजायमान हो गया। प्रतिष्ठा के दूसरे दिन गुरु भगवन्तों एवं सकल श्रीसंघ के साथ लाभार्थी परिवार द्वारा द्वारोद्घाटन किया गया।

*** खाचरौद (नि.प्र.)।** श्री राज राजेन्द्र विद्या मंदिर शासन प्रभाविका साध्वी श्री अमितदृष्टाजी म.सा. ने अपनी व्याख्यान वाणी से बच्चों को भगवान महावीर के उपदेशों एवं अहिंसा के पवित्र मार्ग से अवगत कराया।

पूज्या साध्वीश्री के प्रवचनों से प्रभावित होकर लगभग 40 जैन एवं जैनेत्तर छात्र-छात्राओं ने एक माह में कम से कम 5 दिन रात्रि भोजन त्याग करने का संकल्प लिया। साध्वीश्री अमितदृष्टाजी म.सा. ने बच्चों के अनुशासन पर प्रसन्नता व्यक्त की एवं नैतिक शिक्षा को प्रदान करने पर जोर दिया। इस अवसर पर श्री राज राजेन्द्र जैन शिक्षण समिति के अध्यक्ष श्री ज्ञानचंद मेहता तथा श्यामसुन्दर भट्ट एवं प्राचार्य श्री जितेन्द्र जैन उपस्थित थे। संचालन व्याख्याता अमित खेमसरा ने किया।

होंगे त्रिवेणी उत्सव

श्री जयंतसेन म्युजियम (श्री मोहनखेड़ा तीर्थ)। आयंबिल ओलीजी चातुर्मास उद्घोषणा पर्व, पुण्य सम्राट की द्वितीय वार्षिक पुण्यतिथि पावन निश्रा धर्म दिवाकर गच्छाधिपति श्रीमद् विजय नित्यसेन सूरिश्वरजी म.सा. व आचार्य श्रीमद् विजयजयरत्नसूरिश्वरजी म.सा. आदि श्रमण-श्रमणीवृंद पूज्य गुरुदेव की पुण्य भूमि श्री मोहनखेड़ा तीर्थ श्री जयंतसेन म्युजियम के पावन परिसर में भव्यातिभव्य चैत्र मास की शाश्वत श्री नवपदजी की आराधना स्वरूप आयंबिल ओली आयोजित है। इसमें भारत वर्ष के सकल श्रीसंघ को आमंत्रण दिया गया है। 'ओलीजी प्रारंभ' चैत्र सुदि -6 दिनांक 11 अप्रैल 2019 गुरुवार से 'ओलीजी पारणा' वैशाख वदी-1 दिनांक 20 अप्रैल 2019 शनिवार को होगा।

ओलीजी में आराधना करने हेतु आराधकगण अपना नाम निम्न सम्पर्क सूत्र पर लिखावें।

राहुल भाई- 9826048512, अनिल भाई- 9425914246 'चातुर्मास उद्घोषणा पर्व 19 अप्रैल 2019 शुक्रवार' पुण्य सम्राट की द्वितीय वार्षिक पुण्यतिथि वैशाख वदी-7 शुक्रवार दिनांक 26 अप्रैल 2019 पुण्य सम्राट श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरिश्वरजी महाराजा की 'द्वितीय वार्षिक पुण्यतिथि महोत्सव' पुण्य सप्तमी पर्वोत्सव आयोजक- श्री राज राजेन्द्र जैन श्वेताम्बर तीर्थ दर्शन पब्लिक चेरीटेबल ट्रस्ट, 'कार्यक्रम स्थल' श्री जयंतसेन म्युजियम, मोहनखेड़ा तीर्थ, पो. राजगढ़, जिला-धार (म.प्र.) 07296-242320/245320।

*** खट्टाली।** खट्टाली में 'पुण्यसम्राट' दीक्षा दिवस म.सा. की निश्रा में धूमधाम से मनाया गया। जिसमें गुरु गुणानुवाद, गुरुपूजा शाम को 36 दीपक आरती, पश्चात् भक्ति रखी गई। सभी ने उत्साह पूर्वक भाग लिया।

16 मुमुक्षुओं द्वारा सामूहिक संयम ग्रहण किया जायेगा

अहमदाबाद। आगामी 23 मई को राजनगर- अहमदाबाद में होगा सामूहिक आत्मोद्धार पट्टधर श्री नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा. ने इन्हें दीक्षा के मुहूर्त्त दिये। मुमुक्षु इस प्रकार हैं।

* मुमुक्षु विशेषभाई भरतभाई बल्लु थराद, * मुमुक्षु संयमभाई हंसमुखभाई मोरखीया थराद (पालड़ी), * मुमुक्षु मिलबेन भरतभाई बल्लु थराद, * मुमुक्षु निरालीबेन हंसमुखभाई धरू थराद (वासणा), * मुमुक्षु सिल्कीबेन महेशभाई आंबाणी, डीसा (जूना डीसा), * मुमुक्षु निशीबेन दिनेशभाई दोशी, थराद (उंदाराणा) * मुमुक्षु नियतिबेन नरेन्द्रभाई संघवी, थराद * मुमुक्षु रोशनीबेन सूरजमलजी रांका, हैदराबाद, * मुमुक्षु रिंकल बेन

कीर्तिलाल ओझा, थराद (उंदराणा) * मुमुक्षु मीनाबेन हंसमुखभाई मोरखीया, थराद (पालड़ी), * मुमुक्षु * मुमुक्षु पूजाबेन नरपतभाई दोशी, थराद (ईढाटा), * मुमुक्षु रिद्धिबेन दिनेशभाई वोहेरा, थराद (वामी), * मुमुक्षु क्रिनाबेन शैलेशभाई वोहेरा थराद, * मुमुक्षु आंगीबेन परेशभाई अदानी, थराद (गड़सीसर), * मुमुक्षु मित्तलबेन विनोदभाई दोशी, थराद (झेटा), * मुमुक्षु पूजाबेन दिनेशभाई मोरखीया, थराद (लाखणी) और भी नाम जुड़ते जाएंगे।

त्रिदिवसीय प्रतिष्ठा महोत्सव

रानी। गच्छाधिपति श्री नित्यसेन सूरीश्वरजी म.सा. आदि साधु साध्वी मण्डल की पावन निश्रा में आज रानी स्टेशन नगर (राज.) में गुरुदेव श्रीमद् विजय यतीन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. एवं गुरुदेव श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. की गुरुबिंब की प्रतिष्ठा आनंदोल्लास से हुई। पश्चात प्रवचन मंडप में प्रासंगिक प्रवचन के साथ सकल संघ द्वारा गच्छाधिपति श्री को सकल श्रीसंघ द्वारा कामली ओढ़ाई गई। 'दोपहर में विजय मुहूर्त में पुण्य सम्राट गुरुदेवश्री की महापूजन पढ़ाई जायेगी।

अहमदाबाद से पधारे विधिकारक कुणाल भाई सुराणी ने विधि एवं प्रभु भक्ति करवाई।

---

* **राणापुर (ललित जैन)।** साध्वीश्री डॉ. दर्शितकलाश्रीजी, साध्वी श्री डॉ. चिन्तनकलाश्रीजी की पावन निश्रा में श्री मुनिसुव्रत जिनालय यतीन्द्र ज्ञान मन्दिर में चल प्रतिष्ठा की प्रथम वर्षगाँठ पर 3 दिवसीय जिनेन्द्र भक्ति महोत्सव का आयोजन किया गया। तीन दिवसीय आयोजन में प्रथम दिन भगवान और गुरुदेव की मुनिसुव्रत महिला परिषद नै चोबीसी की, दूसरे दिन भगवान का भव्य वरघोड़ा निकाला समाज के प्रत्येक घरों से अक्छत, श्रीफल से गहुली की गई। भगवान मुनिसुव्रत स्वामी की प्रतिमा रथ में निकाली। स्वामीवात्सल्य श्रीमती शांताबाई श्रीश्रीमाल कुंदनपुर व लक्की सुरेन्द्र जैन कुंदनपुर की ओर से आयोजित था। रात्रि में पार्श्व संगीत मंडल द्वारा भक्ति की गई। तीसरे दिन राजेन्द्रसूरीजी की महापूजन रमेशचंद सालेचा की ओर से पढ़ाई गई। रात्रि में संगीतकार हितेश जगावत मुंबई के द्वारा भक्ति का आयोजन किया गया।

32 गायों को जीवनदान देने वाले लाभार्थियों का किया परिषद ने बहुमान – महोत्सव के दौरान श्री राजेन्द्र नवयुवक परिषद रानापुर द्वारा बीमारू 32 गायों को लाभार्थियों के माध्यम से

किसानों से खरीदकर श्री राजराजेन्द्र गोपाल गोशाला भेजने के कार्य में निमित्त बने लाभार्थियों का बहुमान किया गया।

* **जोबट।** साध्वी विद्वगुणाजी म.सा. एवं रश्मिप्रभाजी म.सा. जोबट में विराजित रहे। नित्य प्रवचन चलते रहे। 'जीव-विचार' पर हम घर पर रहकर भी किस तरह से छः काय जीवों की यत्नापूर्वक रक्षा कर सकते हैं। यहाँ परम् श्रद्धेय पुण्यसम्राटजी के पाटोत्सव 17 फरवरी को सामायिक, जाप, गुरुपूजा एवं 36 दीपक की आरती हुई। सभी कार्यक्रम उत्साह से मनाये गये।

1 मार्च दशमी के दिन पार्श्वकल्याणक पूजा, सामुहिक एकासने हुए जिसमें महिला परिषद ने अपनी सहभागिता दी। पाठशाला भी बराबर चल रही है।

– छाया डुंगरवाल

रतलाम । जयंत कृपा-मानव सेवा को चरिथार्थ करते हुए अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद रतलाम शाखा द्वारा परिषद रतलाम शाखा द्वारा परिषद साथियों के जनमदिवस या विवाह वर्षगांठ के अवसर पर परिषद के माध्यम से सेवा गतिविधी के प्रकल्प को प्रारंभ करते हुए पुण्य सम्राट की मासिक तिथी के अवसर पर श्री राजेन्द्रजी खबिया के जनम दिवस पर गो शाला में चना चुरी, खल व गायों को चारा वितरण किया गया। इस अवसर पर राष्ट्रीय जन कल्याण मंत्री सुशीलजी छाजेड़, सहमंत्री राजकमल दुग्गड़, परिषद अध्यक्ष विनय सुराना, सचिव प्रवीण संघवी, जीवदया समिति धर्मेन्द्र रांका, नितेश तलेरा, सन्नी पोरवाल, सतीश खेड़ा, राजेन्द्र लुनावत, मुकेश औरा, जय सुराना, राजेश खबिया, अनुज छाजेड़, अभिसेख खबिया, नरेन्द्र छाजेड़, महिला अध्यक्ष मंजू मेहता आदि पदाधिकारीगण उपस्थित थे।

युग प्रभावक

युग प्रभावक आचार्यश्री जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. सम्पादक मुनिराजश्री प्रशमसेन विजयजी म.सा., विमोचन- गुरु जन्मोत्सव दिनांक 16 नवम्बर 2019, प्रतियां दो हजार, प्रकाशक - श्री राजराजेन्द्र प्रकाशन ट्रस्ट, अहमदाबाद तथा श्री राजराजेन्द्र तीर्थदर्शन श्री जयंतसेन म्युजियम, श्री मोहनखेड़ा तीर्थ, पृष्ट -168 सुपर आर्ट पेपर पर, पक्की बाइण्डिंग कव्हर - बहुरंगी आकर्षक सामग्री- 36 अध्याय मूल्य-सदुपयोग।

प्रस्तुत ग्रंथ युग प्रभावक लोकसंत पुण्य सम्राट जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा. के व्यक्तित्व तथा कृतित्व का व्यापक रूप से सचित्र पारदर्शन करवाता है। स्व. युग प्रभावक जैनाचार्य श्री ऐसी विभूति थे जिनके अपने जीवन की उपलब्धियों से जैन आकाश को आलोकित किया। ग्रंथ में संग्रहित छत्तीस (36) अध्यायों में सम्पादक श्री ने उनके जीवन के प्रत्येक पहलु तक पहुंचने का सराहनीय प्रयत्न किया है। स्व. जैनाचार्य श्री के जीवन से सम्बन्धित प्रत्येक जानकारी का इसमें समावेश हुआ है। ग्रंथ में सामग्री के अनुरूप चित्रों को बड़े आकार में श्री प्रस्तुत कर ग्रंथ की उपयोगिता में वृद्धि की गई है। मुद्रण बहुरंगी होने से ग्रंथ को व्यापक प्रियता का स्वरूप प्राप्त हो गया है। ग्रंथ का संग्रह प्रत्येक भक्त परिवार के पास होना आवश्यक है। स्व. जैनाचार्यजी के वर्षावासों अलंकृत छःरिपालक संघों, नवाणुयात्राओं, संस्कार शिविरों, नवकार आराधनाओं, उपधान तपों आदि की सूचियों, उनके उपदेश से स्थापित शिक्षालयों ज्ञानकेन्द्रों, रनचात्मक-सामाजिक-गतिविधियों की भी विस्कृत जानकारी है। इस प्रकार ग्रंथ संग्रहणीय बन गया है।

सम्पादक मुनिराज श्री प्रशमसेन विजयजी म.सा. की कल्पना शक्ति तथा परिश्रमपूत अभिव्यंजना प्रशंसनीय है।

- सुरेन्द्र लोढ़ा

श्री राजेन्द्रसूरी ज्ञान मंदिर के
भंसाली अध्यक्ष एवं वेदमुथा मंत्री

बेंगलूरू । मामुपलेट स्थित राजेन्द्रसूरी जैन ज्ञान मंदिर ट्रस्ट के चुनाव सम्पन्न हुए जिसमें सर्वसम्मति से 21 ट्रस्टियों की कमेटी का गठन किया गया जिसमें से पदाधिकारियों का चयन हुआ। मेघराज भंसाली को ट्रस्ट का अध्यक्ष, धीरजकुमार भंडारी व चम्पालाल चोपड़ा को उपाध्यक्ष, मांगीलाल वेदमुथा को मंत्री, रमेशचन्द्र भंडारी को सहमंत्री, जयंतीलाल बालर को कोषाध्यक्ष तथा त्रिलोकचन्द भंडारी को सहकोषाध्यक्ष चुना गया। यह जानकारी पूर्व सचिव नेमीचन्द वेदमुथा ने दी।

* **पारा।** पुण्य सम्राट लोकसंत आचार्य देवेश श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी द्वारा प्रतिष्ठित आदिनाथ, शंखेश्वर, सीमंधर धाम की 6 वीं ध्वजा के साथ 5 वीं वर्ष गांठ मनाई।

सुबह गुरुमन्दिर में सामूहिक भक्ताम्बर के साथ प्रक्षाल, स्नात्र पूजन के बाद आरती उतारी गई । पंवार परिवार की महिलाओं ने ध्वजा को पूजन की थाल में रखकर अष्टद्रव से सजाकर सिर पर रखकर उनके घर से चले ध्वजा को लेकर पूरे नगर में घुमाया ध्वजा के दर्शन करते लोग नमो जिणाणं बोल रहे थे। वरघोड़ा मन्दिरजी में आने के बाद विधिकारक ने सतरभेदी पूजन के साथ मंत्रोच्चार, विधि विधान से पवार परिवार को ध्वजारोहण की क्रिया शुरू करवाई। सकलसंघ के बीच अष्टप्रकारी पूजन जल, चन्दन, पुष्प, धूप, दीप, अक्षत, नैवेद्य, फल की विधि से दशों दिशाओं के देवताओं को आमंत्रित करके नवमी ध्वज पूजन से मूलनायक आदिश्वर, शंखेश्वरजी, सीमंधर, भगवान की 6 वीं ध्वजा चढ़ाई उपस्थित लोगों ने अक्षत से ध्वजा को वधाया। ध्वजा के बाद चैत्यवन्दन आरती, मंगल दियों से आरती उतारी। सुबह का स्वामीवात्सल्य श्रीसंघ की ओर से हुआ। दोपहर आदिनाथ पंचकल्याणक पूजन पढ़ाई, बालिकाओं ने भगवान की अंगरचना की। संध्या को महिलाओं ने चौवीसी का आयोजन रखा। प्रभु भक्ति की ।

* **कालुखेड़ा।** श्री कांतिलालजी

भंडारी की धर्मपत्नी तथा दीपककुमारजी आदि की माताजी श्रीमती लीलाभाई भंडारी का स्वर्गवास हो गया है, जो निष्ठावान गुरुभक्त थीं। शाश्वतधर्म द्वारा श्रद्धाजंलि।

* **रतलाम ।** राज राजेन्द्र महिला सहकारी समिति (रजि.) के चुनाव सम्पन्न हुए। अध्यक्ष सरोज कासवा, उपाध्यक्षद्वय शांता कटारिया, भावना खेड़ावाला, कोषाध्यक्ष ममता भंडारी, सचिव सारिका लोढ़ा, सहसचिव राजकुमारी सकलेचा तथा संचालक पद पर सुमित्रा धाड़ीवाल, मंजूबाला खेड़ावाला, श्रद्धा लुणावत, साधना, अम्बोर, मोनिका खिमेसरा, जिला सहकारी बैंक प्रतिनिधि मोनिका खिमेसरा, जिला सहकारी संघ प्रतिनिधि सुमित्रा धाड़ीवाल चुनी गई। विशेष आमन्त्रित के रूप में रेखा लुणावत, ज्योति कटलेचा, चन्दा चौरड़िया, ज्योति बोराना, सारिका, डुंगरवाल व चन्दा नांदेचा को सर्वानुमति से संचालक मण्डल में नामजद किया गया। इस अवसर पर त्रिस्तुतिक श्रीसंघ के अध्यक्ष डॉ. ओ.सी. जैन एवं मुख्य अतिथि म.प्र. सहकार भारती के उपाध्यक्ष श्री रामचन्द्र गोयल का स्वागत किया गया। अनोखीलाल भटेवरा, सुरेशचन्द्र खेड़ावाला, मानद प्रबन्धक नीलेश लोढ़ा आदि उपस्थित थे।

* **पारा।** पुलवामा घटना से सम्पूर्ण देश भर में आतंकवादियों के प्रति आक्रोश दिखाई दिया। पारा सकल जैन समाज ने गुरुमन्दिर में शहीदों को श्रद्धाजंलि दी और नवकारमन्त्र का जाप किया। पलाश कोठारी, लव रांका, आशीष कोठारी ने विचार व्यक्त किये। संचालन जैन समाज के महामंत्री प्रकाश छाजेड़ ने किया।

श्री सुराणा का निधन

इंदौर। श्रीमती सुगनबाई सुराणा एक धर्मनिष्ठ, तपोनिष्ठ, संघ समाज की वरिष्ठ सुश्राविका थी। वे सच में अपने नाम अनुरूप सुगुणों से भरपूर थी। सरस, सरल, मिलनसार, हँसमुख, सादा जीवन इनका सदा व्यवहार रहा। अपने कर्त्तव्यों को बखूबी निर्वाह किया। माता-पिता से प्राप्त संस्कारों को और भी अधिक समृद्ध कर परिवारजनों में संचित किया यही कारण है कि आज सम्पूर्ण परिवार संस्कारों से सुसज्जित है। आपकी करुणा, दया, आपके व्यक्तित्व में झलकती थी। आप उदार हृदया थी। आपकी दान प्रवृत्ति अनुकरणीय थी। आपके निधन से परिवार ने अपनी माँ को खोया वहीं संघ, समाज, परिषद को अपनी वरिष्ठ सदस्या से बिछोह हुआ।

हँसमुखभाई का सम्मान

* सूरत। जीवदया-पशु-पक्षी के रक्षा क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान हेतु गणतंत्र दिवस पर राज्यपाल श्री ओ.पी. कोहली तथा मुख्यमंत्री श्री विजय रूपानी द्वारा श्री हँसमुखभाई वेदलिया का सम्मान किया गया।

इस उपलक्ष में अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद की ओर से दि. 20 फरवरी 2019 को अभिनन्दन पाती भेंट की गई। श्री वेदलिया को यह पाती अ.भा.श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रमेशभाई धरू, वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री.ओ.सी. जैन तथा महामंत्री श्री अशोक श्रीश्रीमाल द्वारा भेंट की गई।

कर्मसिद्धान्त एक अनुशीलन पर प्रश्नावली

प्रस्तुती साध्वीजी श्री प्रीतिदर्शनाजी म.सा.

(प्रश्नावली परिणाम घोषित)

-प्रथम श्रेणी-

1.	श्रीमती अमिता दिलीपकुमारजी जैन	-	राजगढ़
2.	श्रीमती भारती बोहरा	-	गुर्शीदाबाद, बंगाल
3.	श्रीमती प्रभावती विजयकुमारजी जैन	-	कुक्षी
4.	श्रीमती शिवांगी कान्तिलालजी सालेचा	-	भीनमाल
5.	श्रीमती प्रमीला अशोकजी जैन	-	इंदौर
6.	श्रीमती उर्मिला बेन राजेन्द्रजी संघवी	-	कुक्षी
7.	श्रीमती प्रमीला बेन विरेन्द्रजी कोमतो	-	इंदौर
8.	श्रीमती प्रतीभा प्रदीपकुमारजी गांधी	-	पूना
9.	श्री आदित्य धोका	-	धार
10.	श्रीमती स्वीटी आशीष कुमार जैन	-	राजगढ़

–द्वितीय श्रेणी–

1.	श्रीमती अनिता संजयकुमारजी संघवी	–	नयापुरा, उज्जैन
2.	श्रीमती आंगी शैलेषभाई भंसाली	–	सूरत
3.	श्रीमती डॉ. अंगूरबाला सेठिया	–	निम्बाहेड़ा
4.	श्रीमती सुनीता मूथा	–	झाबुआ
5.	श्रीमती मनीषा जैन	–	विजयवाड़ा
6.	श्री प्रमोद चन्द्रकान्तजी शिंगी	–	देवलाली
7.	श्रीमती शशी पींचा	–	धमतरी (छत्तीसगढ़)
8.	श्रीमती सपना अंबोर	–	राजगढ़
9.	पार्थ प्रकाश कुमारजी दोशी	–	अहमदाबाद
10.	श्रीमती उषा सिसोदिया	–	निम्बाहेड़ा

–तृतीय श्रेणी–

1.	श्रीमती सपना सन्नी जैन	–	मुंबई
2.	श्रीमती पुष्पा एवं मेहता	–	मुंबई
3.	श्रीमती सरोज गोलेछा	–	राजनादगाँव
4.	श्री पारसमलजी लोढ़ा	–	गुलाबपुरा
5.	श्री विजय मनोहरलालजी नाहर	–	सूरत
6.	श्रीमती सुरेखाबेन अरविन्दभाई बिरवाड़ीया	–	नवाडीसा
7.	श्रीमती जयणा राजेन्द्रजी जैन	–	बड़नगर
8.	श्रीमती सुशीला सुमतीलालजी नलदोय	–	अहमदाबाद
9.	श्रीमती गीता बेन दिनेशभाई बोरा	–	अहमदाबाद
10.	श्रीमती पलक धर्मेन्द्रजी जैन	–	गीलाडी, हरियाणा
11.	श्रीमती मीना पंकजजी जैन	–	इंदौर
12.	श्रीमती सुशीला इन्दरमलजी जैन रांका	–	जलगांव
13.	श्रीमती मोनीका गौरवजी जैन	–	पारा

14.	श्रीमती ज्योतिबाला रूपेशजी चपलोद	–	डाबरा
15.	श्रीमती अंजूजी जैन	–	चंड़ीगढ़, पंजाब
16.	श्रीमती चन्द्राजी भण्डारी	–	हैदराबाद
17.	श्रीमती सोमा मनीषजी व्होरा	–	पारा

सांत्वना पुरस्कार

1.	श्रीमती सुरभी जैन	–	भवानीमण्डी
2.	श्री मयंक वाणीगोता	–	मुंबई
3.	श्रीमती साभतीदेवी बोकड़ीया	–	मुंबई
4.	श्रीमती संगीता विपुलभाई मोरखीया	–	सूरत
5.	श्रीमती कुसुम राजेन्द्रजी गिरीया	–	उज्जैन
6.	श्रीमती विधी गिरीश भाई	–	अहमदाबाद
7.	श्रीमती चन्द्रा नरेन्द्रकुमार चौरड़ीया	–	रतलाम
8.	श्रीमती सुमन अनिलजी चौपड़ा	–	तिरुल्लूर
9.	श्रीमती तृप्ती हरिशजी जैन	–	मुंबई
10.	श्रीमती चिया जैन	–	दिल्ली
11.	श्रीमती अर्पिता सकलेचा	–	बड़ावदा
12.	श्री प्रकाश मफतलालजी बोहरा	–	मुंबई
13.	श्री पिंकी जैन	–	मुम्बई
14.	श्रीमती अनीता किरणजी बोथरा	–	अहमदनगर
15.	श्रीमती संगीताजी वाणीगोता	–	गौरेगांव, मुंबई
16.	श्रीमती सुमन कोठारी	–	उज्जैन
17.	श्रीमती उरमी निलेशकुमार वौरा	–	मुंबई
18.	श्रीमती एकता कुणाल दौशो	–	अहमदाबाद
19.	श्रीमती मीना सालेचा	–	मुंबई
20.	श्री श्वेता कुण्डल बोहरा	–	भवानी मण्डी
21.	श्रीमती सरोजबेन भावनीया	–	धार
22.	श्रीमती खुश्बु हर्षित जैन	–	रतलाम
23.	श्रीमती कविता पंकजजी भण्डारी	–	थांदला

24. श्रीमती सुशीला अजीतकुमारजी खाबीया	–	राजगढ़
25. श्रीमती मधु मेहता	–	रतलाम
26. श्रीमती उषा लुणावत	–	रतलाम
27. श्रीमती किरण पारसमलजी भंडारी	–	विजयवाड़ा
28. श्रीमती लालजी विराणी	–	निम्बाहेड़ा
29. श्रीमती मोनीला छाजेड़	–	निम्बाहेड़ा
30. श्रीमती निर्मल लोढ़ा	–	मंदसौर
31. श्रीमती शान्ति मेहता	–	उज्जैन
32. श्रीमती केसर सागरमल बिराणी	–	निम्बाहेड़ा
33. श्रीमती चंचला शशीकान्तजी कोठारी	–	पूना
34. श्रीमती पूर्वी नवीनचन्द्रजी बागरेचा	–	खवासा
35. श्री कु. ओजस्वी पंकजजी रूनवाल	–	उज्जैन
36. श्रीमती प्रकाशबेन विमलचन्दजी मेहता	–	भीनमाल
37. श्री नथमलजी कोठारी	–	बालोद
38. श्रीमती कल्पना महेन्द्रजी चण्डालिया	–	राजगढ़
39. श्री संतोषजी बाफना	–	नीमच
40. श्रीमती मंजूला दलपत कुमार जैन	–	चैन्नई
41. श्रीमती अलका गौलेच्छा	–	भवानीमण्डी
42. श्रीमती रंजना भूपेन्द्रजी लुणावत	–	नागदा जक्शन
43. श्रीमती नित्तल हुकमराजजी नाहर	–	भीनमाल
44. श्रीमती किरण हिम्मतलाल गुगल	–	पूणे
45. श्रीमती मंजू भँवरलाल कानूगो	–	भीनमाल
46. श्री धवल बोहरा	–	मुंबई
47. श्रीमती सुशीला मोतीलालजी मोदी	–	खाचरौद
48. श्रीमती वर्षा महावीरजी दडी	–	पूना
49. श्री सुनीलचन्दजी डागा	–	जयपुर
50. श्रीमती चन्द्रीका रमेशभाई संघवी	–	सूरत
51. श्रीमती साधना कांग्रेशा	–	राजगढ़
52. श्रीमती विमलप्रभा खीचाँ	–	व्यावर

53. श्री सरोजजी गिरीया	–	बड़नगर
54. पारसमल पिपरा	–	भीलवाड़ा
55. दिलीपजी जैन	–	उज्जैन
56. श्रीमती मुणोत	–	विजयनगर
57. श्रीमती सुरेखा हसमुँख जैन	–	दरवाड़ा, पूणे
58. श्रीमती हिरल उचित संघवी	–	नवसारी
57. श्रीमती उर्मिला रमेशजी सौलंकी	–	पूणे
58. श्रीमती निर्मला शान्तिलालजी सुराणा	–	जावरा
59. श्रीमती मोना भावेश मेहता	–	कल्याणपुरा
60. श्रीमती साधना जैन	–	पंजाब
61. श्रीमती कोकीला तलेसरा	–	सारंगी
62. श्रीमती रानू कीर्तिजी बाफना	–	लीमड़ी
63. श्रीमती शिल्या ललितजी लोढ़ा	–	सूरत
64. श्रीमती सोनाली दिलीपजी जैन	–	कुक्षी
65. श्रीमती मधू नाहर लिमड़ी	–	मुंबई
68. श्रीमती निर्मला देवीदास जैन	–	पूना
69. श्रीमती बबीता जैन	–	पंचकुला
70. श्रीमती दिपिका बुलिया	–	भीलवाड़ा
71. श्रीमती संगीता बेन भरतभाई मोरखीया	–	मुंबई
72. श्रीमती विमला सीरोलिया	–	निम्बाहेड़ा
73. कु. आयुषी औरा	–	बड़नगर
74. श्रीमती रेखा प्रवीणजी जैन	–	चैन्नई
75. श्रीमती सम्पत जैन लोढ़ा	–	बैंगलोर
76. श्रुती चौपड़ा	–	लीमड़ी
77. श्रीमती शीला भण्डारी	–	विजयवाड़ा
78. श्रीमती निर्मला जैन	–	जयपुर
79. श्रीमती महिमा जैन	–	निम्बाहेड़ा
80. श्रीमती विजयबाला विजयकुमारजी	–	कुक्षी

परिषद प्रांगण से

पुण्य सम्राट का पाटोत्सव आयोजित हुआ

बेंगलुरू। अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद एवं महिला परिषद के संयुक्त तत्वावधान में रविवार को आचार्य श्रीमद् विजयजयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा. का 36 वां आचार्य पद तिथि (पाटोत्सव दिवस) अनुकंपा दिवस के रूप में मनाया गया। यहाँ सरजापुर रोड़ स्थित डोमनसंदरा की माध्यम गौशाला में सर्वप्रथम कपिला गाय की पूजा की। तत्पश्चात गायों को फलाहार खिलाए। परिषद अध्यक्ष श्री डूंगरमल चोपड़ा ने बताया कि मामूलपेट के श्री नेमीचंद जवानमलजी संघवी परिवार के सौजन्य से आयोजित इस कार्यक्रम की अध्यक्षता परिषद के प्रांतीय अध्यक्ष श्री बाबूलाल सिवानी ने की। गो पूजन के बाद 2 दिवस पूर्व पुलवामा के आतंकी हमले में शहीद हुए जवानों की स्मृति में मौनसभा रखकर 13-13 नवकार मंत्र का सामूहिक जाप किया गया।

इस अवसर पर परिषद के पूर्व प्रांतीय अध्यक्ष श्री भेरूलाल सेठ ने विनय और विवेक पूर्वक समाज में परिषद के माध्यम से परस्पर सौहार्द बढ़ाने के ऐसे आयोजनों को समय की जरूरत बताया। परिषद के राष्ट्रीय मंत्री श्री प्रकाश हिरानी ने आचार्यश्री के महान संतत्व जीवन पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि देश भर की परिषद की करीब 350 शाखाओं द्वारा आज का पाटोत्सव दिवस तप, त्याग, दान व धर्म-कर्म के साथ मनाया जा रहा है। सभी का स्वागत महिला परिषद की अध्यक्ष श्रीमती प्रेमा बाई मुथा ने किया। श्री डूंगरमल चोपड़ा व श्रीमती प्रेमा मूथा के संयोजन में धार्मिक प्रश्नोत्तरी एवं हाउजी प्रतियोगिता आयोजित की गई तथा प्रथम 3-3 विजेताओं को पुरस्कृत भी किया गया। लाभार्थी श्री नेमीचंद संघवी परिवार के सदस्यों का माल्यार्पण कर व शाल ओढ़ाकर सत्कार किया गया। उपाध्यक्ष श्री हेमराज जैन ने बताया कि श्री प्रकाश बालर, श्री देवीचंद गांधी मूथा, गोशाला के श्री गौरव शर्मा सहित बड़ी संख्या में नवयुवक परिषद पदाधिकारियों - सदस्यों व महिला सदस्यों ने भाग लिया। सभी का आभार नवयुवक परिषद के सचिव श्री नेमीचंद संघवी व महिला परिषद की मंत्री श्रीमती मधुबेन ने जताया। श्री डूंगरमल चोपड़ा ने कार्यक्रम का संचालन किया।

* **धार।** पुण्यसम्राट गुरुदेव '36 वें पाटोत्सव' निमित्त 'धार तरुण परिषद्' द्वारा आयोजित त्रि-दिवसीय महोत्सव सरल

स्वभावी साध्वीजी श्री अनेकान्तलताश्रीजी म.सा. आदि ठाणा के पावनकारी निश्रा में सानंद सम्पन्न हुआ। दिनांक 15. 02. 2019 को 'पुलवामा हमले में शहीद सैनिकों के लिए सामूहिक जाप' एवं गुरुदेवश्री के जीवन पर आधारित 'प्रश्नमंच' का आयोजन हुआ।

दिनांक 16 को कोलाज मेकिंग प्रतियोगिता का आयोजन हुआ।

दिनांक 17 को प्रातः 'भक्तामर एवं गुरु गुण स्मरण पाठ ' उसके बाद 'सामूहिक सामायिक' का आयोजन हुआ जिसमें 'साध्वीजी श्री अनेकान्तलताश्रीजी म.सा. द्वारा गुरु के गुणों का गुणानुवाद' किया गया।

* **इंदौर।** युगपुरुष पुण्य सम्राट श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. का 'संयम (दीक्षा) दिवस' माघ सुदी चतुर्थी को इंदौर त्रिस्तुतिक समाज और इंदौर परिषद द्वारा स्नात्र पूजा एवं पुण्य सम्राट की 'संगीतमय पूजा' पढ़ाकर मनाया गया, राजेन्द्र महिला मण्डल एवं राजेन्द्र जयन्त ज्योति बहू मण्डल द्वारा पूजा पढ़ाई गई।

इस अवसर पर महिला परिषद् की बहनों ने भी अपना योगदान दिया तथा कार्यक्रम के पश्चात् परिषद् द्वारा सभी के लिए नवकारसी की व्यवस्था की गई।

इसी प्रकार 'माघ सुदी बारस' 17 फरवरी 2019 रविवार को पुण्य सम्राट का 36 वाँ पाटोत्सव भी 'सामूहिक सामायिक एवं संगीतमय गुरु गुणानुवाद' सभा का आयोजन कर मनाया गया, जिसमें सैकड़ों की संख्या में समाजजनों ने उपस्थित होकर पुण्य सम्राट के प्रति अपने श्रद्धाभाव प्रकट किए। इस अवसर पर सभी ने 'पुलवामा' आतंकी हमले में शहीद हुए सैनिकों को भावभीनी श्रद्धाजंलि अर्पित की और उनके आत्मश्रैयार्थ 13-13 नवकार का जाप किया गया।

पाटोत्सव के अवसर पर नवकारसी का लाभ 'श्रीश्रीमाल परिवार टाण्डावालों' द्वारा लिया गया एवं जन सहयोग से 'प्रभावना' का भी वितरण किया गया।

– जैन नरेन्द्र अंतिम राठौर

* **मंदसौर।** साध्वी पुण्यदर्शनाश्रीजी म.सा. के सान्निध्य में प्रदेश महामंत्री हेमा हिंगड़ व प्रदेश शिक्षा मंत्री निर्मला लोढ़ा की अध्यक्षता में व महिला परिषद की अध्यक्ष भारती पोरवाल की सहमति व सर्वानुमति से राजेन्द्र जैन महिला परिषद की कार्यकारिणी का गठन किया गया। नवीन गठित कार्यकारिणी में परामर्शदाता हेमा हिंगड़, अध्यक्ष सुनीता खाबिया, उपाध्यक्ष ममता मारू, सचिव आभा दुगड़, सहसचिव अलका चंडावला, कोषाध्यक्ष सरोज चपड़ोद, सहकोषाध्यक्ष हेमा लोढ़ा, शिक्षा मंत्री भारती पोरवाल, प्रचार मंत्री टीना हिंगड़, माधुरी खाबिया, संगठन मंत्री सुषमा लोढ़ा, शकुंतला सोनगरा, सांस्कृतिक मंत्री अंशु बाफना, रंजीता संघवी, वैयावच्च समिति सुभद्रा चपड़ोद, लीला चपड़ोद, विनीता कर्नावट, सरेकुंवर डोसी, संध्या पोरवाल, केन्द्रीय कार्यकारिणी में

निर्मला लोढ़ा, विजया लोढ़ा को नियुक्त किया गया। इस अवसर पर सीमा चंडावला, लीला खाबीया, राखी हिंगड़, वंदना हिंगड़, शीला लोढ़ा, सीमा बाफना, सुनीता चपडोद आदि उपस्थित थे।

* **सरसी** । जय पिता संजय डांगी, सरसी-जावरा द्वारा समकित ग्रुप मुंबई द्वारा आयोजित श्री महातीर्थ शत्रुंजय पालीताना की छट्ठ तप यात्रा के अंतर्गत प्रथम दिन 7 यात्रा व दूसरे दिन 2 यात्रा करके 9 यात्रा सानंद पूर्ण की एवं इस कठिन तप के तपस्वीयों की अनुमोदनार्थ चौबीसी का आयोजन किया गया एवं सभी छठ् यात्रा करने वाले का बहुमान किया गया।

---

* **रतलाम** । अ.भा. राजेन्द्र जैन महिला परिषद की नवीन कार्यकारिणी का गठन एवं शपथ विधि समारोह जयंत सेन धाम पर सम्पन्न हुआ जिसके अंतर्गत अध्यक्ष- मंजू मेहता, सचिव- चंदा चौरड़िया, उपाध्यक्ष- श्रद्धा लुणावत, कोषाध्यक्ष - रीना कोठारी, पदाधिकारी सारिका डूंगरवाल, रीता, मेहता, मधु गंग, पुष्प घोचा, मोनिका खिमेसरा, प्रेमलता भंडारी, ममता तलेरा, चन्दा नांदेचा, ज्योति कटलेचा, लेखनी पोरवाल, रीना आंचलिया, नेहा सकलेचा को मनोनीत किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि श्री सुधीरजी लोढ़ा, संघ समाज के अध्यक्ष डॉ. ओ.सी. जैन, सुशीलजी छाजेड़, नवीन अध्यक्ष विनय सुराणा, राजेश खाबिया, सरोजबेन कासवा, रमिलाजी सकलेचा, मंजू आंचलिया, ममता भंडारी आदि उपस्थित थे।

श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद, महिला परिषद, तरूण परिषद व बालिका परिषद के अध्यक्ष, सचिव, कोषाध्यक्ष के रूप में क्रमशः विनय सुराणा, प्रवीण संघवी, विपिन भण्डारी (नवयुवक), श्रीमती मंजु मेहता, चंदा चौरडिया, श्रद्धा लुणावत (महिला परिषद), श्री रोमिता खेड़ावाला, विनायक मुणत (तरुण) एवं शालिनी औरा, रिंकी लोढ़ा (बालिका परिषद) ने शपथ अधिकारी सुशीलजी छाजेड़ (राज. जनकल्याण मंत्री) की उपस्थिति में शपथ ग्रहण कर चारों परिषद ने संचालक मंडल की घोषणा की।

इस अवसर पर कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री सुधीरजी लोढ़ा (महामंत्री परिषद इकाई म.प्र.) ने कहा कि परिषद् अपने उद्देश्यों को लेकर कार्य करने हेतु सदैव तत्पर रहता है और नित नए सेवा के प्रकल्प को करने का प्रयास करता रहता है क्योंकि मानव सेवा ही सबसे बड़ी सेवा है। सर्वप्रथम अध्यक्षीय उद्बोधन में राजेश खाबिया ने कहा कि परिषद एक जुट होकर कार्य करे और सबका साथ सबका विकास वाली बात को परिमार्जित करते हुए प्रेरणादायी कार्य कर समाज सुधार में सहायक बने। संघ

अध्यक्ष डॉ. ओ.सी. जैन ने चारों परिषद के पदाधिकारियों को शुभकामना दी।

कार्यक्रम के अंतर्गत गुणानुवाद सभा में पुण्य सम्राट जयंतसेन सूरिश्वर के 36 वें आचार्य पाट महोत्सव पर प्रकाश डाला गया। अतिथि उद्‌बोधन में धार्मिक शिक्षा एवं संस्कार पर भी जोर दिया गया। सेवा गतिविधि के रूप में शा. स्कूल काटजू नगर में सभी बच्चों को पाठ्य सामग्री वितरण की गई व अतिथियों द्वारा यतीन्द्र ज्ञानपीठ परीक्षा में उत्तीर्ण विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया गया। इस अवसर पर सर्वश्री राजेन्द्रजी लुणावत, मुकेशजी औरा, रमिला सकलेचा, प्रांजल कांठी, पंकज राठौर, प्रदीप श्रीमाल, धर्मेन्द्र रांका, सतीश खेडावाला, विनोद पोरवाल (दलौदा), नितेश तलेरा, अंकित भटेवरा, विनोद संघवी, कांतिलालजी दुग्गड़, गेंदालालजी सकलेचा, सुरेन्द्र गांग, कमलेश लोढ़ा, राजेन्द्र खाबिया, नरेन्द्र घोचा, अभिषेक खाबिया, शेखर घोचा, निलेश लोढ़ा, अभय सकलेचा, पंकज, दीपक खेड़ावाला, जीवन मुरार, विजय बामनिया, नयन मुणत, सन्नी पोरवाल, मनोज जैन, (प्रीतमनगर), प्रो. बी. के जैन, मन्नालालजी चौपड़ा, बसंतीलालजी लोढ़ा, नरेन्द्र चौरड़िया, प्रकाश घोचा, मधुगांग, शशि चौरड़िया, मानसी मेहता, सरोजबेन कांस्वा, धनसुखजी भण्डारी, सचिन लुणावत, सुमीत सुराणा, चितरंजन लुणावत, शंकुन्तला दुग्गड़, लेखनी पोरवाल, प्रेमलता भण्डारी, मोनिका खिमेसरा, रीना आचंलिया आदि पदाधिकारीगण उपस्थित थे। पाट महोत्सव के निमित्त जयंतसेन धाम पर जयंतसेन अष्टप्रकारी पूजन का आयोजन महिला परिषद् द्वारा व तरुण परिषद द्वारा वृक्षारोपण भी किया गया। कार्यक्रम के अंत में नवनियुक्त सचिव प्रवीण संघवी ने सबको धन्यवाद ज्ञापित करते हुए आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन राष्ट्रीय सहमंत्री राजकमल दुग्गड़ ने किया।

* **जयंत कृपा** – मानव सेवा को परिथार्थ करते हुए अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद रतलाम शाखा द्वारा परिषद साथियों के जन्मदिवस या विवाह वर्षगांठ के अवसर पर परिषद के माध्यम से सेवा गतिविधी के प्रकल्प को प्रारंभ करते हुए पुण्य सम्राट की मासिक तिथि के अवसर पर श्री राजेन्द्रजी खाबिया के जन्म दिवस पर गो शाला में चना चुरी, खल व गायों को चारा वितरण किया गया। इस अवसर पर राष्ट्रीय जन कल्याण मन्त्री सुशीलजी छाजेड़, सहमति राजकमल दुग्गड़, परिषद अध्यक्ष विनय सुराना, सचिव प्रवीण संघवी, जीवदया समिति धर्मेन्द्र रांका आदि उपस्थित थे।

* **राणापुर**– श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद शाखा राणापुर ने सुभाष चौपाटी पर पशुओं के पीने के पानी के लिये पानी की टंकी का लोकार्पण पूज्य साध्वी दर्शितकलाश्रीजी एवं साध्वी श्री

चिन्तनकलाश्री के द्वारा मंत्रोच्चार के साथ किया। इस अवसर पर नगर परिषद अध्यक्ष श्रीमती सुनीता गोविंद अजनार, श्री मुनिसुव्रत जिनालय के अध्यक्ष चन्द्रसेन कटारिया, परिषद के अध्यक्ष पवन नाहर, समाज के वरिष्ठ मदनलाल नाहर, ओमप्रकाश जैन, प्रवीण कटारिया, विनय कटारिया, रजनीश नाहर, दिलीप सालेचा, प्रवीण नाहर आदि उपस्थित थे। परिषद अध्यक्ष पवन नाहर ने बताया कि जीवदया के लक्ष्य को ध्यान रख पशुओं को पानी की सुविधा के लिये यहाँ टँकी रखी गई हैं जिसमें प्रतिदिन पानी बदलकर नया पानी भरा जा रहा है ताकि पशुओं को गंदा पानी पीने को मजबूर ना होना पड़े ।

* **मैसूर।** अखिल भारतीय राजेन्द्र जैन महिला परिषद के तत्वाधान में आचार्य श्रीमद् जयंतसेन सूरीश्वरजी का 36 पाट गादी महोत्सव पिंजरापोल के उपाध्यक्ष हंसराज पगारिया, कोषाध्यक्ष महेन्द्र लोढ़ा व ट्रस्टी, नवयुवक परिषद के अध्यक्ष अमृतलाल राठौड़, दक्षिण प्रांत धूमधाम से मनाया गया। 500 मौन सामायिक करने वालों का बहुमान किया। अध्यक्ष बाबताबन सालेचा, महामंत्री उषा बेन वोरा, मैसूर परिषद अध्यक्ष कंचनबेन जोठा, सचिव हेमा बेन श्रीश्रीमाल, मैसूर सामायिक मण्डल की सदस्य उपस्थित रही।

* **पारा।** लोकसंत श्रीमद् विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी महाराजा का 36 वां पाट महोत्सव मनाया । सुबह भक्ताम्बर, गुरु इक्कीसा प्रभात फेरी निकाली। गुरुदेव का प्रक्षाल, वासक्षेप पूजन के साथ सामूहिक स्नात्र पूजन और अष्टप्रकारी पूजन कर आरती उतारी। सुबह 10 बजे पुण्य सम्राट जयंतसेनसूरीश्वरजी के चित्र को लेकर बैंड बाजे से वरघोड़ा निकाला हर घर से गहुली की, यहाँ चल रहे सामुहिक 42 वर्षीय के बियासने हुए। सर्वप्रथम पुण्य सम्राट को गुरुवंदना की। फिर साध्वी श्री ने मंगलाचरणं श्रवण कराया। पाठशाला के गुरुजी राजेन्द्र कोठारी ने यतीन्द्र ज्ञान पीठ की परीक्षा में उत्तीर्ण हुए, अभ्यर्थियों को पुरस्कृत कर प्रमाण पत्र दिये। सुबह का स्वामीवात्सल्य का लाभ भंवरलालजी व्होरा परिवार ने लिया। दोपहर श्रावक-श्राविका ने सामूहिक सामायिक की। बालिकाओं ने पुण्य सम्राट के चित्र के सम्मुख रंगोली बनाई। महिला परिषद ने पुण्य सम्राट जयंतसेनसूरीश्वरजी के अष्टप्रकारी पूजन पढ़ाई ।

* **दसाई।** पुण्य सम्राट युगप्रभावक के 66 वें समय दिवस पर अ.भा. राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद, महिला परिषद, बालिका परिषद परिवार दसाई द्वारा सामूहिक स्नात्र पूजा पढ़ाई गई। जिसमें पाठशाला के बच्चों व परिषद के सभी सदस्यों ने भाग लिया। सभी ने मिलकर भगवान की आरती व शान्ति कलश कर सामूहिक चैत्यवंदन किया।

– रेखा कमल राठौड (दसाई)

श्री शंखेश्वर पार्श्व राज राजेन्द्र धाम में प्राण प्रतिष्ठा सानंद सम्पन्न

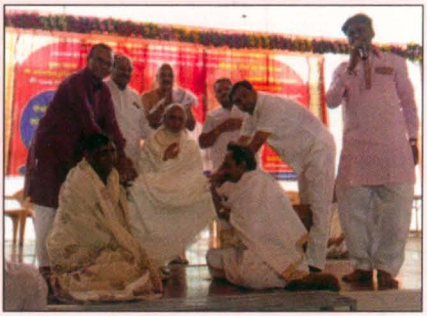

पुण्य सम्राट युग प्रभावक गुरुदेव श्री जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा. की प्रेरणा से संस्थापित श्री शंखेश्वर पार्श्व राज राजेन्द्र धाम तीर्थ में श्री धर्मदिवाकर गच्छाधिपति आचार्य देव श्रीमद् विजय नित्यसेन सूरिश्वरजी म.सा. आदि विशाल श्रमण-श्रमणी मंडल की पावन निश्रा में पंचाह्निका महोत्सव के साथ आज शंखेश्वर पार्श्वनाथ, गणधर गौतम स्वामी, दादा गुरुदेव राजेन्द्रसूरीजी म.सा., पीतांबर विजेता श्री यतीन्द्र सूरिजी म.सा., पुण्य सम्राट युगप्रभावक गुरुदेव श्री की प्रतिष्ठा शुभ मुहूर्त में सानंद सम्पन्न हुई।

12-03-2019 को सुबह 9.00 बजे भगवान पार्श्वनाथ का दीक्षा कल्याणक भव्य रूप से मनाया गया जिसमें तीर्थ परिसर में भव्य शोभायात्रा का आयोजन हुआ जिसमें विशाल लोगों की उपस्थिति रही तीर्थ निर्माण मुख्य सहयोगी परिवार एवं हजारों गुरु भक्तों ने उत्साह से भाग लिया दोपहर में साझी का आयोजन हुआ पश्चात् संध्या कालीन मंगल बेला में भगवान

के प्रतिष्ठा निमित्त चढ़ावे की जाजम गच्छाधिपति श्री की निश्रा में सम्पन्न हुई जिनमें कई गुरु भक्तों ने लाभ लिया।

पश्चात् आज प्रातः चतुर्विध संघ की उपस्थिति में ॐ पुण्याहम पुण्याहम की जयकारों के साथ प्राण प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई बाद में प्रवचन मंडप में गच्छाधिपति श्री का मांगलिक हुआ जिसमें बी.एम. शाह भंडारी परिवार चेन्नई वालों ने कामली का लाभ लिया इस निमित्त प्रतिवर्ष यह तीर्थ परिसर में गुरु सप्तमी मनाने का निर्णय किया गया।

कल प्रातः में गच्छाधिपति की निश्रा में द्वार उद्घाटन होगा।

इस तरह प्रतिष्ठा महोत्सव देव गुरु और धर्म कृपा से सानंद सम्पन्न हुआ।

आयोजक : श्री राज राजेन्द्र शंखेश्वर पार्श्व धाम सिरोही, पावापुरी हाइवे 'मधुकर'

राजेन्द्र नवयुवक परिषद ने पशुओं के लिए पीने के पानी की टंकी रखकर करवाया लोकार्पण

राणापुर । श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद शाखा राणापुर ने सुभाष चौपाटी पर पशुओं के पीने के पानी के लिये पानी की टँकी का लोकार्पण पूज्य साध्वी दर्शितकलाश्रीजी एवं साध्वी श्री चिन्तनकलाश्री के द्वारा मंत्रोच्चार के साथ किया। इस अवसर पर नगर परिषद अध्यक्ष श्रीमती सुनीता गोविंद अजनार, श्री मुनिसुव्रत जिनालय के अध्यक्ष चन्द्रसेन कटारिया, परिषद के अध्यक्ष पवन नाहर, समाज के वरिष्ठ मदनलाल नाहर, ओमप्रकाश जैन, प्रवीण कटारिया, विनय कटारिया, रजनीश नाहर, दिलीप सालेचा, प्रवीण नाहर आदि

उपस्थित थे। परिषद अध्यक्ष पवन नाहर ने बताया कि जीवदया के लक्ष्य को ध्यान में रख पशुओं को पानी की सुविधा के लिये यहाँ टँकी रखी गई है जिसमें प्रतिदिन पानी बदलकर नया पानी भरा जा रहा है ताकि पशुओं को गंदा पानी पीने को मजबूर ना होना पड़े।

अ.भा. राजेन्द्र जैन महिला परिषद की नवीन कार्यकारिणी का गठन एवं शपथ विधि समारोह 17 फरबरी 2019 को जयंत सेनधाम पर सम्पन्न हुआ। जिसके अंतर्गत अध्यक्ष- मंजू मेहता, सचिव- चंदा चौरड़िया, उपाध्यक्ष- श्रद्धा लुनावत, कोषाध्यक्ष- रीना कोठारी पदाधिकारी- सारिका डूंगरवाल, रीता मेहता, मधु गंग, पुष्प घोचा, मोनिका खिमेसरा, प्रेमलता भंडारी, ममता तलेरा, चन्दा नांदेचा, ज्योति कटलेचा, लेखनी पोरवाल, रीना आंचलिया, नेहा सकलेचा को मनोनीत किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि

श्री सुधीरजी लोढ़ा, संघ समाज के अध्यक्ष डॉ. ओ.सी. जैन सा., सुशीलजी छाजेड़, नवीन अध्यक्ष विनय सुराणा, राजेश खाबिया, सरोजबेन कासवा, रमिलाजी सकलेचा, मंजू आंचलिया, ममता भंडारी आदि उपस्थित थे। ये जानकारी अध्यक्ष मंजू मेहता ने दी।

रानी स्टेशन नगर में त्रिदिवसीय प्रतिष्ठा महोत्सव सम्पन्न

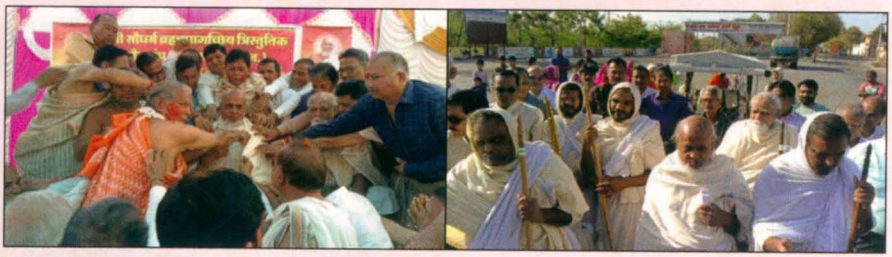

युग प्रभावक, पुण्य सम्राट गुरुदेव श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. के पट्टधर गच्छाधिपति श्री नित्यसेन सूरीश्वरजी म.सा. आदि साधु साध्वी मंडल की पावन निश्रा में आज रानी स्टेशन नगर (राज.) में गुरुदेव श्रीमद् विजय यतीन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. एवं गुरुदेव श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. की गुरुबिंब की प्रतिष्ठा आनंदोल्लास से हुई। इसके पश्चात् प्रवचन मंडप में प्रासंगिक प्रवचन के साथ सकल संघ द्वारा गच्छाधिपति श्री को सकल श्रीसंघ द्वारा कामली ओढ़ाई गई। दोपहर में विजय मुहूर्त में पुण्य सम्राट गुरुदेव श्री की महापूजन पढ़ाई जायेगी। अहमदाबाद से पधारे विधिकारक कुणाल भाई सुराणी ने विधि-विधान एवं प्रभु भक्ति करवाई।

अ.भा.श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् शाखा-इंदौर जयन्त द्वारा

राजेंद्रसूरि वाटिका की स्थापना

इंदौर- गुमाश्ता नगर क्षेत्र में सक्रिय परिषद् अ.भा.श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् शाखा- इंदौर जयन्त द्वारा स्थानीय श्री सीमंधर स्वामी जिनालय- राजेंद्र सूरि ज्ञान मदिर परिसर में श्री राजेंद्र सूरि वाटिका की स्थापना की जा रही है । इस वाटिका में गुलाब-मोगरा आदि फूलों के पौधे लगाये गये है। जिनालय में पुष्प पूजा हेतु उत्तम, अखंड, ताजे एवं शुद्ध फुलों की प्राप्ति के साथ साथ पर्यावरण संरक्षण-संवर्धन एवं प्रवर्धन की दृष्टि से इस वाटिका की स्थापना शाखा इंदौर जयंत द्वारा की गई है । इस वाटिका में लगभग 400 से अधिक पौधों का रोपण किया जा रहा है। वाटिका के निर्माण एवं रखरखाव हेतु संघ के सम्माननीय महानुभावों से एक निश्चित राशि प्रति पौधे हेतु प्राप्त हो रही है । पर्यावरण के प्रति जागरुकता एवं घरों में गुलाब लगाए जाने पर बरती जाने वाली सावधानियों एवं उसके पालन पोषण के संबंध में एक सेमिनार का आयोजन भी निकट भविष्य में शाखा इंदौर-जयन्त द्वारा किया जा रहा है । गुरुदेवश्री जयन्तसेन सूरीश्वरजी महाराजा के पुण्योत्सव कार्यक्रम के दौरान राजेंद्र सूरि वाटिका का उद्घाटन किया जाना प्रस्तावित है।

जैन विश्व

भारत द्वारा पाकिस्तान में किये गये सर्जिकल स्ट्राइक में वायुसेना के बारह मिराज 2000 के पायलट श्री अभिनंदन वर्धमान ने पाकिस्तान में घुसकर बमबारी की। विमान को पाक द्वारा नष्ट कर दिये जाने पर वे वहीं उतर गये जहां पाकिस्तानी फौज ने उन्हें पकड़ लिया। भारत के अंतर्राष्ट्रीय प्रयत्नों से उनकी रिहाई हुई तथा वे भारत लौट आये। पूरे देश में उनका राष्ट्ररत्न की भांति स्वागत किया।

श्री अभिनंदन वर्धमान वायुसेना में विंग कमाण्डर हैं। वे तमिलनाडु के कांजीवरम् जिले के तिरूपन्नमूर गांव के हैं तथा जैन हैं। अ.भा. दिगम्बर महासभा ने उन्हें ढाई लाख रु. नकद से सम्मानित करने का निर्णय किया है। उनकी वापसी के लिये जिनालयों में नवकार मंत्र तथा श्री भक्तामर के पाठ किये गये।

भारत के सभी नेताओं, अभिनेताओं, साहित्यकारों ने उनके सम्मान में प्रार्थनाएँ कर उनकी रिहाई के प्रयासों को शक्ति दी। जैन समाज अपने सपूत की बहादुरी पर गौरवान्वित है।

* सर्वोच्च न्यायालय ने सेवानिवृत्त जज श्री डी.के. जैन को नया लोकपाल नियुक्त किया।
* छोटा उदयपुर (राजस्थान) में मुनि डॉ. श्री राजेन्द्र विजयजी ने घोषणा की कि मैं लोकसभा चुनाव में टिकिट मागूंगा तथा चुनाव लडूंगा।
* राष्ट्रसंत श्री नम्रमुनिजी की 28 वीं दीक्षा जयंती निमित्त चैन्नई में तीन किलोमीटर लम्बी पदयात्रा निकाली गई।
* बैंगलोर के निकट श्री राजेन्द्र शांति कनक कीर्ति विहार धाम का उद्घाटन सम्पन्न हुआ।
* इतिहास मार्तण्ड आचार्य श्री हस्तीमलजी म. का. 99 वाँ दीक्षा दिवस सामूहिक सामायिक साधना दिवस के रूप में देश भर में सम्पन्न हुआ।
* तमिलनाडु के राजस्थानी एसोसिएशन ने राजस्थान पत्रिका के प्रधान सम्पादक श्री गुलाब कोठारी को द लीजेन्ड ऑफ राजस्थान का सम्मान दिया।
* जैनाचार्य श्री जयानंदसूरीश्वरजी म. का अगला चातुर्मास खाचरौद (म.प्र.) में किये जाने की घोषणा की गई है।
* सिहोर भावसार जैन जाति का स्नेह सम्मेलन सिहोर में सम्पन्न हुआ।
* मदुरै। स्थानीय धानाप्पा मुदली स्ट्रीट बाफणा परिवार के निवास स्थान से मुमुक्षु पायल के वरघोड़े की शुरुआत की गई। साध्वी श्री उज्ज्वलज्योति श्री म.सा. साध्वी श्री केवल्यज्योतिश्री म.सा. एवं साध्वी श्री विशालमालाश्रीजी आदि ठाणा 3 की पावन निश्रा में मुमुक्षु पायल की दीक्षा निमित्त शोभायात्रा निकाली गई। सकल मदुरै जैन समाज के श्रावक-

श्राविकाओं के साथ निकली शोभायात्रा शहर के मुख्य मार्गों से होते हुए जड़ामनीकोविल स्थित श्री नूतन धर्मशाला में पहुँचकर धर्मसभा में परिवर्तित हो गई।

* प्रसिद्ध समाजसेवी और शाकाहार - प्रचारक श्री रतनलालजी बाफना ने साहित्यकार डॉ. दिलीप धींग द्वारा लिखित पुस्तक 'मानवता का सत्कार शाकाहार' को बेहद पंसद किया और कहा कि वे इस पुस्तक पर राष्ट्रीय स्तर पर परीक्षाएँ करवाएँगे । समाजसेवी श्री सरदारमल कांकरिया की प्रेरणा से कोलकाता के महिला मण्डल की ओर से डॉ. धींग की किताब पर परीक्षा आयोजित की जा रही है।
* आल इंडिया श्वे. स्थानकवासी जैन कान्फ्रेंस की कर्नाटक राज्य इकाई के प्रमुख मार्गदर्शक श्री महेन्द्र सिंघी मनोनीत किये गये हैं ।
* पंडित रत्न श्री ज्ञानमुनिजी का आगामी चातुर्मास अक्कीपेठ बैंगलोर श्रीसंघ को प्रदान किया गया है ।
* बैंगलूरू स्थित सम्यग् ज्ञान प्रचारक मंडल के बहुउद्देश्यीय बहुमंजिला भवन का भूमिपूजन सम्पन्न हुआ। यह भूखंड कर्नाटक सरकार के बी.डी.ए. द्वारा संस्था को आनंदित किया गया है।
* थांदला निवासी 27 वर्षीय इंजीनियर श्री मंयक पावेचा द्वारा संयम पथ पर अग्रसर होने के अनुमोदनार्थ इंदौर में श्रीश्रीमाल परिवार टांडावाला द्वारा आयोजित शोभायात्रा सफलतापूर्वक निकाली। इसमें वर्षीतप तपस्वी श्री अशोक श्रीश्रीमाल, दीपमाला श्रीश्रीमाल तथा श्रीमती माया वागरेचा की बग्गियों में शोभायात्रा निकाली गई ।
* श्री सम्मेतशिखर महातीर्थ पर श्री सांवलिया पार्श्वनाथ मूल मंदिर की प्रतिष्ठाजनशलाका आचार्य श्री राजशेखर सूरिजी, श्री विनय सागरसूरिजी तथा प्रतिष्ठाचार्य खरतगच्छाचार्य श्री जिन पीयूषसागरजी की भव्य निश्रा में सम्पन्न हुई।
* **अल्पसंख्यक प्रमाण-पत्रों का वितरण- हुबली ।** आल इंडिया जैन यूथ फेडरेशन हुबली द्वारा आयोजित जैन समाज के सदस्यों के लिए सरकार द्वारा प्रदत अल्पसंख्यक दर्जा के लिए विविध सुविधाओं को प्राप्त करने के लिए दिए गए अल्पसंख्यक प्रमाण-पत्रों का वितरण किया गया।

इस अवसर पर उपस्थित राज्य के राजस्व व धारवाड़ जिला प्रभारी मंत्री आर.वि. देशपांडे, समारोह अध्यक्ष महेन्द्र सिंघी व अन्य अतिथियों द्वारा यूपीएससी परीक्षा देने के लिए तैयार करने वाली छात्रा दिव्यानि दीपक भंसाली को प्रमाण पत्र प्रदान कर समारोह का उद्घाटन किया।

रतलाम के एस.एल. भंडारी सर्वानुमति से धर्मदासगण परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष निर्वाचित

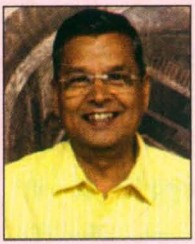

रतलाम । धर्मदासगण परिषद की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक 10 मार्च रविवार को अणु स्वाध्याय भवन इंदौर में सम्पन्न हुई। जिसमें समस्त श्रीसंघों के वरिष्ठ पदाधिकारियों और गण से संबंधित समस्त संस्थाओं के अध्यक्ष, महामंत्री और कार्यकारिणी सदस्यों को आमंत्रित किया गया था। बैठक में सर्वानुमति से एस.एल. भंडारी को धर्मदासगण परिषद का अध्यक्ष निर्वाचित घोषित किया गया।

अखिल भारतीय श्री धर्मदास स्थानकवासी जैन युवा संगठन के राष्ट्रीय महामंत्री मिलिंद कोठारी ने बताया कि सर्वप्रथम बदनावर श्रीसंघ अध्यक्ष चंद्रप्रकाश बोकडिया ने नए अध्यक्ष के लिए वर्तमान महामंत्री रतलाम निवासी 62 वर्षीय शांतिलाल भंडारी का नाम प्रस्तावित किया जिसका समर्थन इंदौर श्रीसंघ अध्यक्ष प्रकाश चौरड़िया, धर्मदास जैन श्रीसंघ रतलाम के अध्यक्ष अरविन्द मेहता, झाबुआ श्रीसंघ अध्यक्ष प्रदीप रूनवाल, करही श्रीसंघ अध्यक्ष शिखरचंद छाजेड़, आचार्य श्री उमेशमुनिजी अणु धार्मिक एवं पारमार्थिक ट्रस्ट इंदौर के सचिव कनकमल बांठिया, बड़नगर श्रीसंघ के सचिव राजकुमार पारख आदि उपस्थित समस्त महानुभावों ने किया।

शांतिलाल भण्डारी ने अन्य नाम प्रस्तावित करने हेतु खुब अनुनय विनय किया किन्तु पूरी सभा एकमत होकर श्री भम्डारी को उत्तरदायित्व सौंपने हेतु तत्पर थी। इस प्रकार सर्वानुमति से श्री भण्डारी को अध्यक्ष निर्वाचित घोषित किया गया। सभा में मध्यप्रदेश, राजस्थान, गुजरात व महाराष्ट्र के जलगांव, इंदौर, मेघनगर, झाबुआ, बदनावर, बड़नगर, राजपुर, धार, बड़वानी, बखतगढ़, थांदला, बड़वाह, करही, रतलाम, कुशलगढ़, खाचरौद, देवास, उज्जैन, मुलथान, नागदा (धार), बागोद, कोद आदि कई स्थानों के पदाधिकारी और प्रतिनिधि उपस्थित थे। नवनिर्वाचित अध्यक्ष शांतिलाल भण्डारी बचपन में मालव केसरी पूज्य गुरुदेव श्री सौभाग्यमलजी व प्रवर्तक पूज्य गुरुदेव श्री सूर्यमुनिजी म.सा. के सानिध्य में सक्रिय रहे तत्पश्चात् आध्यात्म योगी आचार्यश्री उमेशमुजिनी के कृपा पात्र रहे और उनके सानिध्य में अ.भा. श्री धर्मदास स्थानकवासी जैन युवा संगठन के सर्वप्रथम राष्ट्रीय संस्थापक अध्यक्ष बने और गण के पत्र जिनशासन गौरव समाचार पत्र के प्रधान संपादक भी रहे और सन् 2012 में आचार्यश्री उमेशमुनिजी के वियोग के पश्चात् वर्तमान गण नायक प्रवर्तक जिनेन्द्रमुजिनी के सानिध्य में पिछले 6 वर्षों से गण के महामंत्री पद का निर्वहन कर रहे थे।

शाश्वत धर्म के संरक्षक

- शा. ओटमल वेलाजी कांकरिया-सुरा निवासी।
- शा. ताराचंद फुटरमल फौजमल, भानाजी वेदमुथा-आहोर निवासी।
- कटारिया संघवी भवरलाल, उगमचंद, वीरेन्द्र कुमार, राजेन्द्रकुमार, आशीष, गौरव पुत्र पौत्र-तोलाजी, धाणसा निवासी (फर्म-मेन्स एवेन्यु-बाई मिलन, बैंगलौर)
- शा. तिलोकचंद, नरसिंगमल, पुखराज, परखचंद, सांवलचंद, पुत्र, पौत्र प्रतापचंदजी सूरत निवासी।
- संघवी मिश्रीमल, हस्तीमल, समरथमल, हीरालाल, शांतिलाल, दिलीपकुमार जैन, पुत्र-पौत्र कन्नाजी कटारिया-जाखल नि.
- नैनावा श्री जैन श्वेताम्बर सकल संघ, गुरूभक्तगण-नैनावा।
- श्री समकितगच्छीय जैन श्वे. संघ-धानेरा।
- स्व. मायाचंद धुलाजी की स्मृति में धर्मपत्नी धापुबाई, सुपुत्र कुशलराज, भ्राता निहालचंद एवं श्रीमती जड़ावबेन कातरेला बोहरा-आहोर निवासी।
- मेहता तेजराज, जयन्तीलाल, राजेन्द्रकुमार, अरविंदकुमार, पुत्र पौत्र रायचंदजी जसराजजी भूती निवासी।
- मोरखिया चंदुलाल, बाबूलाल, रसिकलाल, महेशकुमार, परेशकुमार अल्पेशकुमार, रूपेश कुमार, पुत्र-पौत्र स्व. मौरखिया नानचंद मूलचंद थाई-थराद निवासी।
- स्व. मुणोत रिखबचंदजी की स्मृति में धर्मपत्नी ढेलीबाई सुपुत्र बाबूलाल, सुमेरमल, अशोक कुमार, रमणिया निवासी।
- स्व. रामाणी शेषमलजी की स्मृति में मांगीलाल, फुटरमल, शांतिलाल, किशोरकुमार पुत्र-पौत्र खुशालजी रामाणी, गुडा बालोवान (फर्म-सूर्यलोक ज्वेलर्स, नैल्लोर)
- श्री राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट, चैन्नई।
- शा. मोहनलाल, पारसमल, सुरेश कुमार, किशोर कुमार, कमलेश कुमार, अरविन्द कुमार पुत्र, पौत्र साकलचंद जेरूपजी भैंसवाडा नि.फर्म-गोल्डन ज्वेलर्स, नेल्लोर।
- स्व. सुगीबाई धर्मपत्नी अचलजी की स्मृति में पुत्र-कांतिलाल, प्रपोत्र-रमेशकुमार बागरा निवासी।
- श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ चौराऊ।
- श्री श्वेताम्बर जैन संघ, सियाणा।
- श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ, थराद।
- दोशी सोमतमल, गुमानमल, सुखराज सांवलजी हस्ते-गुमानमल सांवलजी चेरिटेबल ट्रस्ट, मुम्बई।
- सुशीला बहन की स्मृति में भीमराज, हिमांश कुमार, श्रेणिक कुमार पुत्र पौत्र बेचरदासजी छाजेड़, नैनावा निवासी हाल मु.सांचोर, राज.
- श्री गोडी पार्श्वनाथ जैन देरासर पेढ़ी, सोनारी, सेरी थराद, प्रतिष्ठा प्रसंगे गुरूभक्तों द्वारा।
- स्व. जेठमलजी खुमाजी की स्मृति में, चंदनमल, कैलाशचंद हंसराज, शीतलकुमार, अश्विन कुमार परिवार, बागरा निवासी (राजस्थान फायनेन्स कॉरपोरेशन काकीनाडा)
- श्री विमलनाथ जैन दोशी देहेरासर, थराद।
- श्री सौधर्म बृहत्तपागच्छ जैन संघ, आनन्द (गुजरात)
- श्री जैन श्वे. त्रिस्तुतिक श्री संघ थलवाड (राजस्थान)
- श्री सौधर्म बृहत्तपोगच्छीय जैन संघ जावरा (म.प.)
- श्री सौधर्म बृहत्पोगच्छीय जैन संघ वासणा (गुजरात)
- श्री महाविदेह तीर्थधाम नवागाम, सूरत (गुजरात)
- आहोर निवासी संघवी जुगराज, कांतिलाल, महेन्द्र, सुरेन्द्र, दिलीप, धीरज, संदीप, राज, जैनम पुत्र पौत्र शा. कुन्दनलालजी भुताजी श्रीमाल वर्धमान गोत्रिय परिवार-थाणे (महा.)
- श्री जैन श्वेताम्बर संघ-सामलकोट।
- श्री जैन श्वे. मूर्तिपूजक संघ, सूर्यरावपेटा-काकीनाडा (आन्ध्र प्रदेश)
- श्री सिमंधर राजेन्द्र जैन श्वे. मंदिर, मामुलपेट, बेंगलोर।
- श्री मुनिसुव्रत - राजेन्द्र जैन श्वेताम्बर मंदिर, (एवेन्यु रोड बैंगलोर)

- श्री संभवनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वे. ट्रस्ट, विजयवाड़ा (आ.प्र.)
- शा. अनराजजी छोगालालजी बुरड, सांचोरा वाला,फर्म-सोनू स्टील, सिकन्दराबाद, आ.प्र.
- शा. उत्तम, रमेश, हरीश, खुशालचंदजी, गेबाजी डामराणी, मैंगलवा वाला, फर्म पाक्षाल पावर किंग इलेक्ट्रीकल, हैदाराबाद (आ.प्र.)
- श्री पार्श्वनाथ राजेन्द्रसूरिजी जैन ट्रस्ट, गुंटूर
- कोशिलाव निवासी शा. भूनतमलजी, मगराजजी ललवाणी फर्म-पारस एजेन्सीज, हैदराबाद
- बागरा निवासी शा. शेषमलजी, गुलाबचंदजी फर्म जैन एण्ड कं., एलुर
- शा.अम्बालाल, दलीचन्द, बाबूलाल, शांतिलाल, प्रकाशचंद, नैनमल, उत्तमचंद, रमेशकुमार पुत्र पौत्र चमनाजी बुगामवाला-सुरापुर (कर्नाटका)
- शा. शांतिलालजी देवीचंदजी भंडारी, फर्म-स्वस्तिक ट्रेडिंग कं., हैदराबाद (आ.प्र.)
- स्व. कबदी हेमराजजी पूनमचंदजी की स्मृति में पुत्र नरेन्द्रकुमार दिलीपकुमार, पौत्र विनोद, अमीत, जसवंत, लोकेश और हरेश सायला निवासी, फर्म प्लायवुड सेन्टर, विजयवाड़ा
- मातुश्री सजनबाई स्व. श्री राजमलजी वीरचंदजी सेक्रेटरी पुत्र-पौत्र-प्रपौत्र शाह दिलीपकुमार, सचिनकुमार, सर्वेषकुमार, हार्दिक कुमार, रोशनकुमार, समस्त सेक्रेटरी परिवार कुक्षी (म.प्र.) फर्म- पक्षाल प्रोडक्ट, मूनलाईट रिचार्जेबल टॉर्च के निर्माता।
- जैन संघ - लाखणी
- भीनमाल निवासी श्री शोभालालजी भागचंदजी धोकड़ के पुत्र राजेन्द्रकुमार, पौत्र विक्रम, अभिषेक, परेश द्वारा,फर्म गौतम वस्त्र भंडार, गणेश चौक, भीनमाल जालोर (राज.)
- धाणसा निवासी संघवी स्व. सुखराजजी पिताजी की स्मृति में धर्मपत्नि-शांतिदेवी, पुत्र-सुमेरमल, अशोककुमार श्रीपाल, संजय, आकाश, अमृत
- कटारिया परिवार,फर्म शा. सुखराज पिताजी, विजयवाड़ा (आ.प्र.)
- सौधर्मवृहद तपोगच्छीय जैन श्वे. त्रि. श्री जैन संघ दाधाल
- आहोर निवासी संघवी मोहनलाल, तेजराज, प्रवीणकुमार, यतीन्द्र, राजेन्द्र, आशीष पुत्र-पौत्र वक्तावरमलजी हीराचन्दजी कुहाड़ परिवार आहोर नि. फर्म-राजेन्द्र पेपर्स, बैंगलौर
- रेवतड़ा (राज.) निवासी स्व. दरजमलजी, स्व. उकचन्दजी, स्व. हस्तीमलजी, स्व. तगराजजी की स्मृति में : हिराणी परिवार
- रेवतड़ा (राज.) निवासी स्व. शा. भारतमलजी भगाजी एवं धर्मपत्नी पातीबाई, पुत्र-मांगीलाल, गणपतराज, रमेशकुमार, कैलाशकुमार एवं समस्त संघवी वेदमुथा परिवार
- रेवतड़ा (राज.) निवासी संघवी पारसमल, नेमीचन्द, जितेन्द्र, संजय, रितेश, वेदमुथा परिवार
- थराद निवासी थरू फूलचंद, पानाचंद परिवार द्वारा आचार्यश्री जयंतसेन सूरिश्वरजी म.सा. के चातुर्मास निमित्त
- स्व. मुनिराज श्री हरिशचंद्रविजयजी म.सा. की पुण्य स्मृति में आहोर नि.मुकेशकुमार गौतम गुलेच्छा, पुत्र पौत्र मोहनलालजी हिम्मतलालजी फर्म-अरविन्द टेक्सटाईल, राजमुद्री
- रेवतड़ा निवासी संघवी सोकलचंद, कानराज, अशोककुमार, अरविन्दकुमार, चन्द्रकान्त, अखिलकुमार पुत्र-पौत्र शा. इन्द्रमलजी भगाजी परिवार फर्मःशा. इन्द्रमलजी सुखराजजी, बैंगलोर
- उज्जैन निवासी शा. श्री चांदमलजी, नवीनकुमार, मुकेशकुमार, अंकितकुमार पुत्र-पौत्र श्री सेवारामजी बाफणा परिवार
- यतीन्द्र भवन जैन धर्मशाला-पालिताणा
- स्व. मातुश्री अमीयाबाई एवं स्व. भाई ओटमलजी की स्मृति में पुत्रवधु प्रसन्नदेवी पुत्र हेमराज पौत्र रोहित, मितेश चत्तरगोत्रा हस्तीमलजी धनाजी परिवार चौराऊ, निवासी फर्म-पद्मावती मार्केटिंग-बेंगलौर (कर्नाटक)
- श्री सौधर्म वृहद तपोगच्छीय त्रिस्तुतिक जैन संघ, सूरत

युगप्रभावकाचार्य पुण्यसम्राट गुरुदेव श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा.
गुणानुवाद अष्टक (गुरुदेव स्तुतियाँ)

(तर्ज : हरिगीतिका)

रचना : मुनि श्री प्रशमसेनविजयजी म.सा.

साहित्यसर्जक मार्गदर्शक, युगप्रभावक गुरुवरम् ।
शासन नायक थे संवाहक, ज्ञान के हो सागरम् ।।
भक्तों के भगवान गुरुवर, हरना मम अन्धकार है ।
जयन्तसेन गुरुवर चरण में, वन्दना शतवार है ।।1।.

मुखाकृति पर प्रसन्नता और प्रशमता है सोहती ।
माधुर्यता थी वाणी में, आभा अलौकिक दीपती ।।
जागृत रहे जग को जगाने, किये अति उपकार हैं ।
जयन्तसेन गुरुवर चरण में, वन्दना शतवार है ।।2।।

नवकार के साधक अहोनिश, अडिग, आसन था सदा ।
आदर्शमय जीवन गुरुवर, कल्याणकारी सर्वदा ।।
स्वयं तिरे और तारे सबको, जाये हम बलिहार है।
जयन्तसेन गुरुवर चरण में, वन्दना शतवार है ।।3।।

कार्य महान किये अनुपम, संघ गौरव बढ़ा दिया ।
गुरुगच्छ खातिर जीवन सारा, शासन को अर्पित किया ।।
गुरुनाम का लहराया परचम, जगत में जयकार है ।
जयन्तसेन गुरुवर चरण में, वन्दना शतवार है ।।4।।

सहज सरल निर्मल जीवन था, करुणामय दृष्टि रही ।
समभावी समदृष्टा गुरुवर, वात्सल्य की वृष्टि रही ।।
सदैव चले सिद्धान्त पर, गुरु किया सत्य प्रचार है ।
जयन्तसेन गुरुवर चरण में, वन्दना शतवार है ।।5।।

हृदय में गुरु सरलता थी, जीवन में निर्लेपता ।
गांभीर्यतादि गुण अनंता, शब्दों में थी सिद्धता ।।
संघ कार्यों में रही दक्षता गुरु, फैली कीर्ति अपार है।
जयन्तसेन गुरुवर चरण में, वन्दना शतवार है ।।6।।

सरस्वती रही कंठ में गुरु, श्रुतज्ञ लब्धिवन्त हैं ।
कभी न होगा अन्त जय का, जयन्त नाम जयवन्त है ।।
सदियों में है कहीं एक होता, आप सम अवतार है ।
जयन्तसेन गुरुवर चरण में, वन्दना शतवार है ।।7।।

स्व–पर का करने हित आये, अवनी पर थे गुरुवरा,
जहाँ–जहाँ विचरण किया गुरु, तीरथ सम हो गई धरा ।।
मिला 'प्रशम' सहवास जिनको, धन्य वह नरनार है ।
जयन्तसेन गुरुवर चरण में, वन्दना शतवार है ।।8।।

भारत सरकार पंजीयन क्रमांक 13067/57
Regd. News Paper Under Regn. No. CPMG KA/BG (S) 2005/2006-08
एल/RNP/MP/MANDSAUR/113/18-20
Posting Date at Mandsaur on 3rd Day of Every Month

त्रिवर्षीय शुल्क-400/- वर्ष-66, अंक-4 कुल पृष्ठ कवर सहित -114

मीरपुर (गुजरात) में गच्छाधिपति जैनाचार्य श्रीमद् विजय नित्यसेन सूरीश्वरजी म. तथा जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयरत्न सूरीश्वरजी म. के सान्निध्य में प्रतिष्ठांजनशलाका महोत्सव

पारा में त्रि-दिवसीय वर्षीतप पारणा महोत्सव

पारा नगर में त्रिस्तुतिक श्रीसंघ तथा परिषद परिवार के तत्वावधान में 'त्रि-दिवसीय वर्षीतप पारणा महोत्सव' 5 मई से 7 मई तक आयोजित किया जा रहा है।

सुविशाल गच्छाधिपति प.पू. आचार्य प्रवर धर्म दिवाकर श्रीमद् विजय 'नित्यसेन सूरीश्वरजी म.सा.' प.पू. आचार्य देवेश श्रीमद् विजय 'जयरत्न सूरीश्वरजी म.सा.' एवं विशाल श्रमण, श्रमणीवृन्द पावन निश्रा प्रदान करेंगे। मातृ हृर्दया साध्वी वर्याश्री 'अविचलदृष्टा श्रीजी' आदि ठाणा की निश्रा भी होगी।

आचार्य भगवंत और मुनिराज श्री का हुआ आत्मीय मिलन

गुजरात के पाटण नगर में पंचासरा जिनालय के समीप स्थित 'त्रिस्तुतिक उपाश्रय'' के राज राजेन्द्र जयन्तसेन सूरि ज्ञान मंदिर में अचल गच्छ समुदाय के ''आचार्य भगवंत श्री कलाप्रभ सूरि म.सा. एवं उपाश्रय में विराजमान मुनिराज श्री चारित्र रत्न विजयजी महाराज का हुआ आत्मीय मिलन'', आचार्य भगवंत ने पाटण पदार्पण पर अपनी स्थिरता त्रिस्तुतिक उपाश्रय में की, अध्ययन हेतु विराजमान पुण्य सम्राट गुरुदेव श्री के शिष्य रत्नों को आचार्य भगवंत श्री ने अतीत के स्मरण करते हुए कहा कि आचार्य भगवंत गुरुदेव श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरिजी म.सा. से अनेक बार मिलना हुआ ''स्मरण रहे कि गुरुदेव श्री की पावन निश्रा में थराद में आयोजित मोटा महावीर स्वामी के प्रतिष्ठा महोत्सव में गुरुदेव श्री के साथ आचार्य भगवंत ने दो दिन की स्थिरता की थी।''

If undelivered please Return to Shaswat Dharma, Dhanmandi, Mandsaur-458001